ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

ज्येष्ठ-आषाढ़ संवत् नानकशाही ५५४ जून 2022 वर्ष १५ अंक १०

गुरुद्वारा साहिब शहीदी-स्थान श्री गुरु अरजन देव जी,
डेहरा साहिब, लाहौर (पाकिस्तान)

गुरुद्वारा नानकिआणा साहिब, संगरूर

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

ज्येष्ठ–आषाढ़, संवत् नानकशाही 554
वर्ष 15 अंक 10 जून 2022

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
गुरू अरजणु सचु सिरजणहारा 7
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा लड़े गए युद्धों का वर्णन 18
–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी : प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर 24
–डॉ. दीपशिखा
भक्त कबीर जी की बाणी के पावन संदेश 29
–डॉ. मनजीत कौर
बाबा बंदा सिंघ बहादुर की धर्म-निष्पक्षता 34
–डॉ. जसबीर सिंघ
महाराजा रणजीत सिंघ के काल में शहरी विकास 37
–डॉ. किरपाल सिंघ (दिवंगत)
श्री गुरु अरजन देव जी (कविता) 43
–स. बलविंदर सिंघ बालम
पंचम पातशाह द्वारा स्थापित नगर : श्री तरनतारन साहिब 44
–डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल
मनु वणजारा 48
–डॉ. परमजीत कौर
जून १९८४ की एक आप-बीती घटना 54
–ज्ञानी प्रीतम सिंघ
ख़बरनामा 58

गुरबाणी विचार

आसाड़ु तपंदा तिसु लगै हरि नाहु न जिंना पासि ॥
जगजीवन पुरखु तिआगि कै माणस संदी आस ॥
दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥
जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥
रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥
जिन कौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥
करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥
प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि ॥
आसाड़ु सुहंदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास ॥५ ॥ (पन्ना १३४)

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में आषाढ़ महीने की शिखर गर्मी की ऋतु के परिप्रेक्ष्य में मनुष्य-मात्र को सांसारिक इच्छाओं के अत्यधिक बुरे प्रभाव से बचकर जीवन रूपी रात्रि को न गंवाने तथा सतिगुरु जी की रूहानी अगुआई को प्राप्त करते हुए परमात्मा का साक्षात्कार प्राप्त करने का अंतिम उद्देश्य पूरा करने की निर्मल प्रेरणा बख़्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि आषाढ़ का महीना भले ही अत्यंत गर्मी वाला है लेकिन यह गर्मी उन मनुष्यों को महसूस होती है जिनके पास परमात्मा का नाम नहीं है। कहने से तात्पर्य, आषाढ़ महीने की कठोर उष्णता से परमात्मा के सदैव शीतल नाम की ओट में रहकर बचाव पूर्णत: संभव है। गुरु जी कथन करते हैं कि यह माह उसको गर्म लगता है जिसने सारे विश्व के सृजनहार को भुला दिया है और मनुष्य से ही आशा लगा रखी है। सदीवी सुख परमात्मा के नाम की ओट में ही है।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि प्रभु के बिना किसी भी अन्य का सहारा चाहने अथवा लेने में व्यर्थ की भटकना है। यह गले में यम की फांसी पड़ने के तुल्य है। ऐसा मनुष्य मस्तक पर लिखे अनुसार ही फल पाता है अर्थात् सदैव भय में रहता है। जीवन रूपी रात यूं ही चली जाती है और अंतिम समय में मनुष्य को निराशा होती है।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जीवन के आषाढ़ महीने में जिनका साधु अथवा सतिगुरु से साक्षात्कार हो गया वे प्रभु-दरबार में मुक्त हैं। हे प्रभु मालिक! अपनी कृपा करना! मेरे मन में भी आपके दीदार की प्यास जग जाए! यही प्रार्थना है, हे प्रभु! मुझे सतिगुरु द्वारा ज्ञान हो जाए कि आपके बिना कोई भी अन्य मेरे साथ नहीं है। जिस मनुष्य के हृदय में प्रभु-चरणों का निवास है उसको ग्रीष्म ऋतु से जुड़ा आषाढ़ महीना भी सुखदायी लगता है।

संपादकीय

सत्य की तेग

भारत को कई सदियों तक विदेशी हमलावरों ने लूट का केंद्र बनाए रखा। विदेशी हमलावरों ने लंबा समय भारत पर शासन कर यहां के असल वाशिंदों को गुलामी की ज़िल्लत भरी जिंदगी जीने का आदी बना दिया। हाकिमों के जुल्म को चुपचाप सहन कर जाना भारतीयों का स्वभाव बन गया था। सदियों के बाद इस जुल्म के विरुद्ध एक ज़ोरदार आवाज़ बुलंद हुई जिसने ज़ालिम हाकिमों की जड़ें हिलाने से लेकर जुल्म का नाश करने तक की भूमिका अदा की। इस बुलंद आवाज़ के मालिक थे— धन्य श्री गुरु नानक देव जी। गुरु जी ने लोधी व मुगल शासकों को सत्य की तेग की चमक से घेरा, जिससे उनका गरूर तार-तार हो गया। गुरु जी ने ज़ालिमों की लूटमार वाली भूमिका को शरेआम ललकारा। मुगल राज्य के संस्थापक ज़हीर-उ-दीन बाबर ने सत्य की आवाज़ को दबाने के लिए श्री गुरु नानक देव जी को कैद कर लिया। अंधेरा प्रकाश को कब तक छुपाए रखता ? आखिर उसे गुरु जी की अज़मत के समक्ष सर झुकाना पड़ा। सत्य की विरासत के अगले पैरोकार श्री गुरु अंगद देव जी की हुजूरी में हुमायूं सिजदा करने के लिए उस समय आया जब वह राज्य-सत्ता से महरूम हो चुका था। उसके मन की कालिमा अभी मिटी नहीं थी। हउमै-अहंकार अभी भी उसके मन के सिंहासन पर शासन कर रहा था। उसने सत्य के दीपक को मिटाने के लिए तलवार म्यान में से खींचनी चाही, मगर सत्य के प्रकाश की ताब से उसकी आँखें चुंधिया गईं। असत्य को सत्य का प्रताप झेलना कठिन हो गया। तब वह गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा।

हुमायूं का पुत्र तथा वारिस— अकबर अपने पूर्वजों के मुकाबले कुछ अधिक सूझवान निकला। इसके शासन-काल के समय बाबे (श्री गुरु नानक देव जी के उत्तराधिकारी) के तथा बाबर (बाबर के उत्तराधिकारी) के संबंध कुछ सुखद रहे, जिस कारण सत्य को फलने-फूलने का अवसर मिला। इस समय के दौरान भी शासन-शक्ति के कुछ मालिक काज़ी, मुल्ला-मौलाणा तथा अहिलकारों ने सत्य को दबाने की नीच हरकतें जारी रखीं, परंतु उनकी एक न चली। इसी समय के दौरान श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर का निर्माण करवाकर उसके अंदर सत्य के सूर्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश कर दिया, ताकि रहती दुनिया तक जनता गुरबाणी से अगुआई प्राप्त करती रहे। मुगल बादशाह जहांगीर के गद्दी पर बैठते ही अत्याचारी दौर पुन: प्रारंभ हो गया। श्री गुरु अरजन देव जी को गर्म तवी पर बैठाकर, अत्यंत यातनायें देकर शहीद कर दिया गया। गुरु जी की शहीदी सत्य के

दीपक को सदैव जलता रखने के लिए प्रेरणा-स्त्रोत बन गई। नवम पातशाह की शहीदी ने मानवाधिकारों के प्रति सिक्खों को जागृत किया। इसके बाद तो सिक्ख इतिहास में जुल्म का मुकाबला करते हुए शहादतों की लंबी शृंखला खड़ी हो लग गई।

श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा सुशोभित श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर में गुरबाणी का प्रकाश सत्य को जुल्म के विरुद्ध संघर्षरत रहने की प्रेरणा देता रहा। विरोधियों द्वारा सत्य के इस केंद्र को तहस-नहस करने की योजनाएं भी तैयार होती रहीं। सन् १७४० ई. में मस्से रंघड़ ने सत्य के दीपक को बुझाने की कोशिश हेतु यहां कब्जा कर लिया। उसने इस पवित्र स्थान को अपवित्र करने में कोई कसर बाकी न छोड़ी। सत्य के पहरेदार भाई सुक्खा सिंघ व भाई महिताब सिंघ ने ज़ालिम मस्से रंघड़ का सिर कलम कर दिया।

१७४६ ई. में दीवान लखपत राय ने अपनी नीच हरकतों से इस पवित्र स्थान का अपमान करने की कोशिश की। फिर सलामत खान ने इस सत्य के दीपक को बुझाने की कोशिश की तो मार्च, १७४८ ई. में स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया की अगुआई में उसको उसके किए की सज़ा दी। सिक्खों के इस साहस के पीछे श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी की प्रेरणा बाखूबी काम कर रही थी। सन् १७५७ ई. में अहमद शाह अब्दाली ने जब सत्य की आवाज़ को मिटाने हेतु श्री हरिमंदर साहिब का अपमान किया तो गुरु के सिक्ख बाबा दीप सिंघ जी शीश हथेली पर रखकर भी अफगान फौजों पर बरसते रहे तथा श्री हरिमंदर साहिब की पावनता की पुनर्स्थापित हेतु कुर्बान हो गए। सन् १७६२ ई. तथा १७६४ ई. में अब्दाली ने फिर श्री हरिमंदर साहिब पर हमला कर इसे तहस-नहस करने की कोशिश की, किंतु हर बार सत्य के परवाने अपनी शहादत देकर इसका सुरक्षा-कवच बने रहे। मुगलों के बाद अंग्रेज सरकार ने भी सत्य के इस प्रेरणा-स्त्रोत को खत्म करने की अनेक चालें चली, परंतु कामयाब न हो सकी। भारत को अंग्रेजों से स्वतंत्रता मिलने के उपरांत (१९४७ ई. के बाद) १९८४ ई. में देश की फौज ने इस पर हमला कर अपनी मूर्खता का प्रमाण दिया।

पंचम पातशाह की लासानी शहादत ने सिक्ख कौम को सत्य के हक में डटने की नयी दिशा प्रदान की थी। छठम पातशाह के मीरी-पीरी के सिद्धांत, दशम पातशाह द्वारा खालसा पंथ की सृजना, ये सब कार्यवाहियां सत्य की शक्ति को उभारने के लिए थीं। आज गुरु नानक-नाम लेवा सिक्ख ही नहीं, बल्कि सारा संसार सिक्ख गुरु साहिबान की अद्वितीय देन के समक्ष नत्मस्तक हो रहा है और जहांगीर, औरंगज़ेब तथा वक्त के अत्याचारी हाकिम, जो सत्य की आवाज़ को मिटाना चाहते थे, को घृणा की दृष्टि से देखता है।

गुरू अरजणु सचु सिरजणहारा

*-डॉ. सत्येन्द्रपाल सिंघ**

श्री गुरु अरजन देव जी गुरबाणी के अथाह भंडार थे, जिन्होंने शबद-कीर्तन और कथा का ऐसा प्रवाह चलाया जिसमें सभी सराबोर हो गए। इस शबद-प्रवाह से परमात्मा-प्रेम का जो आत्मिक संगीत उत्पन्न हुआ उसने अमृत की तरह काम किया और निहाल कर दिया। श्री गुरु अरजन देव जी के इस आध्यात्मिक चमत्कार से प्रभावित हो असंख्य लोग गुरु दरबार में आने लगे— *''चारे चक निवाइओनु सिख संगति आवै अगणता।''* और परमात्मा-भक्ति में जुड़ गये— *''गुरु सिख जनक असंख भगता॥''* श्री गुरु अरजन देव जी की महिमा अकथ्य है। इसके बारे में भट्ट मथरा जी ने सूत्र रूप में कहा है कि परमात्मा ने स्वयं उन्हें गुणों और बल से भरपूर कर महानता प्रदान की थी। श्री गुरु अरजन देव जी परमात्मा का प्रत्यक्ष रूप हो गए थे— ''भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि॥'' परमात्मा को आज तक किसी ने देखा नहीं है, उसके गुण ही सुने हैं। श्री गुरु अरजन देव जी में वे सारे गुण प्रकट हुए जो परमात्मा के बारे में सुने जाते रहे हैं।

परमात्मा प्रत्यक्ष किसी आकार विशेष में नहीं है, किन्तु अपने गुणों और शक्तियों के कारण वह सारे मानव समाज की आशा का केंद्र है। मनुष्य सभी स्थानों से भटकता हुआ जब निराश हो जाता है तब उसे एक ही सहारा नजर आता है— परमात्मा की कृपा का। जिसे कहीं भी ठौर नहीं मिला श्री गुरु अरजन देव जी उसे आश्रय देने वाले सिद्ध हुए। समाज की विषमताओं ने मनुष्य का जीवन कंटकाकीर्ण बना दिया था। जहां अपने अंतर के विकार उसे धर्म के मार्ग से दूर कर रहे थे वहीं समाज में व्याप्त ढोंग, आडम्बर, वैर-विरोध, स्वार्थ उसके मार्ग में बाधा बन रहे थे। श्री गुरु अरजन देव जी ने इससे पार पाने के लिए अपने जीवन को एक आदर्श के रूप में समाज के सामने रखा। जब परमात्मा जीवन का आधार बन जाता है तो मनुष्य भय और चिंता से मुक्त हो जाता है :

हरि के नाम को आधारु॥
कलि कलेस न कछु बिआपै
संतसंगि बिउहारु॥रहाउ॥
करि अनुग्रहु आपि राखिओ
नह उपजतउ बेकारु॥
जिसु परापति होइ सिमरै तिसु दहत नह संसारु॥
(पन्ना ११२१)

श्री गुरु अरजन देव जी को अपने जीवन में कड़े विरोध, षड्यंत्रों और आक्रमणों का सामना करना पड़ा था, किन्तु वे सदा ही परमात्मा पर अटल विश्वास को धारण कर सहज एवं निर्लिप्त

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४१७८-५२८९९*

अवस्था में बने रहे। उन्होंने संसार को यही उपदेश दिया कि परमात्मा में मन टिका हो तो वह कभी विचलित और व्यथित नहीं होता। जब मनुष्य का परमात्मा से संबंध श्रेष्ठ स्तर पर पहुंच जाता है तो परमात्मा स्वयं कृपा करके मनुष्य की सहायता करता है और उसके जीवन की निर्मलता बनाये रखता है। ऐसे मनुष्य को संसार के दुख छू भी नहीं पाते और वह परमात्मा में लीन रहना सीख जाता है।

श्री गुरु अरजन देव जी को अपने सगे भाई का विरोध सहना पड़ा, गुरु-घर के विरोधियों तथा मुगलों के षड्यंत्र एवं जुल्म झेलने पड़े और इनके बीच से गुरसिक्खी के प्रचार-प्रसार का रास्ता निकालना पड़ा था, जो किसी आम जन के लिए असंभव था। गुरु साहिब को इसमें सफलता मिली तो पावन आत्म-बल और परमात्मा की कृपा से। इसे गुरु साहिब ने धर्म का सच्चा मार्ग बताया। इस पर वही चल सकता है, जिसे परमात्मा पर विश्वास करना आ जाये। श्री गुरु अरजन देव जी को जानी नुकसान पहुंचाने के लिए उनके बड़े भाई प्रिथी चंद के उकसाने पर एक मुगल फौजदार सुलही खान अपनी फ़ौज लेकर श्री अमृतसर के लिए चल पड़ा और नगर के निकट पड़ाव डाल दिया। उसके इरादों का जब सिक्खों को पता चला तो वे श्री गुरु अरजन देव जी के पास दौड़ते हुए आये। उन्होंने सुलही खान को पीछे ही रोक भगाने की अनुमति मांगी। गुरु साहिब ने सभी को शांत किया और स्वयं भी सहज होकर बैठे रहे। उन्होंने कहा कि चिंता की कोई बात नहीं। उसे हमारे सामने आने दो, ईश्वर न्याय करेगा— *''सुलही ते नाराइण राखु॥''* सुलही खान विश्रामादि के बाद जैसे ही नगर की ओर बढ़ा, घोड़े के बिदकने से घोड़े सहित ईंट के भठ्ठे में जा गिरा और अंदर ही भस्म हो गया— *''सुलही का हाथु कही न पहुचै सुलही होइ मूआ नापाकु॥''*

श्री गुरु अरजन देव जी सदा ही सिक्खों को प्रेरणा देते कि उनके अंदर की अवस्था सबसे मूल्यवान है, जिसे बनाये रखने के लिये परमात्मा के समक्ष प्रार्थना करते रहना चाहिए। यदि परमात्मा पर सच्चा विश्वास हो और परमात्मा की कृपा हो तो मन की निर्मलता बनी रहती है। वास्तव में मन की गति विचित्र है। वह सदा ही भ्रमित होता रहता है और भयभीत रहता है। उसका सबसे बड़ा भय काल का है। इस भय से परमात्मा पर विश्वास धारण करके ही उबरा जा सकता है, अन्य कोई विधि नहीं है। जब ईश्वर सहायी हो तो कोई तिल-मात्र भी अनिष्ट नहीं कर सकता :

जिसु राखै आपि रामु दइआरा॥
तिसु नही दूजा को पहुचनहारा॥१॥रहाउ॥
सभ महि वरतै एकु अनंता॥
ता तूं सुखि सोउ होइ अचिंता॥
ओहु सभु किछु जाणै जो वरतंता॥

(पन्ना १७६)

परमात्मा पर विश्वास करना सरल नहीं। बड़े-बड़े साधकों, जप-तप करने वालों का भी विश्वास डोलता रहा है, त्यागियों, वैरागियों के मन की अवस्था भंग होती रही है। सिक्ख पंथ ने मनुष्य के धर्म-कर्म को उसकी उपलब्धि और सफलता की तरह नहीं लिया। गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा को परमात्मा की कृपा से ही पाया

जा सकता है— *''. . .गुर प्रसादि॥''* मनुष्य ने यदि मन को परमात्मा पर टिकाया है तो यह परमात्मा की दया और इच्छा से ही संभव हो सका है। मन सदा परमात्मा में रमा रहे इसके लिए भी सदैव परमात्मा की कृपा चाहिए। इसीलिए मन को सदा ईश्वर के सिमरन की अवस्था में बने रहने का मार्ग दिखाया गया है :

प्रभ अपुने जब भए दइआल॥
पूरन होई सेवक घाल॥
बंधन काटि कीए अपने दास॥
सिमरि सिमरि सिमरि गुणतास॥ (पन्ना १७८)

श्री गुरु अरजन देव जी ने कहा कि परमेश्वर की कृपा के लिये उसका सिमरन भी वही कर सकता है जिस पर परमात्मा कृपा करता हो— ''प्रभ किरपा ते नामु धिआईऐ॥'' गुरमति की स्पष्ट दृष्टि बनी कि मनुष्य अपने अंदर के सारे विकारों को त्याग कर अपने मूल को पहचाने। वह संसार की नश्वरता को समझे और परमात्मा की सर्वव्यापक सत्ता को जाने। इसके बाद ही वह परमात्मा के मार्ग पर चल सकता है। मनुष्य को जीवन परमात्मा से मिलाप के लिए मिला है। श्री गुरु अरजन देव जी ने कहा कि परमात्मा तो मन में बस रहा है। गुरु से ज्ञान प्राप्त करके ही उसे देख पाने की दृष्टि मिलती है :

काइआ नगरि बसत हरि सुआमी
हरि निरभउ निरवैरु निरंकारा॥
हरि निकटि बसत कछु नदरि न आवै
हरि लाधा गुर वीचारा॥ (पन्ना ७२०)

गुरु साहिब ने मानव तन को एक नगर के रूप में देखा जहां परमात्मा निवास करता है। मनुष्य के इससे अधिक निकट और क्या हो सकता है! किन्तु फिर भी वह दिखाई नहीं देता, क्योंकि अंदर विकार और माया-मोह का गुबार भरा हुआ है। इस गुबार के कारण मनुष्य परमात्मा से दूर रहता है और यत्र-तत्र भटकता रहता है। गुरु साहिब ने कहा कि इस गुबार से गुरु का ज्ञान ही उबार सकता है। इसके लिए श्री गुरु अरजन देव जी ने एक स्थायी आश्रय श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में प्रदान किया। यह आश्रय तब तक बना रहेगा जब तक यह सृष्टि रहेगी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु साहिबान की उच्चरित बाणी को संकलित करना, उसे सार्वभौमिक बनाते हुए प्रमुख भक्तों व श्रेष्ठ जनों की बाणी को भी सम्मिलित करना एक महान कार्य था। श्री गुरु अरजन देव जी ने इसे सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। संसार में स्नान, ध्यान और अनुष्ठान के बहुत-से तीर्थ थे जहां थोड़े-से लोग ही जा पाते थे। श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संयोजन व संपादन कर संसार का पहला और अंतिम विचार-तीर्थ स्थापित किया। इस तीर्थ में हर कोई जा सकता है, नित्यप्रति जा सकता है और दिन-रात विचार-स्नान कर अपने अज्ञान व अवगुणों की मैल धो सकता है— *''गुर कै सबदि तिखा निवारी सहजे सूखि समावणिआ॥''* यह तो गुरसिक्ख का मूल कर्त्तव्य है :

आइओ सुनन पड़न कउ बाणी॥
नामु विसारि लगहि अन लालचि
बिरथा जनमु पराणी॥ (पन्ना १२१९)

गुरु-शबद की प्रेरणा से ही संसार की सोच बदली। लोग परमात्मा का वास स्वर्ग में, आकाश

में बता रहे थे। गुरबाणी ने मन के अंदर परमात्मा के दर्शन कराये :

सदा हजूरि दूरि न जाणहु ॥
गुर सबदी हरि अंतरि पछाणहु ॥ (पन्ना ११६)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब परमात्मा की महिमा को जानने और स्वयं के सच को पहचानने का महान स्रोत बन गया। श्री गुरु अरजन देव जी जानते थे कि मानव-चेतना को जाग्रत करने के लिए एक ठोस आधार की आवश्यकता है। अंतर की भावनाओं को जब मूर्त रूप मिलता है तो मन का विश्वास दृढ़ होता है। श्री गुरु अरजन देव जी ने जहां मनुष्य के मन को हरि-मंदर बताया वहीं श्री अमृतसर साहिब में अमृत सरोवर के मध्य एक स्थान का सृजन किया जहां मनुष्य परमात्मा का प्रकट अनुभव कर सके। मन में परमात्मा का कैसा सुंदर स्थान बने और कैसे उसके गुणों का गायन हो, इसके लिये श्री हरिमंदर साहिब से महान प्रेरणादायी उदाहरण और कोई नहीं हो सकता था।

श्री हरिमंदर साहिब की रचना धरती पर बैकुंठ लाने जैसी घटना थी। बैकुंठ के बारे में जो कल्पनायें युगों से की जा रही थीं उन्हें श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री अमृतसर साहिब में साकार कर दिखाया। श्री हरिमंदर साहिब में श्री गुरु अरजन देव जी शबद-गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सेवक के रूप में नजर आये। यह स्पष्ट संदेश था कि गुरसिक्ख के लिए आराध्य शबद-गुरु है। जैसे श्री हरिमंदर साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की प्रतिष्ठा है वैसी ही शबद-गुरु की प्रतिष्ठा और सम्मान सिक्ख के मन में हो। जैसे श्री हरिमंदर साहिब में अनवरत शबद-कीर्त चलता है, वैसे ही सिक्ख के मन में सदा परमात्मा का सिमरन चलता रहे। मनुष्य अपनी सारी सामर्थ्य से परमात्मा की शरण व कृपा पाने का यत्न करे।

श्री गुरु अरजन देव जी गुरसिक्ख के मन की अवस्था का सृजन कर रहे थे और उसे आधार देने के लिए नित्य नई प्रेरणायें दे रहे थे। इसके लिए उन्होंने जहां अपना पूरा जीवन लगाया वहीं जीवन इसी हित न्यौछावर भी कर दिया। श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी परमात्मा में विश्वास और उस विश्वास से उपजी सहज अवस्था का आदर्श प्रतीक थी। श्री गुरु अरजन देव जी जिस सक्रियता से लोगों को परमात्मा के साथ जोड़ने का कार्य कर रहे थे उससे उन ताकतों को खतरा महसूस होने लगा था जो लोगों की भावनाओं का शोषण कर अपने स्वार्थों की पूर्ति में लगी हुई थीं। ऐसी ताकतें अन्याय और अत्याचार की किसी भी हद तक जाने को तैयार थीं। श्री गुरु अरजन देव जी के लिए समय का सदुपयोग परमात्मा की भक्ति में था :

भले दिनस भले संजोग ॥
जितु भेटे पारब्रहम निरजोग ॥ १ ॥
ओह बेला कउ हउ बलि जाउ ॥
जितु मेरा मनु जपै हरि नाउ ॥१ ॥ रहाउ ॥
सफल मूरतु सफल ओह घरी ॥
जितु रसना उचरै हरि हरी ॥ २ ॥
सफलु ओहु माथा संत नमसकारसि ॥
चरण पुनीत चलहि हरि मारगि ॥ ३ ॥
कहु नानक भला मेरा करम ॥
जितु भेटे साधू के चरन ॥ ४ ॥ (पन्ना १९१)

श्री गुरु अरजन देव जी ने दृढ़ता के साथ कहा

कि मनुष्य का वही कर्म श्रेष्ठ है जो धर्म की मर्यादा और प्रतिष्ठा के लिए किया जाता है। जीवन का वह हर पल सार्थक होता है जब मन परमात्मा की प्रीति करता है। परमात्मा का गुणगान करने, उसकी शरण में मन टिकाने में ही सच्ची उपलब्धि है। परमात्मा के आगे अपना सब कुछ अर्पण कर देने से जीवन का मनोरथ पूरा होता है। मुगल बादशाह जहांगीर के मन में श्री गुरु ग्रंथ साहिब को लेकर भ्रम थे। वह सिक्ख पंथ के बढ़ते प्रभाव को अपने राज्य के लिए खतरे की तरह देख रहा था। उसने गुरु साहिब की शहादत का हुक्म जारी कर दिया। गुरु साहिब को लाहौर में कैद करने के बाद असहय यातनायें दी गईं। ऐसी यातनायें जिनके बारे में सोच कर आज भी किसी का मन दहल जाता है। भीषण गर्मी में देग में उबालना, गर्म रेत नंगे बदन पर डालना, तपते हुए लोहे के तवे पर बैठा कर नीचे आग जला देना। जुल्म का ऐसा कोई दूसरा उदाहरण इतिहास में नहीं मिलता। इतिहास में यह भी नहीं मिलता कि इतनी यातनायें सहने के बाद किसी ने अपनी सहजता बनाये रखी हो और मुख से उफ़ तक न की हो। श्री गुरु अरजन देव जी की गिरफ्तारी का पता जब प्रसिद्ध मुस्लिम फकीर साँई मियां मीर जी को चला तो वे तुरंत उनसे मिलने पहुंचे और बादशाह से बात करने की इच्छा प्रकट की। श्री गुरु अरजन देव जी ने उन्हें मना कर दिया। श्री गुरु अरजन देव जी जानते थे कि सिक्ख पंथ मानवीय हित के लिए है, किसी के विरुद्ध नहीं। यह भी साफ़ था कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में परमात्मा की महानता और उससे जुड़ने की प्रेरणा है, किसी धर्म का विरोध नहीं है। वे यह भी जानते थे कि साँई मियां मीर जी द्वारा बादशाह को आग्रह करने पर शायद उन्हें रिहा कर दिया जाये, मगर वे नहीं चाहते थे कि इतिहास इसे किसी अन्य सन्दर्भ में ले, इसलिए आवश्यक हो गया था कि वे अपनी शहादत देकर सत्य को सिद्ध करें। यह मानव समाज के लिए बहुत बड़ी सीख थी कि सत्य के पथ पर चलते रहने के लिए कभी-कभी प्राण भी देने पड़ते हैं। पंच तत्वों से बना नश्वर तन ही नष्ट होता है। नष्ट होना ही उसका अंतिम प्रारब्ध है, किन्तु जीव की यात्रा चलती रहती है, सत्य आगे बढ़ता रहता है।

श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरसिक्खी की उस अवस्था का सृजन किया जिसमें दुख, दर्द, भ्रम और भय का कोई स्थान नहीं था :

सभ तजि अनाथु एक सरणि आइओ ॥
ऊच असथानु तब सहजे पाइओ ॥३ ॥
दूखु दरदु भरमु भउ नसिआ ॥
करणहारु नानक मनि बसिआ ॥ (पन्ना १८९)

परमात्मा की शरण लेने पर सहज की सुंदर अवस्था बन जाती है। मन 'हरि-मंदर' बन जाए तो कोई भ्रम नहीं रहता। सारे विकार, दुख और भय मिट जाते हैं। परमात्मा का आसरा सारी तृष्णाओं, वासनाओं और व्याकुलताओं से मुक्त कर शीतलता एवं समभाव प्रदान करने वाला है— ''तपति माहि ठाढि वरताई ॥'' परमात्मा की कृपा इस जीवन को आनंद से भर देती है और परलोक में भी सहायक बनती है— *''प्रभ की प्रीति सगल उधारै ॥ प्रभ की प्रीति चलै संगारै ॥''*

श्री गुरु अरजन साहिब ने गुरसिक्ख को

अद्‌भुत शस्त्रों से सजा कर एक अपराजेय योद्धा बनाया, जिसके आगे कोई टिक नहीं सकता था। गुरु साहिब ने कहा कि गुरसिक्ख की विनम्रता और सहजता उसकी सबसे बड़ी शक्ति है— *''गरीबी गदा हमारी॥''* इन गुणों की शक्ति अपार है। जिसमें विनम्रता और सहजता है उसे कोई भी अन्यायी, अत्याचारी अपने बाहुबल एवं सैन्यबल से पराजित नहीं कर सकता, उसे उसके सत्य के पथ से विचलित नहीं कर सकता। जहांगीर हिंदुस्तान का शहंशाह था। उसके पास लाखों की पराक्रमी फ़ौज थी, फिर भी वह श्री गुरु अरजन देव जी को उनके निश्चय से डिगा नहीं सका। गुरु साहिब ने कहा कि गुरसिक्ख का अपने अस्तित्व को सभी के चरणों की धूल समझ लेना उसके अस्तित्व का खड़्ग बन जाने जैसा होता है, जिसके आगे संसार भर की दुष्टता हार जाती है— *''खंना सगल रेनु छारी॥ इसु आगै को न टिकै वेकारी॥''* ऐसे आत्म-बल वाले योद्धाओं के हाथ में जब तेग आती है तो संसार को अचंभे में डाल देती है। संसार जब सिक्खों के शौर्य और पराक्रम की गाथा सुनता एवं पढ़ता है तो उस पराक्रम के पीछे के आत्म-बल के बारे में भी जानना चाहिए, जो गुरु साहिबान ने प्रदान किया था।

जो माया से विरत, जन्म-मरण और काल से परे एक अकल्पनीय शक्ति है, सूर्य और चन्द्रमा के प्रकाश से कहीं अधिक प्रखर परमात्मा की मनोहारी आभा जिनमें प्रकट हो रही है, जिनका प्रताप संसार का उद्धार करने वाला है, जिससे सर्वत्र उनकी जय-जयकार हो रही है, सारे लोग जिनके चरणों में नत्‌मस्तक होकर अपना जीवन सफल कर रहे हैं, जिनका ज्ञान सर्वश्रेष्ठ और बिना किसी भेदभाव के सभी वर्णों के लिए है, जिनकी प्रेम-भक्ति से संसार मोक्ष प्राप्त कर रहा है, ऐसे अपार गुणों के स्वामी श्री गुरु अरजन देव जी में भाई गुरदास जी ने सच्चे सृजनकर्त्ता के दर्शन किए। श्री गुरु अरजन देव जी के गुरु-काल को उन्होंने सत्य की शोभा और महत्ता का काल कहा :

साधसंगति है गुरु सभा
रतन पदारथ वणज सहता।
सचु नीसाणु दीबाणु सचु
सचु ताणु सचु माणु महता।
अबचलु राजु होआ सणखता॥ (वार २४:१९)

श्री गुरु अरजन देव जी का दरबार ऐसा था जहाँ साधसंगत जुड़ती थी और जहाँ गुणों की वर्षा होती थी। गुरु साहिब सत्य के प्रतीक बन गए थे और सत्य की महिमा से पूरे संसार को आलोकित कर रहे थे। ऐसा श्रेष्ठ उपकार अपूर्व और अनोखा था। अनगिनत लोग गुरु साहिब की शरण लेने और गुरु-शबद के चल रहे लंगर से अपना मन तथा जीवन पावन बनाने के लिए अपना शीश निवा रहे थे। श्री गुरु अरजन देव जी की कृपा से सहज ही सुखों की प्राप्ति हो रही थी। श्री गुरु रामदास जी के घर श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म अनंत सुख देने वाला साबित हुआ। श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी अपार सृजनशीलता और प्रेम-भावना से पूरे संसार को सुखों के अतुलनीय दान दे मालामाल कर दिया। उनका सबसे बड़ा दान था— साधसंगत का अविचल राज स्थापित करना। गुरु साहिबान से पूर्व साधसंगत का विचार तो था, किन्तु उसका

कोई निश्चित स्वरूप नहीं था। सत्य के अभाव में शंका और भ्रम का वातावरण था, जिसका लाभ उठा कर पाखंड एवं फरेब का बोलबाला था। साधसंगत के नाम पर लोग ठगे जा रहे थे और धर्म के नाम पर अधर्म हो रहा था। सत्य को सामने लाने का उपकार गुरु साहिबान ने किया था, जिससे साधसंगत को भी चिन्हित किया जा सका था। गुरु साहिबान ने लोगों को परमात्मा के सत्य से जोड़ा और धर्म की सार्थक चर्चा से जीवन के उद्देश्य की ओर उन्मुख किया। गुरु साहिबान का ज्ञान सर्वकालिक और शाश्वत था जिसकी आवश्यकता मानवता को तब तक रहने वाली थी जब तक सृष्टि कायम है। श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी विशद दृष्टि से इस आवश्यकता को समझा और ऐसे उपाय किए जिन्होंने मानवता के मार्ग को सदा-सदा के लिए प्रशस्त कर दिया। जिस साधसंगत का आयोजन श्री गुरु नानक साहिब ने आरंभ किया था, उन्होंने उसकी विस्तृत व्याख्या की, ताकि कोई संशय न रहे :

पिंगुल परबत पारि परे खल चतुर बकीता ॥
अंधुले त्रिभवण सूझिआ गुर भेटि पुनीता ॥ १ ॥
महिमा साधू संग की सुनहु मेरे मीता ॥
मैलु खोई कोटि अघ हरे
निरमल भए चीता ॥१ ॥रहाउ ॥
ऐसी भगति गोविंद की कीटि हसती जीता ॥
जो जो कीनो आपनो तिसु अभै दानु दीता ॥ २ ॥
सिंघु बिलाई होइ गइओ त्रिणु मेरु दिखीता ॥
स्रमु करते दम आढ कउ ते गनी धनीता ॥ ३ ॥
कवन वडाई कहि सकउ बेअंत गुनीता ॥
करि किरपा मोहि नामु देहु नानक दर सरीता ॥
(पन्ना ८०९)

साधसंगत के लक्षणों का वर्णन करते हुए श्री गुरु अरजन देव जी ने मनुष्य की अयोग्यताओं, कमियों और अवगुणों का उल्लेख किया। गुरु साहिब ने कहा कि अपनी अकर्मण्यता और अज्ञानता के कारण मनुष्य कुछ भी प्राप्त कर पाने में असमर्थ रहता है। साधसंगत में उसे विकारों से मुक्ति और आत्मिक चैतन्यता प्राप्त होती है, ईश्वर के स्वरूप तथा महिमा के दर्शन होने लगते हैं। पाप-कर्मों से अपवित्र हुआ उसका मन निर्मल हो जाता है और वह ईश्वर की भक्ति कर मोह-माया, विकारों से ऊपर उठ जाता है। उसमें विनम्रता आ जाती है, जैसे सिंह मानो बिल्ली बन जाए। वह छुद्रताओं, स्वार्थों से ऊपर उठ कर सम्पूर्ण मानवता के हित की सोचने लगता है मानो एक तिनका पर्वत बन गया हो। पहले वह छोटी-छोटी उपलब्धियों, धन, सम्पत्ति, वंश, पद, प्रसिद्धि, शक्ति के लिए परेशान रहता है, साधसंगत में वह सच्चे गुणों का स्वामी बन जाता है। साधसंगत की महिमा अपार है, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। साधसंगत द्वारा परमेश्वर से बिछड़ा हुआ मनुष्य नाम का दान पाकर भवसागर से पार हो जाता है।

ऐसी साधसंगत सदैव मनुष्य को प्राप्त रहे, इसके लिए श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने पिता श्री गुरु रामदास जी की भावना के अनुरूप ही अमृत सरोवर की खुदाई को पूर्ण किया और ईंटों की सीढ़ियां बनवाकर पक्का करवा दिया, ताकि बड़ी संख्या में वहां आकर सरोवर में डुबकी लगाने

वाले श्रद्धालुओं को सुविधा हो सके। बाद में गुरु साहिब को सरोवर के बीच श्री हरिमंदर साहिब के निर्माण का अद्‌भुत विचार आया, जिसकी नींव उन्होंने प्रसिद्ध सूफी फकीर साँई मियां मीर जी से रखवाई। इसके निर्माण में भी गुरु साहिब ने अपूर्व रचना-शक्ति का परिचय देते हुए भवन की ऊँचाई को निकटवर्ती भवनों की ऊँचाई से कम रखा, जो गुरमति के प्रमुख तत्व विनम्रता को साक्षात् प्रकट करने वाला निर्णय था। आम तौर पर हिंदू-मन्दिरों का प्रवेश द्वार पूर्व दिशा की ओर होता था, जिधर से सूर्योदय होता है। गुरु साहिब ने श्री हरिमंदर साहिब के सभी दिशाओं में द्वार बनवाकर उदारता, समरसता और सर्वहित की धारणा को प्रमुखता प्रदान की। गुरु साहिब का यह निर्णय भी युगांतरकारी प्रभाव वाला था। समाज के हर वर्ग को प्रेम सहित समान सत्कार से आमन्त्रण देने वाला और सभी को बिना किसी भेदभाव के अपनी शरण में लेकर उबार लेने वाला यह पहला धर्म-स्थल था, जिसने सृष्टि की रचना के बाद धरती पर आकार लिया था और जहाँ सभी की भावनाओं को प्रश्रय मिलने की संभावनायें पैदा हुई थीं। एक ऐसे केंद्र की रचना हुई थी जहाँ सभी को एक समान ढंग से परमात्मा के नाम का दान दिया जाना था और जहाँ सभी को जीवन के उद्धार की एक ही युक्ति बताई जानी थी। एक ऐसा शरण-स्थल बना था, जिस पर सभी की समान पहुंच होनी थी और जहाँ हर पल हरेक पर कृपा बरसनी थी। श्री गुरु अरजन देव जी की गहरी निगरानी और सतर्कता और सिक्खों के सहयोग से यह कार्य पूरे उत्साह से पूर्ण हुआ। यद्यपि श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण श्री गुरु अरजन देव जी की सृजनशीलता, गंभीर संकल्प और वैयक्तिक उत्साह का परिणाम था, किन्तु इसका पूरा श्रेय परमात्मा को देकर गुरु साहिब ने अपने परम आत्मिक सौन्दर्य का परिचय दिया। उन्होंने इस अवसर पर निम्न शबद का उच्चारण किया, जो कि बाद में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के (प्रथम) प्रकाश के वक्त हुकमनामे के रूप में भी संगत को संबोधित हुई :

संता के कारजि आपि खलोइआ
हरि कंमु करावणि आइआ राम॥
धरति सुहावी तालु सुहावा
विचि अंम्रित जलु छाइआ राम॥
अंम्रित जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ
सगल मनोरथ पूरे॥
जै जै कारु भइआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे॥
(पन्ना ७८३)

गुरु साहिब ने अभिव्यक्त किया कि यह धर्म का कार्य था, जिसे परमात्मा ने खुद उपस्थित होकर स्वयं करवाया। यह एक ऐसा कार्य सम्पन्न हुआ, जिससे धरती की शोभा बढ़ गई और सरोवर का जल अमृत जैसा भरपूर हो गया। इससे धर्म-मंडल का सम्मान स्थापित हुआ और वह मनोरथ पूरा हो गया जिसके लिए श्री हरिमंदर साहिब और अमृत-सरोवर के निर्माण का उपक्रम किया गया था। अमृत सरोवर और श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण संसार के सारे शोक और संताप मिटाने वाला है।

दाति सवाई निखुटि न जाई अंतरजामी पाइआ॥
कोटि बिघन सगले उठि नाठे
दूखु न नेड़ै आइआ॥ *(पन्ना ७८४)*

श्री हरिमंदर साहिब और अमृत-सरोवर को गुरु साहिब ने रिद्धियाँ-सिद्धियाँ दूनी-चौगुनी करने वाला और सारे विघ्न, आपदायें, दुख दूर करने वाला बताया है।

अमृत-सरोवर और श्री हरिमंदर साहिब के निर्माण के बाद कितने ही विघ्न आए, कितनी ही बार इनकी मर्यादा भंग करने के यत्न हुए, निर्माण को नेस्तनाबूद करने के षड्यंत्र हुए, किन्तु सबके मंसूबे परमात्मा ने स्वयं विफल किए और हर ऐसे प्रयास के बाद इस स्थल की शोभा अधिक उभर कर सामने आई। आज श्री हरिमंदर साहिब संसार का सबसे बड़ा सत्य का प्रतीक है, जिसकी प्रतिष्ठा और महिमा पर कोई प्रश्न-चिन्ह नहीं है। श्री हरिमंदर साहिब की शोभा करोड़ों लोगों की सतत आस्था के कारण है। श्री हरिमंदर साहिब की महिमा लाखों लोगों के स्वत: प्रेरणा से प्रतिदिन दर्शन करने के लिए आने के कारण है। श्री हरिमंदर साहिब की कृपा पौ फटने के पूर्व से देर रात तक चलने वाले शबद-कीर्तन के अनवरत लंगर से है, जो अंतर-चेतना को जाग्रत करने वाला है। श्री हरिमंदर साहिब का सौन्दर्य विनम्रता, समानता, सेवा, परोपकार जैसे गुणों का सौन्दर्य प्रत्यक्ष करने में है। सद्जीवन की प्रेरणा देने वाले इस महान तीर्थ को श्री गुरु अरजन देव जी के ईश्वरीय कार्य के रूप में देखा गया है। परमात्मा ही ऐसा कार्य कर सकता है :

सद जीवणु अरजुनु अमोलु आजोनी संभउ ॥
भय भंजनु पर दुख निवारु अपारु अनंभउ ॥
अगह गहणु भ्रमु भ्रांति दहणु सीतलु सुख दातउ ॥
आसंभउ उदविअउ पुरखु पूरन बिधातउ ॥

(पन्ना १४०७)

श्री गुरु अरजन देव जी ने जो किया वह किसी मानवीय शक्ति के परे था। चारों ओर का विरोध, बाधायें, रुकावटें, आक्रमण के बाद भी अपने मार्ग पर चलते जाना महान संकल्प का अनूठा उदाहरण था। गुरु साहिब ने धर्म-प्रचार और मानवीय हितों के प्रत्येक पक्ष को पूरी तरह से ध्यान में रखा और अनोखा समन्वय स्थापित किया था।

अपनी महान कल्पनाशीलता और सृजनशीलता से श्री गुरु अरजन देव जी ने शबद-गुरु को भी एक निश्चित व निर्धारित स्वरूप प्रदान करने का निर्णय किया। यह निर्णय अत्यंत महत्वपूर्ण और दूरगामी प्रभाव वाला था, जिसने भविष्य में सिक्ख पंथ को एक नई दिशा दी और संसार को ज्ञान की महत्ता से अवगत कराया। आज श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष करोड़ों लोग प्रतिदिन नत्मस्तक होते हैं और प्रतिदिन गुरबाणी से हुक्म ले अपने जीवन को दिशा प्रदान करते हैं। गुरु साहिब ने जब गुरबाणी को संकलित कर एक ग्रंथ का आकार देने का कार्य अपने हाथ में लिया तो उन्हें ज्ञात था कि यह कितना कठिन है। उन्होंने सारे कार्य को बड़े ही नियोजित, समन्वित ढंग से और न्यूनतम समयावधि में संपूर्ण किया, जो आज के प्रबंधकों को हैरान करने वाला है तथा समझ से बाहर है। ज्ञान का ऐसा प्रबंधक संसार में आज तक दूसरा कोई नहीं हो सका है। श्री गुरु नानक साहिब से लेकर श्री गुरु रामदास जी की बाणी को एकत्र करना और उसकी प्रमाणिकता की पहचान करना अपने आप में एक बहुत बड़ा कार्य था, जिसके लिए अतिशय एकाग्रता,

ग्राह्यता और विवेचना की आवश्यकता थी। यह श्री गुरु अरजन देव जी का ही सामर्थ्य था, जिससे ऐसा दुरूह कार्य संभव हुआ। अगले चरण में गुरु साहिब ने समकालीन भक्त साहिबान की बाणी भी संकलित कर इस पावन ग्रंथ में शामिल करने का निर्णय लिया, जो अभूतपूर्व था।

किसी भी रचनाकार ने कभी अपने ग्रंथ में अन्य को स्थान नहीं दिया और किसी को अपने से श्रेष्ठ अथवा समतुल्य नहीं माना। यह बौद्धिक अहम् आज भी दिखता है। दुनिया में हर संत, उपदेशक, महापुरुष ने अपने ही विचार आगे किए और अपनी ही प्रतिष्ठा की कामना की। गुरु साहिब विकारों को जीत निर्विकार हो गए थे। उनके हृदय में पूरा ब्रह्माण्ड समाहित था— *''गुर रामदास तनु सरब मै सहजि चंदोआ ताणिअउ॥''* उनकी चिंता सम्पूर्ण मानवता की चिंता थी, उनका मित्र सारा जगत था और उनकी दृष्टि से एक-एक जीव के लिए दया, करुणा एवं कृपा बरस रही थी। इस विशाल और उदार आधार पर खड़े होकर ही गुरु साहिब ने समकालीन पन्द्रह भक्त साहिबान की बाणी भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल की, जो गुरु साहिबान के विचारों व जीवन-दर्शन के अनुकूल थी। इसमें कोई भेदभाव नहीं किया गया, न तो जाति व धर्म का, न किसी क्षेत्र, प्रान्त व व्यवसाय का। मानव-कल्याण के मोती जहाँ से भी मिले, चुन लिए गए। गुरु साहिब ने सारे भक्त साहिबान को आदरणीय सम्बोधन दिए। अपने सिक्खों, श्रद्धालु भट्ट बाणीकारों पर भी उनकी दृष्टि गई। प्रमाणिक बाणी के चयन के साथ ही उसे लिखाने का कार्य पर भी गुरु साहिब ने स्वयं अपने ऊपर लिया। 'आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब' सम्पूर्ण होने के बाद जिस आदर और प्रतिष्ठा से बाबा बुड्ढा जी ने उसे अपने सिर पर उठाया और गुरु साहिब स्वयं चौर (चँवर) करते हुए पीछे चले तथा श्री हरिमंदर साहिब में प्रकाश किया गया, यह ज्ञान को सम्मान प्रदान करने की एक नई परम्परा थी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब उच्च आसन पर विराज रहे थे और गुरु साहिब ने रात में नीचे जमीन पर विश्राम किया। ऐसा न तो आज तक किसी राजा-महाराजा ने किया था और न किसी ऋषि, मुनि, सन्यासी, आध्यात्मिक पुरुष ने। वे धर्म के प्रतीक और परमात्मा का प्रकट प्रमाण बन गए थे :

ध्रंम धीरु गुरमति गभीरु पर दुख बिसारणु॥
सबद सारु हरि सम उदारु अहंमेव निवारणु॥

(पन्ना १४०७)

श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा 'शबद' को सम्मान की स्थापित की गई परम्परा गुरु के प्रति एक सिक्ख के समर्पण और विश्वास का आधार बनी। एक गुरसिक्ख अपने जीवन में जितना सम्मान श्री गुरु ग्रंथ साहिब को देता है उतना किसी अन्य को नहीं। यह भावना ही उसमें आमूल परिवर्तनों की उत्प्रेरक बनती है और वह विनम्रता, उदारता, सहयोग, धैर्य, संतोष जैसे गुणों की ओर बढ़ता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रति सम्मान और सत्कार एक अभ्यास है जीवन को संयमित कर विकारों से ऊपर उठने का। जैसे-जैसे यह दृढ़ होकर स्वभाव बनता जाता है वैसे-वैसे मनुष्य अपने लक्ष्य के निकट पहुँचता जाता है। मनुष्य के गुण वैसे ही विस्तृत और

व्यापक होते जाते हैं, जैसे एक छोटा-सा बीज समय के साथ एक विशाल वृक्ष का रूप ले लेता है। आज कोई सिक्ख या गैरसिक्ख यदि आत्म-उत्थान की ओर बढ़ना चाहता है तो पहली सीढ़ी श्री गुरु ग्रंथ साहिब का आदर करना सीखना है :

घटि घटि रमईआ रमत राम राइ
गुर सबदि गुरू लिव लागे ॥
हउ मनु तनु देवउ काटि गुरू कउ
मेरा भ्रम भउ गुर बचनी भागे ॥ २ ॥
अंधिआरै दीपक आनि जलाए
गुर गिआनि गुरू लिव लागे ॥
अगिआनु अंधेरा बिनसि बिनासिओ
घरि वसतु लही मन जागे ॥ (पन्ना १७२)

शबद-गुरु को ग्रहण करना उसको अपना सर्वस्व अर्पण कर देना ही मुक्ति का मार्ग है। शबद-गुरु ही मार्गदर्शक है, जिसे श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में भ्रम, अज्ञानता का अन्धकार दूर करने वाला दीपक बनाया। यह दीपक सारी प्राप्तियों का माध्यम बना।

श्री गुरु अरजन देव जी विश्वास, धैर्य और शील के पर्याय थे और यह गुण जीवन भर उनमें मुखर होते रहे। कभी परिवार के सदस्यों के कारण, कभी धार्मिक, सामाजिक कारणों से वे निरंतर अपने गुणों को सत्य की कसौटी पर सिद्ध करते हैं। मुगल शासक जहांगीर को उनकी महिमा के सूर्य का लगातार चमकते जाना सहन नहीं हो रहा था, इसलिए उसने दुर्भावना और ईर्ष्या से गुरु साहिब को गिरफ्तार करवा लाहौर बुलवा लिया और यातनायें देकर शहीद करने का हुक्म सुना दिया। सूफी संत साँई मियां मीर जी ने जब इसमें हस्तक्षेप करना चाहा तो गुरु साहिब ने ऐसा करने से उन्हें रोक दिया। वे चाहते थे कि संसार अन्याय की हद देखे और धैर्य, संतोष एवं समर्पण का शिखर भी। गुरु साहिब ने सारी यातनायें शांतिपूर्वक सहने का निर्णय लिया ताकि सत्य के अडिग और अविचल रहने का आदर्श स्थापित हो सके। वे परमात्मा की प्रीति में इतने पगे हुए थे कि अन्य किसी सुख-दुख का कोई अर्थ नहीं रह गया था, बस, परमात्मा था और वे थे :

हरि बिनु कछू न लागई भगतन कउ मीठा ॥
आन सुआद सभि फीकिआ करि निरनउ डीठा ॥
(पन्ना ७०८)

माया-मोह के स्वाद ही नहीं, अधर्म द्वारा दिए गए तन के कष्ट भी बेअसर हो जाते हैं जब परमात्मा की प्रीति का रस आने लगता है। यह सबसे मीठा और गहरा रस है जो तन और मन को इस तरह अपने प्रभाव में ले लेता है कि मन अचिंत और तन अभय हो जाता है। गुरु साहिब ने कई दिन, तरह-तरह की यातनायें सह कर इतनी बड़ी अन्यायी बादशाहत को अपनी शांत वृत्ति से निर्भय रह कर परास्त कर दिया और अपने विचारों पर अडिग रहे। श्री गुरु अरजन देव जी का जीवन सत्य की विजय- पताका था, जिसने संसार को धर्म और न्याय के प्रति आश्वस्त किया तथा परमात्मा के मार्ग पर आगे बढ़ाया।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा लड़े गए युद्धों का वर्णन

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

जब अत्याचारियों का अत्याचार सीमा से अधिक बढ़ जाता है, जब निर्दयी शासकों को सब्र, शांति, मानवाधिकार, अमन की बातें व्यर्थ जान पड़ती हैं और जब सहिष्णुता को कमजोरी समझ लिया जाता है, तब अत्याचार एवं शासकीय निर्दयता व निरंकुशता के विरुद्ध हथियार उठाने पड़ते हैं; धर्म, मानवता, शांति, सच्चाई, न्याय तथा मानवाधिकारों की रक्षा हेतु रणभूमि में उतरना ही पड़ता है।

शांति के मसीहा, सहिष्णुता व नम्रता के पुंज और शहीदों के सिरताज श्री गुरु अरजन देव जी जब अपनी शहादत देने हेतु लाहौर की ओर प्रस्थान करने लगे, तब उन्होंने अपने सुपुत्र श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को अपना उत्तराधिकारी एलान कर ये शब्द फरमान किए— ''सुपुत्र! अब शस्त्र धारण करने हैं और अत्याचार के खिलाफ तब तक डटे रहना है, जब तक ये अत्याचारी अत्याचार करना छोड़ न दें या ये खत्म न हो जाएं।''

पांचवें पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी को १ आषाढ़, संवत् १६६३ तद्नुसार ३० मई, सन् १६०६ ई. को अत्यंत यातनाएं व कष्ट देकर शहीद कर दिया गया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की आयु उस समय ग्यारह वर्ष थी।

इतिहासकार बैनर्जी के कथनानुसार, ''श्री गुरु अरजन देव जी ने दूरदृष्टि से जान लिया था और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अनुभव कर लिया था कि बिना शस्त्र के सिक्ख कौम एवं जत्थेबंदी का बचना मुश्किल है।''

गुरुआई संभालने के बाद श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने बाबा बुड्ढा जी को दो कृपाणें पहनाने के लिए कहा।

बाबा बुड्ढा जी ने गुरु जी को दो कृपाणें पहनाईं। एक मीरी (राजनीतिक) चिन्ह के तौर पर और दूसरी पीरी (धार्मिक) चिन्ह के रूप में। गुरु जी के हुकमनामे पहुंचने की देर थी कि सिक्खों ने शस्त्र, घोड़े भेंट करने शुरू कर दिए। अनेक शूरवीर युवक गुरु जी की सेना में भर्ती हो गए। यह करिश्मा पहली बार हो रहा था कि सिक्ख कौम शस्त्रधारी जत्थेबंदी के रूप में संगठित होने लगी।

गुरुआई पर सुशोभित होते समय गुरु जी ने एकत्र हुई सिक्ख संगत के समक्ष अपने इन विचारों को प्रकट किया, ''आज से मेरी प्रिय भेंट उत्तम शस्त्र व श्रेष्ठ युवाशक्ति होगी। व्यायाम करो, कुश्ती लड़ो, गतका खेलो, शिकार खेलने

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

के लिए जंगलों में जाओ, घोड़े की सवारी करो! कमजोरी महा अपराध है। तुम लोगों ने कृपाण इसलिए उठानी है और मैंने भी इसलिए दो कृपाणें धारण की हैं, ताकि अत्याचारी की तलवार चलनी बंद हो जाए। हम सभी आज से संकल्प लेते हैं कि हमारी कृपाणें तब तक चलती रहेंगी, जब तक संसार में से अत्याचार खत्म नहीं हो जाता।''

अत्याचार, अन्याय, अधर्म, कट्टरवाद, झूठ को समाप्त करने के लिए श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने जीवन-काल में कुल चार युद्ध किए। उनका पहला युद्ध मुखलिस खान के विरुद्ध श्री अमृतसर में हुआ। दूसरा युद्ध श्री हरिगोबिंदपुर में, तीसरा गुरुसर महिराज नामक स्थान पर, चौथा व अंतिम युद्ध करतारपुर (जलंधर) में हुआ।

संवत् १६८५ (सन् १६२८) की बात है। गुरु जी श्री अमृतसर में अपनी सुपुत्री बीबी वीरो जी के अनंद कारज का प्रबंध कर रहे थे।

श्री अमृतसर के निकट सिक्खों का एक दल शिकार के लिए जंगल में था। वहां मुगलों का उड़ता हुआ बाज सिक्खों के हाथ लग गया। उन्होंने उसे पकड़ कब्जे में ले लिया। बात शाहजहां तक पहुंची। मुगलिया सलतनत आगबबूला हो उठी कि आज सिक्खों ने हमारा बाज पकड़ा है, कल को हमारा ताज भी हथियाएंगे। बादशाह शाहजहां ने मुखलिस खान के नेतृत्व में सेना भेज गुरु जी को गिरफ्तार कर लाहौर लाने के लिए भेजा।

गुरु जी को खबर मिली कि मुगल सेना हमला करने के लिए आ रही है। गुरु जी ने अपने सेवकों की सेना को साथ ले सामना करने का निर्णय लिया। पहली झड़प में ही मुगलिया सेना का नायक भाग गया। मुगल सेना की पराजय को देखते हुए मुखलिस खान ने खुद गुरु जी के विरुद्ध कमान संभाल ली। शूरवीर सिक्खों द्वारा जबरदस्त मुकाबला किए जाने पर मुगलों की सेना घबरा गई। मुखलिस खान द्वारा पुनः उत्साहित किए जाने पर शाही सेना के पांव मजबूत होने लगे। सिक्खों की सेना में भी हलचल मची। गुरु जी द्वारा युद्ध की कमान स्वयं संभालने पर सिक्खों के हौसले और भी बुलंद हो गए। सायं काल तक युद्ध होता रहा। कोई फैसला न हो सका। अंततः रात घिर आई।

मुखलिस खान ने सोचा कि गुरु जी से नाममात्र अधीनगी (ईन) मनवा ली जाए। उसने रात को संदेशवाहक भेजा। गुरु जी ने ऐतिहासिक उत्तर दिया, ''यह सही है कि हमें कोई मलकियत नहीं चाहिए और न ही हमने किसी देश को जीतना है, लेकिन हमने हमलावर बनकर आई सेना को मुंहतोड़ जवाब अवश्य देना है। अधीनता स्वीकार करने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता।''

गुरु जी द्वारा ऐसा फरमान जारी किए जाने पर मुखलिस खान आगबबूला हो उठा और उसने निर्णायक युद्ध लड़ने का फैसला किया। उसने कहा कि सेनाओं को आपस में मरवाने का क्या लाभ? केवल गुरु जी और उसमें युद्ध हो। फिर

क्या था? अपने बल का घमंड करने वाला मुखलिस खान आमने-सामने की लड़ाई में गुरु जी के हाथों मारा गया। उसकी सेना पराजय स्वीकार कर वापिस भाग गई। गुरु जी वहां से सीधे झब्बाल चले गए तथा वहीं पर बीबी वीरो जी का अनंद कारज (विवाह) किया।

इतिहासकार लतीफ लिखता है कि पंजाब के इतिहास में मुगलों एवं सिक्खों के बीच यह पहला युद्ध था। इसके बाद सरकारी नीतियों का खुलेआम विरोध होने लगा और सिक्खों का हौसला कई गुना बढ़ गया। उन्हें विश्वास हो गया कि सच्चाई की जीत होती है तथा शाही फौजों को हराया जा सकता है।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा लड़े गए दूसरे युद्ध का वर्णन इस प्रकार है कि भगवान दास, जो उस समय श्री हरिगोबिंदपुर का मालगुजार था, सिक्खों के साथ हुए एक झगड़े के दौरान मारा गया। उसके पुत्र रत्न चंद ने जलंधर के फौजदार अब्दुल्ला खान को एक झूठा संदेश भिजवा दिया कि गुरु जी ने मेरे पिता भगवान दास को मरवा दिया है। उनकी बढ़ रही ताकत को रोकना जरूरी है।

गुस्से में आकर अब्दुल्ला खान ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के विरुद्ध फौज तैनात कर दी और खुद ही शर्त पेश कर दी कि या क्षेत्र छोड़ दीजिए या फिर युद्ध के लिए तैयार हो जाएं। गुरु जी ने उसकी धमकी का विरोध करते हुए इलाका छोड़ने से स्पष्ट मना कर दिया। फिर क्या था! युद्ध शुरू हो गया। रत्न चंद और अब्दुल्ला खान की संयुक्त सेना का सिक्खों ने डटकर मुकाबला किया। बाबा गुरदित्ता जी ने भी तेग के जौहर दिखाए। इस युद्ध में रत्न चंद व अब्दुल्ला खान दोनों मारे गए। यह युद्ध संवत् १६८७ (सन् १६३० ई.) में लड़ा गया।

अब अब्दुल्ला खान के बेटे ने बादशाह शाहजहां के पास फरियाद की कि गुरु जी के विरुद्ध युद्ध हेतु सेना भेजी जाए। बादशाह ने उस फरियाद को यह कहते हुए ठुकरा दिया कि तुम्हारे वालिद अब्दुल्ला खान ने बेवजह की लड़ाई लड़ी है। उसने तो शाही दरबार की इजाज़त भी जरूरी नहीं समझी। शाहजहां ने कोई भी मुआविज़ा देने से भी इनकार कर दिया, उल्टा अब्दुल्ला खान की सारी जायदाद जब्त कर ली। इस युद्ध से सिक्खों में और भी जोश व उत्साह भर गया। अनेक युवकों ने अपना सर्वस्व गुरु जी के चरणों में अर्पित कर दिया। सिक्ख धर्म और अधिक मजबूत हुआ।

गुरु जी ने श्री हरिगोबिंदपुर के युद्ध के बाद पुन: सिक्खी के प्रचार की ओर ध्यान देना शुरू कर दिया। उस वर्ष अर्थात् सन् १६३१ ई. में उन्हें बाबा बुड्ढा जी की खराब सेहत के बारे में पता चला। वे स्वयं रमदास पहुंचे। बाबा जी अकाल प्रस्थान कर गए। वहीं गुरु जी ने अपने हाथों से बाबा बुड्ढा जी का अंतिम संस्कार किया। बाबा जी ने श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को गुरुआई सौंपे जाने के अवसर पर अपने हाथों से सभी रस्में

निभाई थीं। बाबा जी भी अपने आदर्श जीवन एवं उच्च आचरण द्वारा सिक्खी के प्रचार के काम में जुटे हुए थे।

काबुल से आए एक मसंद साधु ने गुरु जी को बताया कि वह उनको भेंट-स्वरूप देने हेतु दो घोड़े ला रहा था कि लाहौर के नवाब अनायत उल्ला खान के आदेश पर फौजदार लल्ला बेग ने वे छीन लिए हैं। भाई बिधी चंद ने यह काम स्वयं संभाला और वे दोनों घोड़े वापिस ले आए। लल्ला बेग तथा जलंघर के फौजदार कमर बेग ने इसे अपना अपमान समझा। उन्होंने एक विशाल सेना के साथ गुरु जी पर धावा बोल दिया। उन दिनों गुरु जी मालवा क्षेत्र में महिराज के आस-पास प्रचार कर रहे थे। घमासान युद्ध हुआ। एक अनुमान के अनुसार इस युद्ध में १२०० से अधिक सिक्ख शहीद हुए। लल्ला बेग और कमर बेग इस युद्ध में मारे गए। उस क्षेत्र के राय जोधे ने गुरु जी की मदद की। गुरु जी ने युद्ध में मिली विजय के बाद वहां पर एक सरोवर (ताल) बनवाया। उसे 'गुरुसर' नाम दिया गया। यह युद्ध संवत् १६८८ (सन् १६३१) में हुआ।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा लड़े गए चौथे युद्ध का भी ऐतिहासिक तथा धार्मिक महत्त्व बहुत ज्यादा है। यह युद्ध सन् १६३४ ई. में हुआ था। बात यूं है कि गुरु जी की सेना में पैंदे खान नाम का एक पठान था। वह षड्यंत्रकारी था। वह दिल्ली व लाहौर के हाकिमों को लिख चुका था कि यदि उसकी मदद की जाए तो वह गुरु जी का नामो-निशान मिटा सकता है। उसने गुरु जी के आदेशों का कई बार पालन भी नहीं किया था। गुरु जी ने पैंदे खान को अपनी सेना में से बाहर निकाल दिया।

पैंदे खान ने मुखलिस खान के भाई काले खान को गुरु जी के विरुद्ध हमला करने के लिए उकसाया और स्वयं पूरी मदद देने का आश्वासन दिया। जलंधर के फौजदार कुतुब खान ने भी साथ दिया। उन तीनों ने मिलकर गुरु जी के ठिकाने करतारपुर (जिला जलंधर) को अपने घेरे में ले लिया। बाबा गुरदित्ता जी व भाई बिधी चंद जी के नेतृत्त्व में सिक्ख सेनाओं ने डटकर मुकाबला किया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के छोटे सुपुत्र तेरह वर्षीय बाबा तिआग मल्ल जी ने भी वीरतापूर्वक तेग चलाई और 'तेग बहादर' नया नाम गुरु-पिता से प्राप्त किया।

पैंदे खान ने घमंड में आकर सीधे तौर पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को चुनौती दे डाली। आमने-सामने की लड़ाई में उसने गुस्से में लगातार तीन हमले किए। गुरु जी ने तीनों हमलों को नाकाम कर दिया। फिर गुरु जी ने सधे हाथों से सिर्फ एक हमला किया और पैंदे खान का सिर चीरकर रख दिया। पैंदे खान उनके चरणों में गिर गया। गुरु जी ने उसका अंतिम समय निकट आया देख, उसे कलमा पढ़ने हेतु कहा। उसके दोनों हाथ जुड़ गए और उसने कहा, ''गुरु जी आपकी तेग ही मेरे लिए कलमा है।''

गुरु जी ने मर रहे पैंदे खान को अपनी ढाल द्वारा छांव प्रदान की। काले खान ने भी दम तोड़ दिया। उनकी पूरी सेना में सनसनी और घबराहट फैल

गई। पूरी सेना मैदान-ए-जंग से भाग खड़ी हुई। इस युद्ध में भी गुरु जी को संपूर्ण विजय प्राप्त हुई। यह युद्ध संवत् १६९१ (सन् १६३४) में हुआ।

अब शाही सेना के दांत खट्टे हो गए थे तथा उसकी ओर से आक्रमण का कोई खतरा नहीं था। गुरु जी ने दूर कीरतपुर साहिब में ठिकाना बनाना उचित समझा। शाही सेना के हुक्मरान अपनी गलती का एहसास कर रहे थे। सच्चाई, सच्चे उसूलों, उच्च आदर्शों, दृढ़ निश्चय, नेकी और सत्य-धर्म की जीत हुई। झूठ, दंभ, घमंड, अन्याय और अधर्म का नाश हुआ। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पौत्र साहिब-ए-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी अत्याचार, अन्याय, कट्टरवाद और अधर्म के विरुद्ध ऐसी तेग चलाई, ऐसे तीर चलाए कि उन्होंने भी अद्वितीय व उच्च कोटि का इतिहास रच डाला।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा लड़े गए चारों युद्धों का बहुत ज्यादा ऐतिहासिक व धार्मिक महत्त्व है। जब हद से ज्यादा अत्याचार, जब्र बढ़ जाए और शासन निरंकुश, क्रूर, अन्यायी बन जाए, तब हथियार उठाने ही पड़ते हैं, जूझना ही पड़ता है और विद्रोह भी करना पड़ता है। देश के मौजूद हालात भी अच्छे नहीं कहे जा सकते। ऐसे में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा लड़े गए युद्धों से, उनके फलसफे से, आदर्शों एवं उसूलों से प्रेरणा व आगवानी ली जा सकती है।

सुख-शांति के दाता : श्री गुरु अरजन देव जी

गुरु रामदास जी और माता भानी जी के सुपुत्र प्यारे।
सुख-शांति के दाता, अमन के रक्षक, तपती धरा पर पधारे।
'दोहिता, बाणी का बोहिथा!' नाना गुरु अमरदास जी ने फरमाया।
गुरु अरजन देव जी ने इस कथन को पूर्ण कर दिखलाया।
'गुरु ग्रंथ' का संपादन किया और अमृत तुल्य बाणी-वचन उचारे।
सुख-शांति के दाता, अमन के रक्षक, तपती धरा पर पधारे।

सद्भावना, भाईचारा, प्रेम-प्यार और समानता की अमर ज्योति जलाई।
श्री हरिमंदर साहिब की नींव, साँई मियां मीर जी के हाथों रखवाई।
चार दरवाजे रखकर सर्वसांझे, धर्म-स्थान के करवाए दर्शन-दीदारे।
सुख-शांति के दाता, अमन के रक्षक, तपती धरा पर पधारे।

नम्रता के पुंज, महान कीर्तनकार, भूलो को माफ करने वाले करतार।
कहा संगत से स्वयं करो कीर्तन, जब 'सत्ता-बलवंड' ने किया इनकार।

कहा, इस तरह करो कीर्तन कि तुम्हारा, श्वास-श्वास प्रभु-नाम पुकारे !
सुख-शांति के दाता, अमन के रक्षक, तपती धरा पर पधारे।

श्री हरिमंदर साहिब, तरनतारन, छेहरटा, करतारपुर नगरी बसाई।
दीवानखाना और करतारपुर का शीशमहल, बनाने में कला दिखलाई।
'छेहरटा' सहित कई कुएँ खुदवाए, प्रस्तुत किए कई बागों के नज़ारे।
सुख-शांति के दाता, अमन के रक्षक, तपती धरा पर पधारे।

पिंगलों व कुष्ठ रोगियों के निवास हेतु, उन्होंने पिंगलाघर बनवाया।
अकाल के समय भूखे लोगों के लिए, जगह-जगह लंगर खुलवाया।
दीन-दुखी, असहाय, निराश्रित प्रसन्न थे, गुरु जी के अति दुलारे।
सुख-शांति के दाता, अमन के रक्षक, तपती धरा पर पधारे।

जब्रो-जुल्म का मुकाबला गुरु जी ने, दिलेरी व सब्र से कर दिखलाया।
सहजता, संयम, निडरता, सहिष्णुता को, चरम सीमा पर पहुंचाया।
अधर्म, जुल्म सब हार गया, मगर गुरु जी कदापि न हारे।
सुख-शांति के दाता, अमन के रक्षक, तपती धरा पर पधारे।

तपती तवी पर बैठा कर गुरु जी के, शीश पर गर्म रेत जालिमों ने डाली।
यातनाएं दे-देकर जालिमों ने उनकी देह, फिर गर्म पानी में उबाली।
''तेरा कीआ मीठा लागै'' उच्चरित कर, गुरु जी ने कष्ट सहारे।
सुख-शांति के दाता, अमन के रक्षक, तपती धरा पर पधारे।

गुरु अरजन देव जी की शहादत, बहुत लासानी, अद्वितीय, बहुत महान है।
श्रद्धापूर्वक होता रहेगा इस शहादत का वर्णन, जब तक जहान है।
फिर गर्भ-योनि में न आए वह, जो गुरु अरजन देव का नाम उच्चारे।
सुख-शांति के दाता, अमन के रक्षक, तपती धरा पर पधारे।
गुरु रामदास जी और माता भानी जी के सुपुत्र प्यारे।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी : प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर

*-डॉ. दीपशिखा**

सिक्ख धार्मिक परम्परा में मानव जीवन से सम्बन्धित अनेक ऐसे तथ्यों, विचारों, सिद्धान्तों एवं मूल्यों का वर्णन किया गया है, जिनका अनुकरण मानवीय जीवन को स्वस्थ, सकारात्मक दृष्टि एवं सुखी जीवन प्रदान करता है। देखा जाए तो गुरमति दर्शन मानव के प्रत्येक क्षण से सम्बन्धित होता हुआ उसे पल-पल सजग करता है कि मानव के लिए क्या त्याज्य है, क्या ग्राह्य है, उसका नैतिक कर्त्तव्य क्या है, उसका धर्म क्या है, धर्म का मर्म क्या है, उसका अधिकार क्या है, उसका दायित्व क्या है। ऐसे अनेक प्रश्नों का उत्तर गुरमति दर्शन का मूल रहा है। इन प्रश्नों के उत्तर की जिज्ञासा जिस मानव में उत्पन्न होती है, वह व्यक्ति सामान्य नहीं, अपितु आध्यात्मिक पथ का पथिक होता है, उसका समस्त जीवन परहित के लिए समर्पित होता है। वह अपने सामाजिक एवं पारिवारिक दायित्व का निर्वाह भी प्रवृत्ति एवं निवृत्ति की भूमि पर ही करता है।

''निवृत्ति का अर्थ है— अनिच्छा, विराम, उपरति, अरुचि, उदासीनता, वैराग्य, शान्ति, कैवल्य आदि और प्रवृत्ति का अर्थ है— उदय, रुचि, झुकाव, रुझान, प्रयोग, नियोजन, सक्रिय सांसारिक जीवन, सांसारिक जीवन में आनन्द, अनुरक्ति, अनवरत धैर्य, सार्थकता, क्रियाशीलता, भाग्य, नियति आदि।''

(पारिजात कोश, पृष्ठ ४६९, ६०७)

प्रवृत्ति का सामान्य अर्थ है— मानव की इच्छा या पदार्थ-प्राप्ति या ग्रहण करने की उत्कट इच्छा, ग्रहण करने पर मानव की सामान्य इच्छाओं के साथ-साथ ऐसी प्रवृत्ति या रुझान, जो सांसारिक विषयों के प्रति अति जागरूक होती है। प्रवृत्ति के स्वरूप के प्रति मानव को सजग करना प्रत्येक धर्म का, दर्शन का उद्देश्य रहा है। इन धर्म-सिद्धान्तों का अनुकरणीय मानव, सांसारिक विषयों के प्रति उत्पन्न प्रवृत्ति के दौरान यदि मन में धैर्य एवं नियति को स्वीकार करते हुए जीवन के कर्म-क्षेत्र में सक्रिय रहता है तो निश्चय ही वह प्रवृत्ति से निवृत्ति के पथ पर अग्रसर होता है। प्रवृत्ति से निवृत्ति का अर्थ यह नहीं कि मन में कोई इच्छा ही न रहे, क्योंकि यदि इच्छा नहीं होगी, तो कर्म नहीं होगा और कर्म के अभाव में जीवन निष्क्रिय हो जाएगा। आवश्यकता है प्रवृत्ति एवं निवृत्ति के वास्तविक स्वरूप को समझने की। धार्मिक एवं दार्शनिक परम्परा में मानव को सदैव सात्विक प्रवृत्ति धारण करने का उपदेश दिया गया है। यही प्रवृत्ति निवृत्ति की नींव बनती है। ऐसी प्रवृत्ति का धारक मानव सहज ही कैवल्य रूपी फल को प्राप्त करता है।

**जगत गुरु नानक देव पंजाब स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी, पटियाला— १४७००१,*

गुरबाणी-उपदेश है :

गुरमुखि परविरति नरविरति पछाणै ॥

(पन्ना ९४१)

अर्थात् गुरु-उपदेश का अनुसरण करने वाला मानव जान जाता है कि त्याज्य एवं ग्राह्य पदार्थ कौन-से हैं। फिर उसकी बुद्धि, उसकी चेतना कभी भी मिथ्या सांसारिक लोभ में आसक्त नहीं होती।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब के अनुसार प्रवृत्ति-निवृत्ति के वास्तविक स्वरूप का ज्ञाता संसार में रहता हुआ भी उससे निर्लिप्त रहता है एवं जल में जल मिलने की तरह प्रभु में लीन हो जाता है :

आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥. . .
नानक लीन भइओ गोबिंद
सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥ (पन्ना ६३३)

किन्तु जिस मानव की रुचि केवल विषय-भोग में आसक्त रहती है, जो केवल भोगवादी और इन्द्रियलोलुप व्यक्ति होते हैं, उन्हें आसुरी स्वभाव वाला कहा जाता है। ऐसे व्यक्ति प्रवृत्ति-निवृत्ति, इन दोनों मार्गों को नहीं जानते। उनके लिए प्रवृत्ति एवं निवृत्ति का कोई अर्थ नहीं होता।

'महान कोश' में प्रवृत्ति-निवृत्ति की व्याख्या करते हुए भाई काह्न सिंघ नाभा का कथन है— ''मन की इच्छानुसार व्यवहार करना ही प्रवृत्ति है तथा उपरामता, उदासीनता, विरक्तता, संसार की ओर से मन का उपराम होने का भाव ही निवृत्ति है।'' (पृष्ठ ७१३, ७१६, ७४९) यहां संसार की तरफ से उपराम होने का मूल अर्थ कर्त्तापन-भाव के प्रति उदासीनता का जागृत होना है।

प्रवृत्ति मार्ग के अनुगामी मानव को इस मार्ग के यथार्थ का बोध करवाते हुए गुरु पातशाह फरमान करते हैं :

परविरति मारगु जेता किछु होई ऐ
तेता लोग पचारा ॥ (पन्ना १२०५)

अर्थात् सांसारिक विषयों में उलझाए रखने वाला जो भी मार्ग है, वह केवल लोगों में अपनी प्रतिष्ठा अर्थात् मिथ्या इज्ज़त बनाए रखने वाला मार्ग है। हे मानव! तू अपना मन परमात्मा के नाम-सिमरन की ओर आसक्त कर, उसकी भक्ति में प्रवृत्त हो, यही मुक्ति का मार्ग है, यही शाश्वत है :

प्रविरति मारगं वरतंति बिनासनं ॥
गोबिंद भजन साध संगेण
असथिरं नानक भगवंत भजनासनं ॥

(पन्ना १३५५)

जगत् के यथार्थ का वर्णन करते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने निवृत्ति पथ पर बढ़ने का जो संदेश दिया है वह मानवता के हित के लिए है। जो मनुष्य प्रवृत्ति पथ का अनुगमन धर्म एवं कर्त्तव्य की दृष्टि से करता है, वह सदैव ही निवृत्ति पथ का पथिक होता है। ऐसे पथिक का मन इच्छाओं के मार्ग पर चलते हुए भी लोभ, मोह, माया आदि के बंधन में नहीं बंधता। वह इस देह के रहते हुए भी जीवन-मुक्त अवस्था को प्राप्त करता है :

हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥
कहु नानक सुनि रे मना
मुकति ताहि तै जानि ॥१५ ॥
भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥

कहु नानक सुनि रे मना
गिआनी ताहि बखानि ॥१६ ॥ (पन्ना १४२७)

गुरु जी कहते हैं कि मानव, तेरे मन में अभिमान के प्रति निवृत्ति और प्रभु-सिमरन की ही प्रवृत्ति होनी चाहिए :

— जा ते दुरमति सगल बिनासै
राम भगति मनु भीजै ॥ (पन्ना ९०२)
— साधो मन का मानु तिआगउ ॥ (पन्ना २१९)

अहम् का त्याग एवं सांसारिक विषयों के प्रति उपरामता अर्थात् नाम-सिमरन ही मोक्ष की प्राप्ति का मूल साधन है। मनुष्य-मन के शुभ गुणों में स्थिर होते ही अर्थात् कुवृत्तियों से परे होते ही जीवात्मा सर्वव्यापी परमात्मा के स्वरूप में स्थित हो जाती है।

सिक्ख धर्म में गृहस्थ जीवन को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। गुरु जी ने तो गृहस्थ जीवन को ही मोक्ष-प्राप्ति का आधार मानते हुए कहा है कि गृहस्थ जीवन के त्याग की अपेक्षा हृदय में धैर्य, संयम एवं कर्त्तव्य की भावना रखते हुए अपने कर्त्तव्यों का पालन करना ही मानव का पहला धर्म है। गृहस्थ धर्म निभाने वाला सामाजिक मानव ही व्यवस्था को समझता है, सही मायने में संघर्षी होता है, शुभ एवं अशुभ के मर्म को समझता है। सन्यास की अपेक्षा सिक्ख धर्म में गृहस्थ जीवन को पवित्र जीवन की संज्ञा दी गई है। गृहस्थ जीवन ही प्रवृत्ति-मार्ग, कर्म-मार्ग एवं प्रेय-मार्ग नाम से जाना जाता है। इसी मार्ग पर चलते हुए मानव निवृत्ति और उसके शुभ फल को प्राप्त करता है। हृदय में निवृत्ति-भाव के उदित होते ही मानव निर्भय, मुक्त और आत्मा में रमण करने वाला, तटस्थ एवं समभाव होता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने ऐसे समभाव, तटस्थ मानव को योगी, ज्ञानी एवं गुरमुख की संज्ञा दी है :

हरख सोग ते रहै अतीता जोगी ताहि बखानो ॥
(पन्ना ६८५)

इसके विपरीत सामान्य व्यक्ति की प्रवृत्ति सदैव ही हर्ष, शोक आदि भावों के अनुभव में डूबी रहती है। ऐसा मानव अपनी प्रवृत्ति के अनुरूप ही व्यवहार करता है।

ऐसा मानव पुत्र, मित्र और माया के मोह में स्वयं को बांधे रखता है :

पूत मीत माइआ ममता सिउ
इह बिधि आपु बंधावै ॥ (पन्ना २१९)

गुरु जी फरमान करते हैं कि इनकी चिंता मत कर। यह बन्धन का कारण है। यह सब माया का प्रभाव है :

नह चिंता बनिता सुत मीतह
प्रविरति माइआ सनबंधनह ॥ (पन्ना १३५५)

गुरु जी समझाते हैं कि जब मानव गृहस्थ जीवन, जो कि प्रवृत्तियों का आधार, भण्डार है, का भोग केवल मानवीय जीवन के मूल धर्म को निभाते हुए करता है, वहीं से जीवन में निवृत्ति की प्रारम्भता हो जाती है :

जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइओ उदासु ॥
कहु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु ॥
(पन्ना १४२७)

स्पष्ट है कि सिक्ख धर्म न तो पूर्णत: संसार के प्रति आसक्ति का समर्थक है और न ही विरक्ति का।

आज आधुनिकता के दौर में केवल प्रवृत्ति का ही अस्तित्व रह गया है, निवृत्ति का अंश-

मात्र भी कहीं परिलक्षित नहीं होता। यदि मानव सिक्ख धर्म में वर्णित प्रवृत्ति एवं निवृत्ति के संकल्प को समझ लेता है तो जीवन में व्याप्त सभी समस्याओं एवं विसंगतियों का समाधान सम्भव है। गुरु जी ने बहुत ही सुन्दर दृष्टान्त अपनी बाणी में देते हुए प्रवृत्ति एवं निवृत्ति सम्बन्धी पक्षों को मानव-कल्याण हेतु प्रस्तुत किया है। प्रवृत्ति एवं निवृत्ति का यह जीवन-दर्शन मानव के भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन में सामंजस्य उत्पन्न कर उसे असीम आत्मिक शान्ति एवं आनन्द प्रदान करता है। गुरु जी के अनुसार हेय प्रवृत्तियों का त्याग ही निवृत्ति का उदय है :

जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग॥...
कहु नानक वहु मुकति नरु इह मन साची मानु॥
(पन्ना १४२७)

गुरु जी मानव को समझाते हैं कि स्वयं का चिन्तन किए बिना विषयों के प्रति उपरामता सम्भव ही नहीं है। हे मानव! तू अपने अन्तर्मन, अपनी आत्मा को पहचान, क्योंकि स्वयं को परखने से सभी भ्रमों का नाश हो जाता है :

जन नानक बिनु आपा चीनै
मिटै न भ्रम की काई॥ (पन्ना ६८४)

गुरु जी ने प्रवृत्ति-भाव के उद्दीप्त होने का सबसे अहम कारण मन की चंचलता को माना है, क्योंकि मन का सभी दिशाओं में भ्रमण करते रहने के कारण उसमें विकार आदि भावों का आना-जाना लगा रहता है, जिस कारण तीर्थ-सेवन आदि सभी पुण्य कर्म उसी तरह निष्फल हो जाते हैं, जैसे हाथी का स्नान व्यर्थ होता है :

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु॥
नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु॥
(पन्ना १४२८)

प्रभु के नाम-सिमरन में स्थिर होते ही मन पूर्णत: शान्त हो जाता है :

चंचल मनु दह दिसि कउ धावत
अचल जाहि ठहरानो॥ (पन्ना ६८५)

ऐसा शान्त मन कर्म में अकर्म की और विषयों के संग में असंग की भावना रखता हुआ अपना प्रत्येक क्षण व्यतीत करता है। ऐसी शांत और आनन्दमयी स्थिति में प्रत्येक प्रवृत्ति ही निवृत्ति अर्थात् निष्काम भावमयी हो जाती है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने स्वयं असंग-भाव रखते हुए त्याग एवं वैराग्यपूर्ण जीवन व्यतीत किया है। उनके मन में कभी भी किसी प्रकार का मोह उत्पन्न नहीं हुआ। वे लंबे समय तक नाम-सिमरन करते रहते। अधिकतर समय वे चिंतन, आराधन में लीन रहते। परिवार का निर्वाह श्री हरिगोबिंदपुर से प्राप्त आमदनी से होता, किन्तु आप उस आमदनी का अधिकतर भाग जरूरतमंदों की सहायता पर खर्च कर देते। (तेग बहादर : धर्म ध्वज, डॉ. करमजीत सिंघ, पृष्ठ १६)

गुरु जी के अनुसार काम, क्रोधादि पंच विकारों के प्रति निवृत्ति का भाव संसार में रहते हुए भी त्याग-मार्ग का अनुगमन है अर्थात् भोग-वृत्ति का मूल से त्याग ही निवृत्ति है। सांसारिक विषयों एवं भोगों के प्रति त्याग एवं वैराग्य की प्रवृत्ति ही वास्तव में निवृत्ति पथ है :

तजि अभिमान मोह माइआ फुनि
भजन राम चितु लावउ॥ (पन्ना २१९)

यहां त्याग का अर्थ सम्पूर्ण इच्छाओं का त्याग नहीं अपितु इच्छाओं अर्थात् प्रवृत्तियों को वश में करके समाज, देश, राष्ट्र हित प्रयोग में लाना, उनको अपने अनुसार चलाना ही निवृत्ति का चरम है।

जैसे कि मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह सुख के लिए तो प्रयास करता है परन्तु दुखों के मूल कारण (इच्छाओं की अतृप्ति) की निवृत्ति का कोई उपाय नहीं करता। उसका यही कर्म-भाव, विषयों की ओर आसक्ति ही नित्य नयी प्रवृत्ति जागृत करती है :

जतन बहुत सुख के कीए
दुख को कीओ न कोइ॥ *(पन्ना १४२८)*

हे मानव! तू सारी चिन्ता अर्थात् सुख-दुख, मोह-माया, मान-अपमान को भूलकर प्रभु का स्मरण कर! तेरे जीवन के सभी कार्य पूर्ण होंगे अर्थात् तेरी प्रत्येक प्रवृत्ति में उसकी बख्शिश होगी :

कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम॥
(पन्ना १४२८)

हे अज्ञानी मनुष्य! तू अपने मानव जीवन की सार्थकता को समझ, अपने मन के वास्तविक स्वरूप को पहचान तथा अपनी बाणी और रसना द्वारा प्रभु का गुणगान करते हुए प्रवृत्ति से निवृत्ति के रथ पर सवार होकर इस भवसागर को पार करते हुए जीवन के मूल लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर :

नानक कहत चेत चिंतामनि तै भी उतरहि पारा॥
(पन्ना ६३२)

मन सहित इन्द्रियों की स्थिरता बुद्धि को परमेश्वर में स्थिर कर देती है। ऐसी ब्रह्ममयी स्थिति में मानव प्रमाद रहित अर्थात् प्रवृत्तियों के प्रभाव से निर्लेप निवृत्ति का साधक बन अन्तर्मन में परमात्मा का साक्षात्कार करता है :

सरब निवासी सदा अलेपा
तोही संगि समाई॥१॥रहाउ॥
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है
मुकर माहि जैसे छाई॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि
घट ही खोजहु भाई॥१॥ *(पन्ना ६८४)*

स्पष्ट है कि इच्छाओं की उत्पत्ति अर्थात् प्रवृत्तियों का उत्तरोत्तर बढ़ते रहना, मन की चंचलता, सांसारिक विषयों के प्रति आसक्ति आदि अनेक ऐसे कारण हैं, जो मानव को उसके मूल लक्ष्य निवृत्ति पथ (मोक्ष) से दूर कर देते हैं, किन्तु जब मानव-मन में प्रभु-भक्ति स्थिर हो जाती है तब आत्मिक एवं भौतिक पक्ष से वह इतना सबल हो जाता है कि सभी बन्धन टूट जाते हैं अर्थात् सांसारिक इच्छाएं, प्रवृत्तियां उससे पराजित हो जाती हैं और मुक्ति के सभी साधन उसके लिए सहज ही उपलब्ध होने लगते हैं, सम्भव हो जाते हैं :

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ॥
(पन्ना १४२९)

भक्त कबीर जी की बाणी के पावन संदेश

*-डॉ. मनजीत कौर**

सत्य को अभिव्यक्त करने के लिए काव्य-विधा एक स्वाभाविक साधन मानी गई है। आध्यात्मिक अनुभूति की अभिव्यक्ति केवल भाषा से ही सम्भव नहीं है, अपितु साधक जब प्रभु से एकाकार होकर बाणी का प्रयोग करता है तो काव्य सरिता स्वयं फूट निकलती है। डॉ. महीप सिंघ के चिन्तनानुसार, आत्मदृष्टा की अनुभूति यदि व्यक्त होना चाहे तो वह संगीत की ध्वनि से गुंजित हो उठने वाले काव्य के रूप में ही प्रकट होती है, इसलिए संस्कृत आचार्यों ने काव्य के आनंद को ब्रह्म आनंद तुल्य (ब्रह्मानंद सहोदर) कहकर स्वीकार किया है। इसी कथन की अभिव्यक्ति हम भक्त कबीर जी की बाणी में स्पष्ट तौर पर देखते हैं जब भक्त जी पुकार उठते हैं :

लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रहम बीचार॥

(पन्ना ३३५)

निर्गुण-निराकार ईश्वर के उपासक भक्त कबीर जी का स्पष्ट संदेश था कि विविध पुस्तकों के पठन-पाठन से कोई पण्डित या ज्ञानी नहीं हो जाता। वस्तुतः पण्डित या ज्ञानी वही है जिसके हृदय में प्रेम की अनुभूति है और जो सर्वत्र में परमेश्वर के दर्शन करे।

आओ, श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित भक्त कबीर जी की बाणी के आलोक में उनके मुख्य उपदेशों को पढ़-सुन कर अपना जीवन सार्थक करने का प्रयास करें :—

ईश्वर की सर्वव्यापकता : भक्त कबीर जी ईश्वर का कण-कण में निवास मानते हुए समय के प्रमुख हिंदू और मुसलमान दोनों लोगों को ही समझाते हुए प्रश्न करते हैं कि अगर खुदा केवल काबा में ही निवास करता है तो बाकी दुनिया किसके आसरे है? इसी प्रकार हिंदू धर्म के अनुसार ईश्वर का निवास केवल मूर्ति में ही माना जाता है। इस मान्यता के अधीन तो दोनों ने ही मूल तत्व को नहीं पहचाना अर्थात् दोनों ही भ्रम में हैं :

अलहु एकु मसीति बसतु है
अवरु मुलखु किसु केरा॥
हिंदू मूरति नाम निवासी दुह महि ततु न हेरा॥

(पन्ना १३४९)

अहं-विसर्जन : अहं (हउमै) को गुरबाणी में दीर्घ रोग माना गया है और इससे मुक्ति गुरु-कृपा से ही संभव बताई गई है। अहं के वशीभूत मनुष्य मेरी-मेरी करता रहता है। भक्त कबीर जी के चिन्तनानुसार जब तक मनुष्य मेरी-मेरी करता है तब तक इसका जन्म-फलित वाला एक भी कार्य सिद्ध नहीं होता और जब इसकी मैं-मेरी मिट

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

जाती है तब ईश्वर इसके समस्त जीवन-कार्य स्वयं ही सिद्ध कर देता है :

जब लगु मेरी मेरी करै ॥
तब लगु काजु एकु नही सरै ॥
जब मेरी मेरी मिटि जाइ ॥
तब प्रभ काजु सवारहि आइ ॥ (पन्ना ११६०)

यही नहीं, भक्त कबीर जी तो यहां तक समझाते हैं कि जो मनुष्य मन-वचन-कर्म द्वारा स्वयं को बड़ा और दूसरों को छोटा समझते हैं, ऐसे अहंकारी मनुष्यों को मैंने नरक की आग में जलते देखा है :

आपस कउ दीरघु करि जानै
अउरन कउ लग मात ॥
मनसा बाचा करमना मै देखे दोजक जात ॥
(पन्ना ११०५)

प्राणी को हर तरह के अहंकार से बचने का पावन संदेश देते हुए भक्त कबीर जी का कथन है कि अगर तू धनवान है तो इस धन का अहंकार मत करना और न ही कभी किसी गरीब पर हंसना, क्योंकि अभी तो तेरी जीवन-नाव संसार समुद्र में है, न जाने कब क्या हो जाये :

कबीर गरबु न कीजीऐ रंकु न हसीऐ कोइ ॥
अजहु सु नाउ समुंद्र महि
किआ जानउ किआ होइ ॥ (पन्ना १३६६)

वास्तव में इंसान किस चीज का गुमान नहीं करता! रूप, धन, पद, विद्या, ज्ञान आदि अनेक उदाहरण देकर भक्त कबीर जी ने बड़ा सुन्दर समझाया है और हिदायत की है कि अहंकार बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों के अंत का कारण बना और अहंकार ने सब जीवों के आत्मिक जीवन का विनाश किया। केवल माया का त्याग करने से भी क्या होगा, अगर अहंकार रूपी विकार का त्याग न किया :

कबीर माइआ तजी त किआ
भइआ जउ मानु तजिआ नही जाइ ॥
मान मुनी मुनिवर गले मानु सभै कउ खाइ ॥
(पन्ना १३७२)

अहंकार का त्याग करना कठिन साधना है। जिसने इसका त्याग कर लिया, वह ईश्वर का ही रूप हो जाता है।

आत्म-निरीक्षण : दूसरों के दोष ढूंढना, आलोचना करना इंसान की फितरत है। भक्त कबीर जी का फरमान है कि जिस किसी को भी यह समझ आ गई है कि मैं ही सबसे बुरा हूं और मुझे छोड़ कर बाकी सब अच्छे हैं, वही मनुष्य ही हमारा मित्र है :

कबीर सभ ते हम बुरे
हम तजि भलो सभु कोइ ॥
जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ ॥
(पन्ना १३६४)

संगति का प्रभाव : लोक-प्रचलित कहावत है— 'जैसी संगत, वैसी रंगत।' भक्त कबीर जी ने इस सन्दर्भ में बड़ा सुंदर समझाया है :

जो जैसी संगति मिलै सो तैसो फलु खाइ ॥
(पन्ना १३६९)

चंदन का पौधा चाहे ढाक-प्लास आदि वृक्षों

से घिरा रहता है, फिर भी व्यर्थ-से ढाक-प्लास के वृक्ष चंदन के पौधे की समीपता पाकर चंदन जैसे ही सुगन्धित हो जाते हैं। इसके विपरीत कुसंगत (बुरी संगत) के दुष्परिणाम से अवगत करवाते हुए भक्त कबीर जी समझाते हैं कि जिस प्रकार केले के पेड़ के निकट खड़ी बेरी जब हवा के कारण झूलती है तो अपने कांटों द्वारा अपने निकटवर्ती खड़े केले के पेड़ के पत्तों को चीर देती है। ठीक इसी प्रकार बुरी संगत वाले अपनी विकृत वृत्ति के कारण भले इंसान को भी तबाह कर देते हैं :

कबीर मारी मरउ कुसंग की
केले निकटि जु बेरि ॥
उह झूलै उह चीरीऐ साकत संगु न हेरि ॥

(पन्ना १३६९)

भक्त कबीर जी की बाणी का अनमोल संदेश है कि संत-जनों की संगति करनी चाहिए, जो अंत समय तक साथ निभाती है। कभी भी दुर्जन की संगति नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इसके कारण व्यक्ति की आत्मिक मृत्यु हो जाती है :

कबीर संगति करीऐ साध की
अंति करै निरबाहु ॥
साकत संगु न कीजीऐ जा ते होइ बिनाहु ॥

(पन्ना १३६९)

भक्त कबीर जी मनमुख की संगति त्याग कर गुरमुख की संगति करने की प्रेरणा देते हैं।

जात-पांत का भेदभाव : जातिवाद एक भयानक रोग है, जिसका विष समाज की वास्तविक प्रगति में बाधक है। प्रगतिशील दृष्टिकोण वाले समाज-सुधारक भक्त कबीर जी ने इस रोग का उन्मूलन करने का हर सम्भव प्रयास किया। जात-पांत और वर्ण-व्यवस्था पर करारी चोट करते हुए सख्त शब्दों में फरमान किया कि अगर ब्राह्मण अपने आप को अन्य से श्रेष्ठ या सर्वश्रेष्ठ समझता है तो उसे इस दुनिया में आने का मार्ग भी अन्य से भिन्न अपनाना चाहिए था :

जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥

(पन्ना ३२४)

सबकी उत्पत्ति एक ही नूर से बताते हुए बाकमाल उदारहण प्रस्तुत किया कि सारी खलकत में एक ही खुदा है, एक ही भगवान है। किसे बुरा कहोगे और किसे भला ?

अवलि अलह नूरु उपाइआ
कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ
कउन भले को मंदे ॥ *(पन्ना १३४९)*

अहिंसा : हिंसा को समस्त पाप-कर्मों का मूल माना गया है। भक्त कबीर जी की बाणी में अहिंसा धर्म-पालन के अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं, जिनमें हिंसा जैसे पाप-कर्म से बचने की प्रेरणा दी गई है। भक्त कबीर जी का समझाने का ढंग बड़ा अनोखा है। उनके शब्द तीर की तरह अंदर तक भेद जाते हैं। भक्त कबीर जी सवाल करते हैं कि अगर तू कहता है कि समस्त जीवों में खुदा का निवास है तो (खुदा या भगवान को

प्रसन्न करने के लिए) मुर्गी को क्यों मारता है ? क्या उसमें खुदा नहीं है ?

जउ सभ महि एकु खुदाइ कहत
हउ तउ किउ मुरगी मारै ॥ (पन्ना १३५०)

यही नहीं, जो लोग जबरन जीव-हत्या करते हैं और फिर उसे कुर्बानी अर्थात् हलाल कह देते हैं, भक्त कबीर जी का प्रश्न है कि ऐसे लोगों का क्या हाल होगा, जब सब जीवों से प्यार करने वाला इन जीव-हत्या करने वालों से लेखा-जोखा मांगेगा ?

कबीर जीअ जु मारहि जोरु करि
कहते हहि जु हलालु ॥
दफतरु दई जब काढि है
होइगा कउनु हवालु ॥ (पन्ना १३७५)

कर्मकाण्डों का खंडन :— गुरबाणी में कर्मकाण्डों की तुलना बंजर भूमि से की गई है। जैसे बंजर भूमि में बोए गए बीज और उस पर की गई सारी मेहनत-मशक्कत व्यर्थ चली जाती है, ठीक उसी प्रकार रूढ़ियों और कर्मकाण्डों में मनुष्य का बेशकीमती जीवन बर्बाद हो जाता है। भक्त कबीर जी का कथन है कि मनुष्य धार्मिक कर्मकाण्ड करते-करते अहंकारी हो जाता है। कई लोग पत्थरों की पूजा करते हैं, लेकिन ईश्वर को तो भोले-भाव से भक्ति कर के सहजता से पाया जा सकता है :

करम करत बधे अहंमेव ॥
मिलि पाथर की करही सेव ॥ ३ ॥
कहु कबीर भगति करि पाइआ ॥
भोले भाइ मिले रघुराइआ ॥ (पन्ना ३२४)

भक्त कबीर जी के चिन्तनानुसार हिंदू मूर्ति-पूजा कर-कर के जीवन व्यर्थ कर रहे हैं और मुसलमान खुदा को काबा में ही उपस्थित जान कर पश्चिम की ओर शीश झुकाते हैं। हिंदू मुर्दे को जला देते हैं और मुसलमान धरती में दफना देते हैं। दोनों वर्गों के लोग भ्रमवश यही समझ लेते हैं कि मात्र इसी जीवन-संस्कार से मृतक को मोक्ष मिल जाएगा, जबकि जीवन-मोक्ष की प्राप्ति के लिए दोनों को ही वास्तविकता की समझ नहीं आई :

बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई ॥
ओइ ले जारे ओइ ले गाडे
तेरी गति दुहू न पाई ॥ (पन्ना ६५४)

भक्त कबीर जी तो यहां तक समझाते हैं कि हे मौलवी ! मस्जिद के मीनार पर क्यों चढ़ता है ? खुदा बहरा नहीं है। वह सबके दिल की जानता है। जिस खुदा के लिए तू ऊँची-ऊँची बांग दे रहा है वह तो तेरे हृदय में ही बसता है :

कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि
सांई न बहरा होइ ॥
जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ ॥
(पन्ना १३७४)

अपरिग्रह : धन-सम्पदा जीवन-यापन की आवश्यकता है। धन-संचय की धारणा बना कर उचित-अनुचित का विचार ही त्याग देना धर्म के विरुद्ध है। दैनिक आवश्यकाओं की पूर्ति तथा अतिथि-सत्कार हेतु जो जरूरी है, उतना तो अपने साँई (प्रभु) से मांगना जायज है। भक्त कबीर जी

अपनी रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करने हेतु सीधा-सीधा प्रभु से नि:संकोच याचना करते हैं :

भूखे भगति न कीजै ॥
यह माला अपनी लीजै ॥
हउ मांगउ संतन रेना ॥
मै नाही किसी का देना ॥. . .
दुइ सेर मांगउ चूना ॥
पाउ घीउ संगि लूना ॥
अध सेरु मांगउ दाले ॥
मो कउ दोनउ वखत जिवाले ॥. . .
कहि कबीर मनु मानिआ ॥
मनु मानिआ तउ हरि जानिआ ॥ (पन्ना ६५६)

भक्त कबीर जी ने माया के त्रिगुणी प्रभाव से बचने की हिदायत भी बाणी में बार-बार की है। उन्होंने ईश्वर-नाम तथा नेक कर्म रूपी धन संचय करने का पावन संदेश दिया है, जो जीव के लोक-परलोक में सहायक सिद्ध होता है।

निन्दा का त्याग : गुरबाणी में आत्मश्लाघा तथा परनिंदा दोनों ही कर्मों को त्यागने का संदेश दिया गया है। भक्त कबीर जी की विनम्रता की पराकाष्ठा देखिए, जहां प्रत्येक मानव-मन अपनी प्रशंसा चाहता है, वहीं भक्त कबीर जी अपनी निंदा करने वाले की प्रशंसा करते हैं :

निंदउ निंदउ मो कउ लोगु निंदउ ॥
निंदा जन कउ खरी पिआरी ॥
निंदा बापु निंदा महतारी ॥१ ॥ रहाउ ॥
निंदा होइ त बैकुंठि जाईऐ ॥
नामु पदारथु मनहि बसाईऐ ॥
रिदै सुध जउ निंदा होइ ॥
हमरे कपरे निंदकु धोइ ॥१ ॥. . .
निंदा हमरी प्रेम पिआरु ॥
निंदा हमरा करै उधारु ॥
जन कबीर कउ निंदा सारु ॥
निंदकु डूबा हम उतरे पारि ॥ (पन्ना ३३९)

व्यंग्यात्मक शैली में लिखित उपरोक्त शब्द में वास्तव में निंदा-कर्म से बचने की प्रेरणा दी गई है।

भक्त कबीर जी के चिन्तनानुसार जिसका मन अडोल नहीं, उसके लिए खुदा कहीं भी नहीं। अगर मन में संतोष नहीं तो तीर्थ-स्थानों पर जाने का कोई लाभ नहीं :

सेख सबूरी बाहरा किआ हज काबे जाइ ॥
कबीर जा की दिल साबति नही
ता कउ कहां खुदाइ ॥ (पन्ना १३७४)

भक्त कबीर जी ने समाज को आदर्श रूप प्रदान करने हेतु, उच्चतर मानव मूल्यों की स्थापना कर मानव धर्म को वास्तविक धर्म मानते हुए, व्यर्थ के कर्मकाण्डों की आलोचना करते हुए, जात-पांत की अनावश्यक दीवारों को धराशायी कर, अहिंसा धर्म का मनसा-वाचा-कर्मणा द्वारा पालन करते हुए आचरण की शुद्धता पर बल दिया। दया, क्षमा, संतोष, विनम्रता, शील, प्रेम आदि सत्कर्मों को करता हुआ मनुष्य सहजता से अपना इहलोक और परलोक संवार कर आवागमन के चक्र से मुक्ति पा सकता है।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की धर्म-निष्पक्षता

*-डॉ. जसबीर सिंघ**

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ऐसे सिंघ थे जिन्होंने अठारहवीं सदी में ज़ालिम हुकूमत के ख़िलाफ़ जद्दोजेहद की और संसार के गौरवमयी इतिहास में वीरता एवं सफलता हासिल कर पंजाब की पवित्र धरती पर स्वतंत्र खालसा राज्य का झंडा लहराने वाले इसके पहले संस्थापक बने। इतिहास के पृष्ठों को पढ़ते समय यह बात साबित होती है कि मुगलों की हुकूमत के समय शासन-समर्थक मुस्लिम लेखकों द्वारा वक्त की सरकार की प्रशंसा लिखना स्वाभाविक था। यही कारण था कि कई फ़ारसी इतिहासकारों ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर को मुसलमानों का कट्टर विरोधी लिख कर घोर अन्याय किया है। ज़ालिम सलतनत को नेसतो-नाबूद करने के लिए लोक लहर के अगुआ बाबा बंदा सिंघ बहादुर को मुसलमानों का समर्थन मिलना यह साबित करने के लिए आवश्यक है कि इस लासानी हस्ती के बारे में अधिकांशत : किसी गलतफहमी का शिकार होकर या जानबूझ कर झूठ ही लिखा गया है। बाबा बंदा सिंघ बहादुर को आम मुसलमानों का समर्थन मिलना इतिहास की कई बंद परतें खोलता है।[१]

'जामि-उ-तवारीख' कर्त्ता काज़ी फ़कीर मुहम्मद का हवाला देकर डॉ. गंडा सिंघ लिखते हैं —''वे हर किसी को 'सिंघ' पदवी से बुलाते थे। उदाहरण के लिए अगर कोई मुसलमान इनके पंथ में आ जाए तो उसे नमाजी सिंघ कहते थे।''[२] बाबा बंदा सिंघ बहादुर की फ़ौज में सिक्ख या हिंदू ही नहीं शामिल थे बल्कि भारी संख्या में मुसलमान भी भर्ती हो गए थे। डॉ. गंडा सिंघ के अनुसार, ''यह उनके विशाल हृदय वाले व्यवहार का ही परिणाम लगता है, जो बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने मुसलमान प्रजा के साथ किया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर इसलाम के विरोधी ही नहीं, जो थे कि वे अकारण ही मुसलमानों के साथ उनके मुसलमान होने के कारण कोई सख़्ती करते। वे तो ज़ुल्मी शासन और राजसी अत्याचारों के विरुद्ध थे। इत्तफ़ाक से उस समय शासन मुसलमानों के हाथ में था और वे राजसी बलबूते पर राजसी अत्याचारों का साधन बने हुए थे।''[३]

'अख़बार-ए-दरबार-ए-मौला' की एक रिपोर्ट में तो स्पष्ट दर्ज है कि २८ अप्रैल १७११ ई. (२१ रबी-अव्वल) को हिदायतुल्ला ख़ान के माध्यम से भगवती दास हरकारे का खबरों का पर्चा, जो बादशाह के दृष्टिगोचर हुआ, उसमें लिखा हुआ था— ''नानक-पूजक (बाबा बंदा सिंघ बहादुर) का १९ तारीख़ (२६ अप्रैल) तक डेरा कलानौर के कसबे में था। उसने वचन दिया और इकरार किया है कि वह मुसलमानों

**स्वर्ण कालोनी, गोले गुज़राल, जम्मू तवी— १८०००२, फोन: ९९०६५-६६६०४*

को कोई दुख नहीं देगा। चुनांचि जो भी कोई मुसलमान उसके पास जाता है, वह (बाबा बंदा सिंघ बहादुर) उसकी दिहाड़ी एवं तनख़्वाह नियत कर उसका पूरा ध्यान रखता है और उसने आज्ञा दी हुई है कि मुसलमान नमाज़ तथा ख़ुतबा जैसा चाहें पढ़ें। चुनांचि पाँच हज़ार मुसलमान उसके साथी बन गए हैं और सिंघों की फ़ौज में बाँग तथा नमाज़ द्वारा सुख भोग रहे हैं।''[४]

'अख़बार-ए-दरबार-ए-मौला' की एक ख़बर, जो सरहिंद की जंग से पहले लिखी गई थी, बताती है कि ''बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सरप्रस्ती में सिक्ख सरहिंद के फ़ौजदार वजीर ख़ान को बहुत नफ़रत करते थे, जिसने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दो छोटे मासूम साहिबज़ादों को दीवार में ज़िंदा चिनवा कर शहीद किया था, मगर बाबा बंदा सिंघ बहादुर आम मुसलमानों के प्रति अच्छा रवैया धारण करने में विश्वास करते थे। चाहे सरहिंद की लड़ाई में फ़ौजदार वज़ीर ख़ान और उसके कुछ करीबी साथियों को सिंघों ने मार गिराया था लेकिन दूसरे किसी मुसलमान को उन्होंने नहीं छुआ था।''

२३ जून, १७१० ई. शुक्रवार की ख़बर के अनुसार, ''गुज्जर और हिंदू खुद आकर उसकी फ़ौज में भर्ती हुए। (बाबा बंदा सिंघ बहादुर) ने गुलाब नगर के ज़मींदार जान मुहम्मद को परगने का ज़मींदार नियुक्त किया और उसकी गलतियों को क्षमा कर दिया गया :— मैंने तेरे गुनाह माफ कर दिए हैं और तुझे पूरे परगने का ज़मींदार नियुक्त कर दिया है। तू अपने आदमियों के साथ जाकर चुंडाले के ज़मींदार सरदार ख़ान को लेकर आउ। फिर हम मिलकर, जलाल ख़ान अफगान की खोज करेंगे।''

बहादुर शाह बादशाह ने १० दिसंबर, १७१० ई. को अपने कैंप लोहगढ़ (निकट साढौरा) से सिक्खों के ख़िलाफ़ यह फ़रमान जारी किया कि जहाँ भी श्री गुरु नानक साहिब के सिक्ख मिलें, मार दिए जाएँ। चाहे इस फ़रमान के आधार पर सिक्खों के लगातार कत्लेआम के हुक्म जारी किये गए, मगर बाबा बंदा सिंघ बहादुर की नीति में कोई परिवर्तन न आया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने अपनी लड़ाई को सांप्रदायिक लड़ाई बनने से हर तरह से बचाये रखा। उनकी लड़ाई अत्याचारी हाकिमों के विरुद्ध थी न कि मुसलमानों के ख़िलाफ़। उन्होंने मुसलमानों पर कोई धार्मिक प्रतिबंध नहीं लगाए। यही कारण था कि बड़ी संख्या में मुसलमान और गुज्जर उनकी फ़ौज में भर्ती हो गए थे। 'अख़बार-ए-दरबार-मौला' की महत्वपूर्ण सूचनाएँ इसकी गवाह हैं :—

(अ) ''.....मैं मुसलमानों को नहीं सताऊंगा।...''

(आ) ''..... जो भी मुसलमान उसके पास आता है, वह उसके लिए रोज़ाना भत्ता और तनख़्वाह निश्चित करता है एवं उसका ख़्याल रखता है। उसने उन्हें मुसलमानों को (ख़ुतबा और नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दी हुई है। यही कारण है कि पाँच हज़ार मुसलमान उसके पास इकठ्ठा हो गए हैं। उस (बाबा बंदा सिंघ बहादुर) के साथ दोस्ती होने के बाद, उन अभाग्यशालियों (सिक्खों) की फ़ौज में बाँग

और नमाज़ पढ़ी जाने लगी।''[५]

इस प्रकार की तफ़सीलें और भी मिलती हैं। 'अख़बार-ए-दरबार-ए-मौला' की २० मई, १७११ ई. की एक अन्य रिपोर्ट में दर्ज है, ''अभाग्यशालियों का गुरु (लेखक अनभिज्ञता के कारण बाबा बंदा सिंघ बहादुर को गुरु लिखता है) बटाला शहर से दो कोस की दूरी पर ठहरा है। राम चंद और दूसरे सिक्ख ७०० घुड़सवार एवं पैदल फ़ौजी जम्मू की पहाड़ियों की तरफ से आकर उसके साथ मिल गए हैं। जो भी हिंदू और मुसलमान उसके पास नौकरी करने के लिए आते हैं, वह उनकी देखभाल करता है और रोटी देता है। वह (बाबा बंदा सिंघ बहादुर) उन्हें लूटे गए माल में से भी वस्तुएँ बाँट देता है।''[६]

बाबा बंदा सिंघ बहादुर के समय बहुत-से हिंदू और मुसलमान सिक्ख धर्म में शामिल हो गए थे। "Strange Conversions were noticed as a result of Banda Singh's overbearing influence. The authority of that deluded sect (of the Sikhs) has reached such extremes", wrote Aminud Daula in June 1710, "that many Hindus and Mohammadans finding no alternative to obedience and submission, adopted their faith and rituals. Their chief (Baba Banda Singh Bahadur) captivated the hearts of all towards his inclination and, whether a Hindu or a Mohammadan whoever came in contact with him, was addressed as a Singh."

Dindar Khan, a powerful ruler of the neighbourhood, was named Dindar Singh and Mir Nasiruddin, the official reporter of Sirhind, became Mir Nasir Singh. In the same way, a large number of Mohamadans abandoned Islam and followed the misguided path (of Sikhism) and took solemn oaths and pledges to stand by Banda."[7]

यह वो समय था जब एक घुड़सवार सिक्ख सिपाही ही पूरे गांव में संग्राम मचा देता था। "Either from conviction or fear or profit (or a combination of the three) a great many Hindu and Muslim peasants accepted conversion to Sikhism."[8]

उपरोक्त दिए विचारों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर का आम मुसलमानों के प्रति रवैया भाइयों जैसा था।

हवाले और टिप्पणियाँ :—

१. कुझ कु पुरातन सिक्ख-ऐतिहासिक पत्तरे, डॉ. गंडा सिंघ, 'फुलवाड़ी', लाहौर, मार्च-अक्तूबर १९३१, पृष्ठ ४८.

२. बंदा सिंघ बहादुर, डॉ. गंडा सिंघ, पटियाला, १९९०, पृष्ठ ९७-९८.

३. वही, पृष्ठ ९८.

4. The Punjab : Past and Present, Pbi. Uni., Patiala, Oct. 1970, P. 227-28.
5. Ibid, P. 226.
6. Ibid, P. 228.
7. A Short History of the Sikhs, Principal Teja Singh, Dr. Ganda Singh, Vol.I, Patiala, 1989, P. 81.
8. A History of the Sikhs, Khushwant Singh, Vol. I, Oxford, 1999, P.106.

महाराजा रणजीत सिंघ के काल में शहरी विकास

-डॉ. किरपाल सिंघ (दिवंगत)

अठारहवीं सदी के अर्द्ध में पंजाब के शहरों की हालत बहुत बिगड़ गई थी। इसके कई कारण थे। प्रमुख कारण नादिर शाह का हमला और उसके बाद अहमद शाह अब्दाली के हमले थे। १७५२ ई. में अहमद शाह ने मुग़ल साम्राज्य के सूबे लाहौर, जिसे पंजाब भी कहा जाता था, के अलावा सूबा मुलतान एवं दिल्ली सूबे के कुछ हिस्से (सरहिंद आदि के इलाके) काबुल के अफगान साम्राज्य के साथ जोड़ लिए थे। मगर यह राजसी स्थिति जल्दी ही बदल गई। मरहठों (मराठों) और अफगानों का युद्ध हुआ। पहले मरहठों ने पंजाब को जीत लिया और फिर अफगानों ने मरहठों को पानीपत की तीसरी लड़ाई में पराजय दी। फिर अफगानों और सिक्खों की लड़ाई होती रही, जिनका प्रभाव शहरों पर अच्छा नहीं था। बहुत-से शहर इसी राजसी उथल-पुथल में उजड़ गए। मिसाल के तौर पर मुलतान अपने इलाके की राजधानी और प्रसिद्ध शहर माना जाता था। १७५२-१७७१ ई. तक यह अफगानों के अधीन रहा और फिर १७७१-१७७९ ई. तक भंगी मिसल के अधीन, १७७९-१८१८ ई. तक फिर अफगानों के अधीन। इस प्रकार जब महाराजा रणजीत सिंघ के शासन में मुलतान सम्मिलित हुआ, इसका रेशम उद्योग और व्यापार तबाह हो चुका था। महाराजा रणजीत सिंघ ने मुलतान के रेशम उद्योग की उन्नति के लिए विशेष प्रयत्न किये।[१] यही हाल दूसरे शहरों का था।

महाराजा रणजीत सिंघ के काल में शहरों की आबादी के बढ़ने के कई कारण थे। जहाँ कहीं नये किले बनते और सुरक्षा का अच्छा प्रबंध होता, वहाँ के आस-पास के गाँवों के लोग किले के आस-पास आबाद हो जाते, जैसे कि फिलौर का किला बना और यहाँ नगर आबाद हो गया। कई बार अन्य कारण भी इसके साथ मिल जाते हैं। अटक नगर की आबादी में एक बड़ी शाहराह (शाह मार्ग) पर होने के कारण और किला होने के कारण इसका विस्तार हुआ। वजीराबाद (ज़िला गुजरांवाला) की आबादी बढ़ने के कारणों में से इस प्रकार के कारण थे। व्यापार और उद्योग की उन्नति के कारण नगरों की आबादी में विस्तार होता गया, जैसे कि श्री अमृतसर में आबादी की वृद्धि के कारणों में से एक कारण श्री अमृतसर के उद्योग में विस्तार होना था। निम्नलिखित शहरों में महाराजा रणजीत सिंघ के समय विशेष रूप से शहरी विकास हुआ :—

योजनाबद्ध नगर—वज़ीराबाद : पाकिस्तान में मौजूदा गुजरांवाला की उत्तरी-पश्चिमी दिशा में एक मील की दूरी पर दरिया चनाब के किनारे

स्थित वज़ीराबाद नगर वज़ीर खान[२]. (हकीम इलमउद्दीन), जो शाहजहान के समय एक प्रसिद्ध अमीर था, ने आबाद किया था और यह पिशावर से दिल्ली को जाती जरनैली सड़क पर होने के कारण परगने का मुख्य नगर बन गया।[३] सत्रहवीं सदी के मध्य में यह राजसी कारणों से उजड़ गया था। १८०९ ई. में यह महाराजा रणजीत सिंघ के अधीन हुआ और इसकी आबादी में विस्तार होने लगा। दिसंबर १८२९ ई. में महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने इटैलियन जनरल अवीतबेला को वजीराबाद का गवर्नर नियत किया,[४] जिसने वजीराबाद नगर की योजनाबंदी कर इसे एक नयी किस्म का नगर बना दिया। ऐडवर्न लिनकिन गुजरांवाला गज़टियर में इस प्रकार लिखता है :—

''जैसे कि अवीतबेला ने वजीराबाद की योजनाबंदी की, नगर एक समबाही शक्ल (पैरलोग्राम) का बना दिया जिसके चारों ओर पक्की चहारदीवारी थी। इसमें एक सीधा और चौड़ा बाज़ार था, जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाता था तथा छोटे बाज़ार भी चौड़े एवं सीधे थे। पूरे नगर में आम नगरों की भांति तंग बाज़ार और तंग गलियों की अनुपस्थिति थी।''[५].

वुल्फ वज़ीराबाद १८३२ ई. में आया और उसने लिखा है— ''वह (अवीतबेला) वजीराबाद का गवर्नर है, जिसने शहर को विशेष तौर पर सुधारा है। उसने शहर की गलियां एवं बाज़ार सफ़ा (साफ) रखे हैं।''६. १८३० ई. में विलियम बार ने लिखा— ''हम एक नये बने दरवाज़े के नीचे से गुज़रे . . . जिन गलियों में से हम गुज़रे वे चौड़ी और सफ़ा थीं। मकान भी अच्छे बने थे।''[७]

वज़ीराबाद में बाग़ों के बारे में गणेश दास वडहेरा लिखता है— ''महाराजा रणजीत सिंघ के समय में बहुत-से प्रसिद्ध व्यक्तियों ने वज़ीराबाद के बाहर बाग़ और फलदार पौधे लगवाए, जिनमें कृपा राम चोपड़ा का बाग़, जो शहर के साथ लगता है, प्रसिद्ध है। दीवान ठाकुर दास चोपड़ा, जो राजा गुलाब सिंघ जम्मू वाले के पास नौकर था, का बाग़ बहुत सुंदर है। इसी प्रकार किशन कौर बनिए का बाग़, भाण शाह के पुत्र लोरिंदी शाह का बाग़, स. खुशहाल सिंघ जमांदार का बाग़ और स. उत्तम सिंघ छाछी का बाग़ बहुत अच्छी हालत में हैं। वजीराबाद की सराय में महाराजा रणजीत सिंघ आकर ठहरा करते थे। बहुत ख़ूबसूरत जगह है। इसमें सुंदर बाग़ है और एक बहुत ऊँचा बुर्ज है।''[८]

स्टैनबेक लिखता है— ''निर्माण-कला के पक्ष से वज़ीराबाद पंजाब के सब शहरों में से उत्तम है। यह जरनैल अवीतबेला के यत्नों का परिणाम है। इसकी गलियां चौड़ी और बाज़ार बहुत खुले हैं।''[९]

वज़ीराबाद नाव बनाने का केंद्र रहा है। दरिया चनाब के किनारे व्यापार की एक प्रसिद्ध मंडी थी। जहाँ दरिया चनाब दरिया जेहलम के साथ मिलता है, वहां से लेकर अखनूर, जो जाहू में है, तक इसमें नाव चला करती थीं, जिस कारण दोनों तरफ से व्यापार होता था। जम्मू वाली दिशा से लकड़ी, शक्कर, घी, गेहूँ, मोटा कपड़ा, भेड़ों की खाल मुलतान भेजी जाती थी, जहाँ से फिर डेरा

गाजी खान के रास्ते काबुल जाती थीं। [१०] वज़ीराबाद उद्योग का भी केंद्र था। जनरल अवीतबेला के समय यहाँ शनील (मखमल) बनना आरंभ हुई तथा दूसरा कपड़ा भी बनता था।[११].

महाराजा रणजीत सिंघ के समय का यह पुनर्निमित शहर अंग्रेज़ों ने इतना पसंद किया कि वज़ीराबाद को ही सारे इलाके की राजधानी बना दिया। इस इलाके में सियालकोट, गुजरांवाला और कुछ इलाके लाहौर ज़िले के भी आते थे। फिर १८५२ ई. में वज़ीराबाद गुज़रांवाला ज़िले की तहसील का केंद्र बनाया गया।[१२]

गुजरांवाला प्रफुल्लित नगर : जरनैली सड़क पर पंजाब की पुरानी राजधानी लाहौर से ४२ मील उत्तरी-पश्चिमी दिशा में स्थित गुजरांवाला प्रफुल्लित नगर था। गुजरांवाला का वजूद और विकास सिक्ख-राज के साथ हुआ और इसमें महाराजा रणजीत सिंघ तथा उसके परिवार की विशेष देन है। अकबर के समय, आइनी-अकबरी के अनुसार, यह सारा इलाका, जिसमें गुजरांवाला आबाद हुआ, ऐमनाबाद के परगने में था और गुजरांवाला का नाम लिखित में नहीं आता। जहाँगीर इस इलाके में शिकार खेलता हुआ कई दिन तक रहा। उसने गुजरांवाला के साथ लगते गाँव घरजाख के बारे में 'तोज़कि-जहांगीरी' में तो लिखा है''[१३] परन्तु वह गुजरांवाला का कथन नहीं करता, जिससे सिद्ध होता है कि उस समय गुजरांवाला नगर आबाद नहीं था। महाराजा रणजीत सिंघ के दादा सरदार चढ़त सिंघ ने यह नगर आबाद किया है और साथ लगते खिआली गाँव से उठ कर उसने पुराने गाँव खानपुर सांसी के पास कुएँ के साथ लगता गाँव आबाद किया। इस कुएँ को गुजरां दा खूह (गुजरों का कुआँ) कहते थे, जिसका नाम गुज़रां दा खूह होने के कारण 'गुजरांवाला' पड़ गया।[१४]

महाराजा रणजीत सिंघ के पिता सरदार महां सिंघ ने सैयद नगर के गाँव के लोगों को ज़मीन दे दी तो वे सभी गाँव वासी यहाँ आकर आबाद हुए।[१५]. शुकरचक्किया मिसल की राजधानी होने के कारण यह नगर व्यापार का केंद्र बन गया। महाराजा रणजीत सिंघ लाहौर जीतने से पहले अर्थात् १७९९ ई. पहले यहीं पर रहे हैं। फिर यह नगर सरदार हरी सिंघ नलवा की जागीर में आ गया।

सरदार हरी सिंघ नलवा ने इस नगर की उन्नति के लिए विशेष यत्न किए। उसने बाग़ महां सिंघ बनवाया और उसके अंदर एक बारांदरी (बारहदरी) बनवाई। वो यहाँ विदेशी यात्रियों का स्वागत करता था। बारांदरी के बारे में गुजरांवाला डिस्ट्रिक्ट गज़टियर में लिखा है— ''जिसे बारांदरी कहते हैं वह सिक्ख निर्माण-कला का एक अच्छा नमूना है और रहने के लिए एक बहुत ही ख़ुशगवार स्थान है।''[१६].

बारांदरी के बारे में लेफ्टिनेंट बार लिखता है— ''पूरब में सबसे बढ़िया स्थान है, जो मैंने देखा है। इसकी तीन मंज़िलें हैं। प्रत्येक मंज़िल में १६ फुट लंबे और चौड़े कमरे हैं। निचली मंज़िल में इन कमरों के चारों तरफ बरामदा है। गर्मियों में गर्मी से बचने के लिए ज़मीन में ठंडे कमरे हैं। अंदर जाने वाले बड़े दरवाज़े पर बहुत-

से फव्वारे हैं। ऊपर चबूतरे के कोनों पर बैठने के लिए बहुत-से ख़ूबसूरत स्थान बनी हैं, जिन पर सिल्क और कश्मीरी शालें बिछा दी जाती हैं। इसी तरह दूसरी और तीसरी मंज़िल पर भी बैठने के लिए स्थान बने हैं।'' [१७] बारांदरी की एक दीवार पर जमरौद की लड़ाई की बड़ी कलमी तस्वीर बनी है, जिस लड़ाई में सरदार हरी सिंघ नलवा शहीद हो गया था। यह तस्वीर १२ फुट लंबी और ६ फुट ऊँची है। इसे दो हिस्सों में बांटा गया है— एक में सरदार हरी सिंघ नलवा की फ़ौज लड़ रही है और दूसरी में अकबर खान की फ़ौज।''[१८]

बैरन चार्ल्स ह्यूगल ने बारांदरी के बाग़ की बहुत प्रशंसा की है— ''बाग़, बारांदरी के कमरों की अपेक्षा कहीं ज्यादा सुंदर है, जो मैंने भारत में सबसे बढ़िया देखा है। वृक्ष संतरों से लदे पड़े हैं। सरदार हरी सिंघ ने कश्मीर से वृक्ष मंगवाए हैं, जो इस धरती में बहुत प्रफुल्लित हुए हैं। सुंदर फूलों को बड़े ध्यान से सजाया है और इस बाग़ के भाँति-भाँति के वृक्ष स्पष्ट तौर पर मन को मोह लेते हैं।''[१९]

जनरल अवीतबेला ने मालटा का वृक्ष मालटा टापू से लाकर पहली बार यहीं पर लगाया। फिर ये पूरे पंजाब में प्रचलित हो गए। मालटा से आने के कारण इसका नाम भी मालटा ही पड़ गया। [२०]

महाराजा रणजीत सिंघ ने इस इलाके को बहुत प्रफुल्लित किया है। महाराजा के समय में बहुत-से प्रसिद्ध आदमी इस इलाके से सम्बन्धित थे, जैसे कि सरदार हरी सिंघ नलवा, मिस्र दीवान चंद (गोंदलावाला), सावन मल्ल (अकालगढ़ का), दीवान धनपत राय सोदरे का, सरदार जवाहर सिंघ राम नगर का आदि।[२१]

श्री अमृतसर और इसके व्यापार एवं उद्योग की प्रफुल्लता : श्री अमृतसर शहर की मौजूदा प्रफुल्लता महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा इस शहर को प्रफुल्लित करने के यत्नों के परिणामस्वरूप है। महाराजा रणजीत सिंघ से पहले श्री अमृतसर शहर अलग-अलग मिसलों में बँटा हुआ था। ये मिसलदार अपने-अपने इलाके से कर वसूल किया करते थे। महाराजा रणजीत सिंघ के अधीन आने से शहर एक प्रशासक के अधीन आ गया। महाराजा ने श्री अमृतसर को अपनी गर्मियों की राजधानी बनाया। वे खुद तीन-चार महीने यहीं पर रहा करते थे, जिस कारण इस शहर की रौनक बढ़ी। वे यूरोपियन यात्रियों का इसी नगर में स्वागत किया करते थे जिस कारण इस नगर को प्रफुल्लता मिली।

महाराजा रणजीत सिंघ ने गोबिंदगढ़ किला और अपने रहने का महल एवं बाग़ (राम बाग़) श्री अमृतसर में बनवाया। उनके दरबारियों ने भी अपने निवास के लिए बहुत-से कटरा आबाद किए, जो अब तक उनके नाम से प्रचलित हैं। ये कटरा हैं :—

१. कटरा भाई संत सिंघ : भाई संत सिंघ को महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा श्री दरबार साहिब की सेवा करने के लिए लगाया गया था।

२. ढाब भाई वसती राम : भाई वसती राम एक पवित्र आत्मा थी, जिसकी यादगार लाहौर किले के बाहर थी। इसके दोनों पुत्र भाई राम सिंघ और भाई गोबिंद राम महाराजा के दरबारी थे।

३. कटरा कुँवर खड़क सिंघ : इसे 'कटरा नकईआ' भी कहते हैं, क्योंकि कुँवर खड़क सिंघ की माता नकई मिसल से थीं।

४. कटरा मोती राम : मोती राम महाराजा रणजीत सिंघ के जरनैल मुहकम चंद का पुत्र था।

५. कटरा हकीमां : यह कटरा फ़कीर अज़ीज़ुद्दीन ने आबाद किया था, जो महाराजा का एक प्रसिद्ध दरबारी था।

६. कटरा निहाल सिंघ अटारीवाला : यह सरदार शाम सिंघ अटारीवाला का पिता था। इसकी पोती के साथ महाराजा रणजीत सिंघ के पोते कुँवर नौनिहाल सिंघ का विवाह हुआ था।

७. कटरा करम सिंघ : यह सरदार करम सिंघ गाँव रंघड़ नंगल का था। यह प्रसिद्ध दरबारी था।

८. कटरा मित्त सिंघ पधानिया : सरदार मित्त सिंघ पधानिया, महाराजा रणजीत सिंघ का एक प्रसिद्ध जरनैल था। विस्तार के लिए देखो, चीफ्स एंड फैमिलीज़ ऑफ नोट, जिल्द प्रथम, १९४०, पृष्ठ ३७८-८०.

९. कटरा कुँवर शेर सिंघ : कुँवर शेर सिंघ रानी सदा कौर का नाती था और रानी महिताब कौर का पुत्र।

१०. कटरा फतिह सिंघ कालियांवाला : श्री अमृतसर के निकट काले गाँव का रहने वाला सरदार फतिह सिंघ महाराजा का एक प्रसिद्ध जरनैल था।

११. कटरा गरबा सिंघ : सरदार गरबा सिंघ महाराजा का एक जरनैल था, जो नौशहिरे की लड़ाई में शहीद हो गया था।

श्री अमृतसर में बाग़ : गणेश दास वडहेरा अपनी पुस्तक 'चार बागि पंजाब' में लिखता है कि श्री अमृतसर में निम्नलिति बाग़ महाराजा रणजीत सिंघ के समय मौजूद थे— बाग़ गुरू, बाग़ अकालियां, बाग़ सरदार अतर सिंघ कालियांवाला, बाग़ बेली राम, बाग़ सरदार देसा सिंघ मजीठिया, बाग़ भाई गुरमुख सिंघ ज्ञानी, बाग़ जमांदार खुशाल सिंघ, बाग़ समदू कश्मीरी— समदू कश्मीरी श्री अमृतसर का एक प्रसिद्ध कश्मीरी मुसलमान था, जिसका बाग़ चाटीविंड दरवाज़े के निकट था। राम बाग़ के पास महाराजा रणजीत सिंघ की रानी गुल बहार बेगम का बाग़ था। सबसे अधिक शानो-शौकत वाला राम बाग़ था, जहाँ गर्मियों में आकर महाराजा रणजीत सिंघ ठहरा करते थे।[२२]

श्री अमृतसर की उन्नति में महाराजा रणजीत सिंघ ने विशेष रुचि दिखाई। वी. जैकमांड लिखता है— "श्री अमृतसर पंजाब का सबसे बड़ा शहर है। इसकी आबादी मेरे अन्दाजे के अनुसार एक लाख से दो लाख के मध्य है। मैंने जितने भी शहर अंग्रेज़ इलाके में देखे हैं, उनमें से श्री अमृतसर में सबसे अधिक रौनक है। यह पहला शहर है जिसमें उन्नति के चिह्न मैंने देखे हैं।[२३.] एक अन्य समकालीन श्री गणेश दास वडहेरा लिखता है कि आज सारे पंजाब में श्री अमृतसर के बराबर कोई शहर नहीं है। सब देशों से सौदागर यहाँ आकर आबाद हुए हैं। लाहौर से बहुत-से क्षत्रिय श्री अमृतसर आकर बस गए हैं। श्री अमृतसर के शाहूकार बहुत अमीर हैं।"[२४.]

महाराजा रणजीत सिंघ ने श्री अमृतसर को व्यापार का एक बड़ा केंद्र बनाया। यह लाहौर का

बड़ा शहर है। सारे पंजाब की दौलत यहाँ एकत्रित हुई लगती है। . . . श्री अमृतसर पंजाब में से सबसे अधिक रौनक वाला शहर है।[२५]

श्री अमृतसर का शालउद्योग और व्यापार प्रसिद्ध है। १८३३ ई. में कश्मीर में अकाल पड़ा तो महाराजा रणजीत सिंघ ने शाल बनाने वाले कारीगरों को श्री अमृतसर में सुविधाएं देकर आबाद किया। ये कारीगर अपने हथियार साथ लेकर आए और फौजियों के लिए मोटे कंबल, जो फ़ौजी सर्दियों में इस्तेमाल करते थे, ये बनाते थे। इन्होंने शाल बनाने का काम भी आरंभ किया।[२६] इन उद्योगों के लिए श्री अमृतसर की स्थिति आदर्श थी, क्योंकि कांगड़ा एवं कश्मीर दोनों इलाके लाहौर दरबार के अधीन थे और यहाँ से शाल तथा कम्बल के लिए ऊन बहुतायत में मिल जाती थी। महाराजा के श्री अमृतसर में अक्सर आने-जाने के कारण इन दोनों वस्तुओं के उपभोग का अच्छा साधन बन जाता था।

इस प्रकार महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने अधीन अन्य शहरों के विकास में भी विशेष योगदान दिया है।

फुट नोट :

१. अलेगज़ांडर बर्न्स लिखता है— ''रणजीत सिंघ ने मुलतान पर कब्ज़ा करने के बाद ठीक तरीके से सिल्क के व्यापार को उन्नत किया। वह दरबार में सिल्क के बिना अन्य किसी कपड़े की ख़िलअत या सिरोपा नहीं देता था। दरबारियों ने भी मुलतान की सिल्क के साफ़े और रुमाल रखने आरंभ कर दिए।''

२. यह वही वज़ीर खान था, जिसने लाहौर में सुनहरी मस्जिद बनवाई। यह चिनौट का रहने वाला था, जहाँ इसने एक पक्का किला बनवाया। इसके जीवन के और विस्तार के लिए देखो— 'मुआयुरल जीवन' अंग्रेज़ी अनुवादक बीवीरिज़, जिल्द द्वितीय, एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता, १९५२, पृष्ठ ९८१-३.

३. चार बागि पंजाब, श्री गणेश दास, संपादक स. किरपाल सिंघ, फ़ारसी, श्री अमृतसर १९६५, पृष्ठ २५०.

४. यूरोपियन एडवेंचर्स ऑफ नॉर्थर्न इंडिया, सी ग्रेग, गवर्नमेंट प्रिंटिंगस लाहौर, १९२९, पृष्ठ १२५ और १२९.

५. गुजरांवाला डिस्ट्रिक्ट गज़टियर, एडवर्ड जिनकिन, लाहौर, १९३५.

६. यूरोपियन एडवेंचर्स ऑफ नॉर्थर्न इंडिया, पृष्ठ १२७.

७. जनरल ऑफ मार्च फ्रॉम दिल्ली टू काबुल, पटियाला, १९७१, पृष्ठ ७५.

८. चार बागि पंजाब, संपादक सरदार किरपाल सिंघ, फ़ारसी, खालसा कॉलेज, श्री अमृतसर, १९६५, पृष्ठ २५२.

९. दी पंजाब, कर्नल स्टेनबैक, पटियाला, १९७०, पृष्ठ ५-६.

१०. कामर्स बाई रिवर्स इन पंजाब, पृष्ठ ९३.

११. गुजरांवाला डिस्ट्रिक्ट गज़टियर, पृष्ठ १८६.

१२. उक्त।

१३. तोज़कि-जहांगीरी, नवल किशोर प्रेस, पृष्ठ ३२२ और ३४९.

१४. तारीखि मखज़नि पंजाब, ग़ुलाम सरवर, पृष्ठ २६४-५.

१५. इबरतनामा, अलीओदीन, लाहौर, १९६१, पृष्ठ ३७३.

१६. गुजरांवाला डिस्ट्रिक्ट गज़टियर, पृष्ठ २२.

१७. जनरल ऑफ मार्च फ्रॉम दिल्ली टू काबुल, पटियाला, १९७१, पृष्ठ ७५.

१८. उक्त, पृष्ठ ७३-७४.

१९. ट्रेवल्स इन कश्मीर एंड पंजाब, भाषा विभाग, १९७०, पृष्ठ २६.

२०. लैंड ऑफ फाइव रिवर्ज़, डेवड रास, पटियाला, १९७०, पृष्ठ १३७.

२१. गुजरांवाला डिस्ट्रिक्ट गज़टियर, पृष्ठ २२.

२२. चार बागि पंजाब, श्री गणेश दास, संपादक सरदार किरपाल सिंघ, खालसा कालेज, श्री अमृतसर, १९६७, पृष्ठ २९५.
२३. दी पंजाब हंडरड ईयर अगो, वी. जैकमांडेड और सालटी कोफ, पटियाला, १९७१, पृष्ठ २६.
२४. चार बागि पंजाब, पृष्ठ २९४-९५.
२५. उक्त।
२६. स्टेनबेक, पंजाब, पटियाला, १९७१, पृष्ठ ५०, अमृतसर : पास्ट एंड प्रजेंट, वी. एन. दत्ता, श्री अमृतसर, १९४७, पृष्ठ १३१.

कविता

श्री गुरु अरजन देव जी

जून का महीना गर्मी थी कहर की।
तपती थी धूप सिर पर दोपहर की।
जलती लोह को गुरु साहिब सह गए।
ज़ालिमों का हो जाएगा, नाश कह गए।
पाकर शहीदी इतिहास रच गए।
सूर्य की भांति एक आस रच गए।
दुनिया में ऐसा कौन हो सकता?
स्वयं की ज़िंदगानी को जो खो सकता!
गुरु रामदास जी के घर पैदा हुए।
माता भानी जी की ममता में बड़े हुए।
जन्म-स्थान प्यारा गोइंदवाल जी!
नेकी वाले फूलों से भरी है डाल जी!
हुआ था विवाह 'माता गंगा' साथ जी!
पैदा हुए फिर 'हरिगोबिंद' लाल जी!
'अमृतसर' प्रचार का स्थान सोहना था।
वातावरण कुदरत का मनमोहना था।
अनेक ही भाषाओं के ज्ञाता हुए हैं।
'ग्रंथ' की संपादना के दाता हुए हैं।
भट्ट, गुरसिक्ख, भक्तों की बाणी है।
गुरुओं की बाणी इसमें लासानी है।
जात-पांत, रूप-रंग के त्याग में।
इन्सानी मूल्य भर दिए प्यार में।
सारे शबद बाणी के अनमोल हैं।
चांद-सितारों जैसे सच्चे बोल हैं।
उनका यार 'मियां मीर' 'बालमा'!
उच्च कोटि वाला था फकीर 'बालमा'!
ऐसे याराने कहीं मिलते न 'बालमा'!
बार-बार फूल ऐसे खिलते न 'बालमा'!
सूर्य की तपिश का पैगाम रहेगा।
गुरु जी का दुनिया में नाम रहेगा।

-स. बलविंदर सिंघ बालम, ओंकार नगर, गुरदासपुर (पंजाब), फोन : ९८१५६-२५४०९

पंचम पातशाह द्वारा स्थापित नगर : श्री तरनतारन साहिब

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

गुरमति एक संगत प्रधान धर्म है। यह व्यक्तिगत स्तर पर सीमित रह जाने वाली विचारधारा नहीं है। गुरु साहिबान का उद्देश्य व्यक्तिगत विकास के साथ-साथ सामाजिक विकास भी करना था।

दार्शनिक एवं वैचारिक स्तर पर सामाजिक जीवन में आर्थिक उपलब्धियां प्राप्त करना प्राय: लोभ, लालच, स्वार्थ, तृष्णा आदि की श्रेणी में गिना जाता है, परंतु गुरबाणी का स्पष्ट आशय है कि प्रभु-भय में रहते हुए, अपनी आत्मिक उन्नति की पूर्ति करने हेतु जीवन में सहायक अपनी भौतिक आवश्यकताओं और दूसरों की आर्थिक जरूरतों को पूरा करने में सहयोग करना लोभ-स्वार्थ के अन्तर्गत नहीं आता।

गुरबाणी में जीविका-उपार्जन हेतु किरत-कमाई करने और लोभवश लूट-खसोट करने में स्पष्ट अंतर किया गया है। वस्तुत: श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार समाज के आर्थिक विकास के लिए भौतिक उन्नति करना लोभ या तृष्णा नहीं है वरन् उस सामूहिक चेतना की द्योतक है जो आर्थिक विकास के माध्यम से सामाजिक विकास के उद्देश्य को प्राप्त करना चाहती है।

गुरु साहिबान की दृष्टि पूर्णत: स्पष्ट थी कि मानव का सामूहिक विकास-मात्र तभी हो सकता है जब उसे आर्थिक विकास के साथ जोड़ दिया जाये। यही कारण है कि गुरु साहिबान ने शहरीकरण पर विशेष बल दिया। गुरु साहिबान ने नये-नये शहर बसाए या पुराने शहरों का पुन: उद्धार किया। श्री गुरु नानक देव जी ने श्री करतारपुर साहिब, श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री खडूर साहिब, श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गोइंदवाल साहिब, श्री गुरु रामदास जी ने श्री अमृतसर साहिब, श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री तरनतारन साहिब, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने श्री कीरतपुर साहिब, श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने श्री अनंदपुर साहिब आदि नगरों को बसाया या पुन: प्रफुल्लित किया।

इस परंपरा में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा बसाये नगर श्री तरनतारन साहिब का नाम उल्लेखनीय है।

श्री तरनतारन साहिब : पवित्र सरोवर का निर्माण : श्री तरनतारन साहिब एक विख्यात

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

धार्मिक एवं ऐतिहासिक नगर है। इसकी नींव श्री गुरु अरजन देव जी ने स्वयं रखी थी। १७ वैसाख, संवत् १६४७ वाले दिन गुरु जी ने अपने हाथों से पवित्र सरोवर की खुदाई आरंभ करवाई और नगर बसाया।

सरोवर के निर्माण के लिए गुरु साहिब ने आस-पास के गाँव पलासौर, मुरादपुर, काजीकोट आदि की ८० बीघा ज़मीन नूरदीन नामक एक मुगल से एक लाख सत्तावन हज़ार रुपए में खरीदी।

संवत् १६५३ बि. अर्थात् सन् १५९६ ई. में नगर बसने के बाद सरोवर को पक्का करवाने के लिए और गुरुद्वारा साहिब के निर्माण के लिए ईंट पकाने के लिए भट्ठे लगाये गये। जब ईंटें पक गईं तो नूरदीन का लड़का अमीरुद्दीन जबरदस्ती सारी ईंटें उठा ले गया। ईंटें ले जाकर उसने मकान में लगा लीं और सराय में लगा दीं।

सिक्ख संगत ने पंचम पातशाह के पास फरियाद की। गुरु साहिब ने फरमाया कि समय आने पर ये सारी ईंटें वहीं लगेंगी जिसके लिए ये तैयार की गई हैं।

श्री दरबार साहिब का निर्माण : सन् १५९६ ई. में श्री दरबार साहिब के निर्माण की योजना बनाई गई। निर्माण आरंभ होने से पहले ही नूरदीन के लड़के अमीरुद्दीन ने ईंटें चुराने वाली हरकत कर डाली। अमीरुद्दीन की इस दुष्टता के चलते श्री दरबार साहिब का निर्माण सन् १७६८ ई. तक बाधित रहा।

सन् १७६८ ई. में सरदार बुध सिंघ फैजलपुरिया ने इस सारे इलाके पर विजय प्राप्त की और गांव नूरदीन तथा वहां की सराय को तबाह कर दिया। वहां की सारी ईंटें सरोवर के पास लाई गईं।

सरदार बुध सिंघ फैजलपुरिया और सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया ने श्री दरबार साहिब की इमारत का निर्माण-कार्य पुनः शुरू कराया।

इस प्रकार पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का वह वचन पूर्ण हो गया, जिसमें आपने फरमाया था कि ये ईंटें जिस स्थान के लिए बनी हैं, उसी स्थान पर लगेंगी।

महाराजा रणजीत सिंघ और कुँवर नौनिहाल सिंघ द्वारा सत्कार : महाराजा रणजीत सिंघ के हृदय में श्री तरनतारन साहिब एवं वहां के श्री दरबार साहिब के लिए असीम श्रद्धा थी। सन् १८०२ ई. में महाराजा और सरदार फतिह सिंघ आहलूवालिया श्री तरनतारन साहिब के श्री दरबार साहिब आए थे और यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में दसतारें बदल कर स्थायी मित्र बने थे।

महाराजा और उनके पौत्र कुँवर नौनिहाल सिंघ ने श्री दरबार साहिब के लिए बहुत-सा सोना भेंट किया। महाराजा के

आदेश से नगर श्री तरनतारन साहिब के गिर्द चहारदीवारी का निर्माण किया गया। अन्य प्रमुख स्थान— मंजी साहिब, अकाल बुंगा, गुरु का खूह और अन्य अनेक बुंगों का निर्माण भी इसी दौर में कराया गया।

कुँवर नौनिहाल सिंघ की योजना थी— सरोवर के चारों कोनों में चार मीनार बनाने की, परंतु इनमें उत्तरी-पूरबी कोनों पर एक ही मीनार का निर्माण हो सका। यह मीनार लगभग ३४ मीटर या सवा सौ फुट ऊँची है।

गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर और श्री तरनतारन साहिब : सिक्ख राज्य के बाद नगर का प्रबंध अंग्रेजों के हाथ में चला गया। श्री दरबार साहिब पर अन्य गुरुधामों की भांति महंतों का कब्जा था। गुरु-घर की मुक्ति के लिए सन् १८८५ ई. में सिंघ सभा की स्थापना से ही संघर्ष आरंभ हो गए थे। खालसा दीवान माझा ने निरंतर संघर्ष किया, परंतु सही नतीजे न प्राप्त हो सके।

अंतत: गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के अंतर्गत २७ जनवरी, १९२१ ई. को श्री दरबार साहिब का प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पास आ गया।

श्री दरबार साहिब एवं पवित्र सरोवर का वर्तमान स्वरूप : वर्तमान समय में श्री दरबार साहिब तीन-मंजिला इमारत के रूप में सुशोभित है। दीवारों और गुम्बद पर सोने के पत्र चढ़े हुए हैं तथा मनमोहक चित्रकारी की गई है। श्री दरबार साहिब के पिछली तरफ सरोवर तक संगमरमर की बनी सीढ़ियां जाती हैं। परंपरा के अनुसार पंचम पातशाह ने यहीं 'टक' लगाकर सरोवर की खुदाई आरंभ करवाई थी। यह स्थान 'हरि की पौड़ी' कहलाता है।

यहां का पवित्र सरोवर समस्त गुरुधामों के सरोवरों से बड़ा है। सरोवर की उत्तरी दिशा २८९ मीटर, दक्षिणी दिशा २८३ मीटर, पूरबी दिशा २३० मीटर एवं पश्चिमी दिशा २३३ मीटर है। सरोवर में बारी दोआब की सभराओं शाखा में से एक नहर के द्वारा जल पहुंचाया जाता है। इस नहर की सेवा सन् १८३३ ई. में महाराजा जींद सरदार रघबीर सिंघ ने करवाई थी।

सरोवर की परिक्रमा में पहले कई बुंगे बने हुए थे। अब इन्हें ठीक करके यात्रियों के ठहरने के लिए प्रयोग किया जाता है। सन् १९७१ ई. के बाद से बाबा जीवन सिंघ द्वारा करवाई गई कार सेवा के फलस्वरूप परिक्रमा को पक्का करके चारों ओर बरामदे बना दिए गए हैं। उत्तर में 'गुरु का लंगर' सुशोभित हैं।

गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब : परिक्रमा की पूरबी दिशा में गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब सुशोभित है। यह वो पावन स्थान है जहां विराजमान होकर श्री गुरु अरजन देव जी

सरोवर का निर्माण कराया करते थे। बाद में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब इस स्थान पर दीवान सजाया करते थे।

तीन अन्य ऐतिहासिक कुएँ : श्री तरनतारन साहिब नगर में तीन ऐतिहासिक कुएँ भी हैं। श्री दरबार साहिब से कुछ दूरी पर दक्षिण दिशा में 'गुरु का खूह' है, जिसे पंचम पातशाह ने खुदवाया था। दूसरा कुआँ 'बीबी भानी जी का खूह' कहलाता है। एक अन्य कुआँ बाबा फूला सिंघ नामक गुरुद्वारे में स्थित है।

परंपरा के अनुसार 'गुरु का खूह' के निकट पंचम पातशाह एक कुटिया में विश्राम किया करते थे।

कुष्ठ-मुक्ति का केंद्र : पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की मानवता के प्रति सेवा अद्वितीय है। गुरु जी अपने कर-कमलों से कुष्ठ रोगियों की तीमारदारी किया करते थे। गुरु जी द्वारा आरंभ किया गया यह आश्रम श्री दरबार साहिब से कुछ ही दूरी पर स्थित है और अब नेशनल लेप्रोसी मिशन के अन्तर्गत आकर एक बड़े अस्पताल के रूप में परिवर्तित हो चुका है।

यह भी परंपरा रही है कि श्री तरनतारन साहिब के पवित्र सरोवर में स्नान करने से कुष्ठ रोग दूर हो जाता है, इसलिए हज़ारों की संख्या मे संगत सरोवर में स्नान करने के लिए आती हैं। इस कारण पवित्र सरोवर को 'दूख निवारन' भी कहा जाता है।

श्री तरनतारन साहिब में अमावस्या का पर्व विशेष रूप से मनाया जाता है। हर अमावस्या वाले दिन यहां श्रद्धालुओं की भारी संख्या दर्शन-स्नान के लिए आती है।

इसी प्रकार पंचम पातशाह का शहीदी दिवस भी यहां बड़ी श्रद्धा-भावना के साथ मनाया जाता है। ठंडे-मीठे जल की छबीलें लगती हैं। साधसंगत बड़ी संख्या में पहुंचती है।

श्री तरनतारन साहिब नगर की वर्तमान स्थिति : यह नगर पहले जिला श्री अमृतसर की तहसील था, परंतु अब यह जिला बन चुका है। अब इसका आर्थिक विकास भी तीव्र गति से हो रहा है। यह लोक सभा का संसदीय क्षेत्र भी रहा है, परंतु अब यह क्षेत्र खडूर साहिब नामक लोक सभा क्षेत्र के अधीन आता है।

इस प्रकार आर्थिक विकास के जरिए सामाजिक विकास को प्राप्त करने के गुरु साहिबान के नजरिये का बड़ा शक्तिशाली उदाहरण है— श्री तरनतारन साहिब।

मनु वणजारा

*-डॉ. परमजीत कौर**

अन्त:करण (भीतरी इन्द्रिय, सुख-दुख के अनुभव का माध्यम, मन, चित्त, जिसके संयोग से वाह्य इन्द्रियां क्रियाशील होती हैं) के चार भेद माने गए हैं — मन, बुद्धि, चित्त तथा अहंकार।

मन संकल्प-विकल्प करता है। बुद्धि विवेक से निश्चय करने वाली शक्ति है, मन को गलत कार्य करने से रोकती है। चित्त याद रखता है। अहंकार द्वारा संसार के पदार्थों के साथ संबंध प्रतीत होता है। मन इन्द्रियों का नेता है। आँख, कान आदि ज्ञानेन्द्रियां मन के संकल्प द्वारा कार्य करती हैं। मन ही इन्द्रियों को नियंत्रित करता है। बुद्धि मन को प्रेरित करती है, मन सोचता है, विचार करता है, प्राप्ति का उद्यम करता है।

जिस तरह के विचार हम अपनी चेतना-शक्ति में एकत्र करेंगे, वैसे ही संस्कार बन जाएंगे। जब मनुष्य की बुद्धि पर अज्ञान का परदा पड़ जाता है तब मन प्रबल हो जाता है, मनुष्य मन के पीछे चलने लगता है।

मन का अपना कोई रूप नहीं होता। जिस तरह के संस्कार प्रबल होते हैं, मन वैसा ही बन जाता है। जब माया का प्रभाव प्रबल होता है तो मन माया की बातें करता है। जब माया के प्रभाव से मुक्त होकर स्थिर हो जाता है तो मन परमात्मा से सम्बंधित वार्तालाप करने लगता है :

— इहु मनु सकती इहु मनु सीउ॥
इहु मनु पंच तत को जीउ॥
इहु मनु ले जउ उनमनि रहै॥
तउ तीनि लोक की बातै कहै॥ (पन्ना ३४२)
— इहु मनु करमा इहु मनु धरमा॥
इहु मनु पंच ततु ते जनमा॥
साकतु लोभी इहु मनु मूड़ा॥
गुरमुखि नामु जपै मनु रूड़ा॥ (पन्ना ४१५)

माया के मोह में लिप्त हुआ मन कर्मकाण्ड से सम्बधित धार्मिक रस्में करता रहता है तथा जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है।

श्री गुरु नानक देव जी समझाते हैं कि मन अहंकार के अधीन अहंकारी होकर कर्म करता है। यह गुरु-शबद की सहायता से तीन गुणों को समाप्त कर इस घेरे को चीरकर बाहर आ सकता है :

त्रै सत अंगुल वाई कहीऐ

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६*

तिसु कहु कवनु अधारो ॥ (पन्ना ९४४)

मन जैसी संगति करता है वैसे ही संस्कार बन जाते हैं :

ए मन जैसा सेवहि तैसा होवहि
तेहे करम कमाइ ॥ (पन्ना ७५५)

मन मलिन हो जाए तो सारा किरदार मैला हो जाता है, आचरण पवित्र नहीं रहता :

-मनि मैलै सभु किछु मैला
तनि धोतै मनु हछा न होइ ॥ (पन्ना ५५८)
— मनु वेकारी वेड़िआ वेकारा करम कमाइ ॥
(पन्ना ५८८)

ध्यान मान-तिरस्कार में ही फंसा रहता है, स्थिर नहीं रहता :

कबहू जीअड़ा ऊभि चड़तु है
कबहू जाइ पइआले ॥
लोभी जीअड़ा थिरु न रहतु है
चारे कुंडा भाले ॥ (पन्ना ८७६)

मन ज्योति-स्वरूप है, निर्मल है, लेकिन जब विचारों की, वासनाओं की लहरें चलती हैं, तो हमारे विकारों की गंदगी मन को मलिन कर देती है, जैसे समुन्दर का पानी स्वच्छ-निर्मल होता है, मगर आंधी चलने से बाहर की मिट्टी पड़ जाने से पानी गंदा हो जाता है। जब तूफान समाप्त हो जाता है, पानी स्थिर हो जाता है, तब फिर निर्मल हो जाता है। इसी तरह अंदर तूफान पैदा करने वाले विचारों को रोककर मन पवित्र हो सकता है, परमात्मा की हजूरी का आनंद उठा सकता है :

है हजूरि कत दूरि बतावहु ॥
दुंदर बाधहु सुंदर पावहु ॥ (पन्ना ११६०)

जैसे मेढक कीचड़ में रहता हुआ कीचड़ में खिले कमल की सुंदरता से प्रभावित नहीं होता, कीचड़ में ही मस्त रहता है, प्रसन्न रहता है, वैसे ही मन विकारों की गंदगी में रहता हुआ प्रसन्न होता है और गुरु के उपदेश से निर्लिप्त रहता है :

— इहु मनु माइआ मोहिआ
वेखणु सुनणु न होइ ॥ (पन्ना ८३)
— ऐब तनि चिकड़ो इहु मनु मीडको कमल की सार नही मूलि पाई ॥ (पन्ना २४)

गुरु की शरण में आकर ही स्थिरता प्राप्त की जा सकती है। गुरु के शबद की कमाई द्वारा नाम को मन का आधार बनाने से यह चंचल मन अपने स्वरूप में टिक जाता है :

— इसु मन कउ होरु संजमु को नाही विणु सतिगुर की सरणाइ ॥ (पन्ना ५५८)
— इहु मनु चलतउ सच घरि बैसै
नानक नामु अधारो ॥
आपे मेलि मिलाए करता लागै साचि पिआरो ॥
(पन्ना ९३८)
— मनु परबोधहु हरि कै नाइ ॥
दह दिसि धावत आवै ठाइ ॥ (पन्ना २८८)

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार मन को शरीर रूपी दुकान में बैठकर सहज तथा सत्य

को व्यापार करने का उत्तरदायित्व सौंपा गया है :

तनु हटड़ी इहु मनु वणजारा ॥
नानक सहजे सचु वापारा ॥ (पन्ना ९४२)

व्यापार करने के लिए पूंजी की आवश्यकता होती है तथा व्यापार के बारे में पूरा ज्ञान तथा समझ भी जरूरी है, तभी लाभ प्राप्त होता है। श्री गुरु अमरदास जी समझा रहे हैं कि अपने गुरु से समझ आई है कि आत्मिक जीवन की कमाई करने के लिए परमात्मा का नाम ही मेरी असली पूंजी हो सकती है। मेरा मन इस व्यापार का व्यापारी बन गया है :

हरि रासि मेरी मनु वणजारा
सतिगुर ते रासि जाणी ॥ (पन्ना ९२१)

मन व्यापारी है तथा व्यापारी मन ने परमात्मा के नाम की पूंजी व्यापार में लगानी है, आत्मिक आनंद रूपी लाभ प्राप्त करना है। इस व्यापार का सारा ज्ञान गुरु से लेना है। गुरु से ज्ञान प्राप्त कर, गुरमति मार्ग पर चलकर ही यह व्यापार किया जाए तो अच्छा होता है। इस धन की कीमत बहुत ज्यादा है :

गुरमती हरि नामु वणजीऐ
अति मोलु अफारा राम ॥ (पन्ना ५७०)

जिस मनुष्य को गुरु ने आत्मिक जीवन की समझ दे दी, उसके हृदय के अंदर सदा परमात्मा के गुण-कीर्तन के कीमती रत्नों का व्यापार होता है, उसको परमात्मा की भक्ति की कमाई प्राप्त होती है :

रतन पदारथ वणजीअहि
सतिगुरि दीआ बुझाई राम ॥
लाहा लाभु हरि भगति है
गुण महि गुणी समाई राम ॥ (पन्ना ५६९)

नाम का सरमाया अंदर ही है। इसको एकत्र करने के लिए बाहर नहीं भटकना पड़ता। इसके लिए किसी का मोहताज नहीं होना पड़ता :

मन मेरिआ अंतरि तेरै निधानु है
बाहरि वसतु न भालि ॥ (पन्ना ५६९)

आत्मिक स्थिरता में टिककर यह पूंजी एकत्र की जा सकती है :

— गुरमुखि सभु वापारु भला
जे सहजे कीजै राम ॥
अनदिनु नामु वखाणीऐ
लाहा हरि रसु पीजै राम ॥ (पन्ना ५६८)
— सहजे सचु धनु खटिआ थोड़ा कदे न होइ ॥
(पन्ना १०९२)

इसके लिए सर्वप्रथम मन को बाहर भटकने से रोककर स्थिरावस्था में लाना है, उसे अपने घर लाना है :

— मेरे मन परदेसी वे पिआरे आउ घरे ॥
(पन्ना ४५१)
— कहा चलहु मन रहहु घरे ॥ (पन्ना ४१४)
— मन रे थिरु रहु मतु कत जाही जीउ ॥
बाहरि ढूढत बहुतु दुखु पावहि

घरि अंम्रितु घट माही जीउ ॥ (पन्ना ५९८)

श्री गुरु नानक देव जी इस वास्तविकता को दृढ़ करवाते हुए समझाते हैं कि हे मन! तू अपने अंदर ही प्रभु-चरणों में टिका रह! नाम-अमृत की खोज में बाहर मत भटकता रह! नाम-अमृत यदि तू बाहर ढूंढने चल पड़ा तो बहुत दुखी होगा। आत्मिक जीवनदायक नाम-अमृत तेरे हृदय में ही है। इसके लिए तन-मन खोजना पड़ता है। यह ध्यान रखना है कि मन तथा ज्ञानेन्द्रियां विकारों की तरफ तो नहीं जा रहीं :

तनु मनु खोजे ता नाउ पाए ॥
धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ (पन्ना ११०)

गुरु के सम्मुख रहने वाला मनुष्य मन को बाहर भटकने से रोककर अपने शरीर के अंदर रहकर प्रभु-नाम का वणज-व्यापार करता है तथा नाम-खजाना प्राप्त कर लेता है :

— आपणे घर अंदरि रसु भुंचु तू
लाहा लै परथाए राम ॥ (पन्ना ५६८)
— काइआ अंदरि वणजु करे वापारा
नामु निधानु सचु पावणिआ ॥ (पन्ना ११५)

इसके लिए यत्न यह करना है कि गुरु की शरण लेनी है। यह धन गुरु द्वारा प्रदत्त आत्मिक प्रकाश से साधसंगति में मिलता है, इसलिए साधसंगति में जाकर प्रभु का गुण-कीर्तन करना चाहिए :

भाई रे हरि हीरा गुर माहि ॥
सतसंगति सतगुरु पाईऐ
अहिनिसि सबदि सलाहि ॥१ ॥रहाउ ॥
सचु वखरु धनु रासि लै पाईऐ गुर परगासि ॥
जिउ अगनि मरै जलि पाइऐ
तिउ त्रिसना दासनि दासि ॥ (पन्ना २२)

यह याद रखना है कि मन ने सत्य का व्यापार करना है :

सचु वापारु करहु वापारी ॥
दरगह निबहै खेप तुमारी ॥ (पन्ना २९३)

जिनके पास नाम-धन की पूंजी नहीं है, वे खोटा व्यापार करते हैं। उनके मन तथा तन दोनों खोटे हो जाते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकार मन को मलिन कर देते हैं। मन सदा अशान्त रहता है। शरीर रोगग्रस्त हो जाता है :

जिना रासि न सचु है किउ तिना सुखु होइ ॥
खोटै वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइ ॥
फाही फाथे मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइ ॥
(पन्ना २३)

सरमाया एकत्र करने के बाद उस सरमाये की सम्भाल करनी होती है। यदि पूँजी नष्ट हो जाए या व्यापारी मार्ग से भटक जाए तो वह एकत्र की गयी पूँजी हाथ से गंवा सकता है :

वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥
तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥
अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥
(पन्ना २२)

व्यापार करने का ढंग बताते हुए गुरु साहिब समझाते हैं कि परमात्मा का दर सदा कब्जे में किए रहो, कभी मत छोड़ो! यह दर अटल है। जो प्रभु का दर नहीं छोड़ता, वह ऐसा आत्मिक ठिकाना प्राप्त कर लेता है कि कभी डगमगाता नहीं। दुख दूर हो जाता है, क्योंकि वह मंद (गलत) कर्म नहीं करता :

मन पिआरिआ जीउ मित्रा
हरि लदे खेप सवली ॥
मन पिआरिआ जीउ मित्रा
हरि दरु निहचलु मली ॥
हरि दरु सेवे अलख अभेवे
निहचलु आसणु पाइआ ॥
तह जनम न मरणु न आवण जाणा
संसा दूखु मिटाइआ ॥
चित्र गुपत का कागदु फारिआ
जमदूता कछू न चली ॥
नानकु सिख देइ मन प्रीतम
हरि लदे खेप सवली ॥ (पन्ना ७९)

जो मनुष्य अपने मूल (प्रभु) को नहीं पहचानता, उसे नहीं समझता, उसका सरमाया उसके हृदय के अंदर वैसे ही पड़ा रहता है। वह नाशवान पदार्थों के मोह में पड़कर, झूठे पदार्थों के पीछे लगकर नाम-वस्तु से रहित जीवन व्यतीत करता है। उसको यह पूँजी प्राप्त नहीं होती। जो गुरु की शरण में आकर परमात्मा में ध्यान लगाता है, वह अपने हृदय में ही अपना असली सरमाया खोज लेता है, प्राप्त कर लेता है :

विणु रासी वापारीआ तके कुंडा चारि ॥
मूलु न बुझै आपणा वसतु रही घर बारि ॥
विणु वखर दुखु अगला
कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥ (पन्ना ५६)

यदि मन गुरु के अनुकूल हो जाता है तो मनुष्य की सारी ज्ञानेन्द्रियां रूपी दुकानें (हाट) शांति, अडोलता तथा आनंद की दुकानें बन जाती हैं। नाम का सौदा कमाकर दुख नहीं सहना पड़ता, सदा आनंद बना रहता है। सांसारिक व्यापार करने से माया की भूख कभी मिटती नहीं, चाहे करोड़ों-अरबों का धन लाभ हो जाए। हरि-नाम का व्यापार करने से सब प्रकार की भूख-तृष्णा मिट जाती है :

नामु खेती बीजहु भाई मीत ॥
सउदा करहु गुरु सेवहु नीत ॥ ३ ॥
सांति सहज सुख के सभि हाट ॥
साह वापारी एकै थाट ॥ (पन्ना ४३०)

हरि-नाम के व्यापार में बहुत कठिनाइयां आती हैं। मन-व्यापारी इन कठिनाइयों के समक्ष कमजोर पड़ सकता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकार मन को अस्थिर कर देते हैं। मन दुविधाग्रस्त हो जाता है। अहंकार की ऊंची घाटी को पार करना कठिन हो जाता है। भक्त रविदास जी अपने विचार प्रकट कर रहे हैं कि जिन रास्तों से मेरा टांडा जाना है, वे

कठिन पहाड़ी रास्ते हैं। मेरा मन (बैल) कमजोर है। प्रभु के आगे मेरी प्रार्थना है कि मेरी पूंजी की रक्षा आप करें! आंख, कान, जीभ आदि ज्ञानेन्द्रियों का समूह वणजारे का टांडा है। इन्होंने नाम की पूँजी उठानी है, लेकिन इनकी राह में रूप, रस, गंध आदि दुर्गम घाटियां हैं। मैं प्रभु के नाम का व्यापारी हूं। ऐसा व्यापार कर रहा हूं जिसमें मुझे सहज अवस्था की कमाई प्राप्त हो। प्रभु की कृपा से ही मैंने इस पूँजी को लादा है :

घट अवघट डूगर घणा
इकु निरगुणु बैलु हमार॥
रमईए सिउ इक बेनती मेरी
पूंजी राखु मुरारि॥ १॥
को बनजारो राम को
मेरा टांडा लादिआ जाइ रे॥ (पन्ना ३४५)

यदि कोई सौभाग्यशाली प्राणी इन कठिनाइयों, बाधाओं को गुरु-कृपा से पार कर जाए तो इस व्यापार में लाभ ही लाभ है :

— लाहा अहिनिसि नउतना
परखे रतनु वीचारि॥
वसतु लहै घरि आपणै चलै कारजु सारि॥
वणजारिआ सिउ वणजु
करि गुरमुखि ब्रहमु बीचारि॥ (पन्ना ५६)
— रतन पदारथ वणजीअहि
सतिगुरि दीआ बुझाई राम॥
लाहा लाभु हरि भगति है
गुण महि गुणी समाई राम॥ (पन्ना ५६९)

हरि-नाम-सिमरन के व्यापार में वही मनुष्य लगते हैं, जिनके मस्तक पर सफलता की मणी चमकती है। गुरु की मति की बरकत से उनका मन प्रभु की हजूरी में टिक जाता है। प्रभु के गुण-कीर्तन में उनकी लगन लग जाती है :

हरि वापारि से जन लागे
जिना मसतकि मणी वडभागो राम॥
गुरमती मनु निज घरि वसिआ
सचै सबदि बैरागो राम॥ (पन्ना ५६८)

कोई विरला ही अपने मन को लाभ वाले सच्चे नाम का व्यापारी बनाने में समर्थ होता है :

— इहु वापारु विरला वापारै॥
नानक ता कै सद बलिहारै॥ (पन्ना २८३)
— एहु धनु तिना मिलिआ
जिन हरि आपे भाणा॥
कहै नानकु हरि रासि
मेरी मनु होआ वणजारा॥ (पन्ना ९२१)

जून १९८४ की एक आप-बीती घटना

*- ज्ञानी प्रीतम सिंघ**

सी. आर. पी. एफ. (क्रेंद्रीय रिजर्व पुलिस बल) द्वारा श्री दरबार साहिब पर प्रथम जून को फायरिंग शुरू की गई थी। बाद में कर्फ़्यू लग गया था, जिसमें ३ जून को कुछ समय के लिए ढील दी गई थी। कर्फ़्यू के कारण मैं ३ जून की रात को यहीं पर ठहरा था। भाई हरबंस सिंघ, भाई सवरन सिंघ फराश और भाई हरी सिंघ आखिर तक मेरे साथ रहे थे। ४ जून को अमृत वेले (बेला) मैं श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में बैठा, हुकमनामा लिया। भाई गुरशरन सिंघ का रागी जत्था श्री अकाल तख़्त साहिब के नीचे परिक्रमा में आसा की वार का कीर्तन कर रहा था। लगभग ४:४० बजे का समय होगा कि फ़ौज की तरफ से लगभग १०-११ गोले फेंके गए, जिससे ऊँची इमारतों— सिंधियों की धर्मशाला, नकई बुंगा, उच्चे (ऊंचे) चौबारे और बुंगा रामगढ़िया की मीनारों को नुकसान पहुँचा। जब गोलों की आवाज आई तो भाई गुरशरन सिंघ रागी का जत्था भाग कर श्री अकाल तख़्त साहिब पर आ गया। कुछ मिनट पश्चात ही गोलों की बौछार शुरू हो गई। यह देख कर अपने स्टाफ की सलाह से हम लोग श्री अकाल तख़्त साहिब के अंदर, जहाँ गुरु महाराज जी का प्रकाश था, आ गए।

शाम को सोदरु की चौंकी करवा कर रहरासि साहिब का पाठ किया। मर्यादा के अनुसार शस्त्र दिखाए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का सुख-आसन कर कोठा साहिब में विराजमान कर दिया।

पाँच जून को अमृत वेले हुकमनामा लिया। भाई गुरशरन सिंघ के रागी जत्थे ने आसा की वार का कीर्तन किया। अरदास कर कड़ाह प्रसादि की देग बांटी। दिन में हम लोग बारी-बारी से गुरु महाराज की हजूरी में बैठते रहे। सारा दिन चारों तरफ से गोलियों की बौछार होती रही। शाम को स्टाफ के ५-६ आदमी चले गए। मेरे साथ केवल ये तीन लोग ही रहे। शाम को लाईट नहीं थी। लोगों ने सोदरु की चौंकी, रहरासि साहिब और अरदास के पश्चात् शस्त्रों को म्यान में डाल कर अलमारी में, जहाँ उनकी जगह थी, विराजमान कर दिया।

रात के लगभग ८:०० बजे होंगे। अंधेरा होने के कारण कुछ दिखाई तो दे नहीं रहा था, परन्तु परिक्रमा में जूतों की आवाज से साफ़ पता चलता था कि फ़ौज आ गई है। उन्होंने श्री अकाल तख़्त साहिब के सामने आकर पहले रौशनी का गोला और फिर आँसू गैस छोड़ी। बहुत बुरी हालत थी। हम लोगों ने गले में पहना अंगोछा भिगो कर

**भूतपूर्व हेॅड ग्रंथी, श्री अकाल तख्त साहिब, श्री अमृतसर।*

आँखों पर फेरा। दोनों तरफ से बहुत ज़ोरदार फायरिंग हो रही थी। धीरे-धीरे फ़ौज की तरफ से गोली कम होती गई। उस समय ऊपर की छतों से भाई भिंडरावाला के साथियों ने जयकारे छोड़े। इससे लगता था कि बहुत सारी फ़ौज, जो सामने आई थी, मारी गई है। (सरकारी सूत्रों के अनुसार पहले ६० कमांडो वहां भेजे गए थे, जिनमें से ५९ मारे गए।)

इसके बाद १०:०० बजे के करीब टैंक परिक्रमा में दाख़िल हुए और 'दुखभंजनी बेरी' एवं 'शहीद बुंगा' वाली दिशा तरफ़ से लगातार टैंकों से रात भर गोलाबारी होती रही। इस दौरान भाई भिंडरांवाला और उनके साथी नीचे भोरे में आ गए प्रतीत होते थे। हम नज़दीकी दीवार की ओट में आ गए थे। रात भर गोले ओलों की भांति गिरते रहे। मलबा गिर कर हम पर भी पड़ता रहा।

चार जून को भाई भिंडरांवाला श्री अकाल तख़्त साहिब के अंदर गुनगुना रहे थे :

— सूरा सो पहिचानीऐ जो लरै दीन के हेत ॥
पुरज़ा पुरज़ा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥

(पन्ना ११०५)

— जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥

(पन्ना १४१२)

६ जून प्रात:काल ८:०० बजे का वक्त होगा। जहाँ ज्ञानी साधू सिंघ भौरा के क्वार्टर के नीचे ५-६ शौचालय बने थे, भाई भिंडरांवाला अपने साथियों सहित शौच के लिए आए। यहाँ नल से हाथ धोकर साथियों के साथ बात कर रहे थे। हम लोग इस दीवार की दूसरी तरफ सहारा लेकर बैठे थे। फिर वे भोरे के अंदर चले गए। ८: ३० बजे के करीब भाई अमरीक सिंघ शौच के लिए आए। अचानक एक गोला लगने से दीवार में लगा दरवाज़ा खुल गया। मुझे और मेरे साथियों को बैठा देख कर भाई अमरीक सिंघ कहने लगे, ''सिंघ साहिब जी! नीचे बैठे आप अच्छे नहीं लगते, किसी कमरे में चारपाई पर बैठ जाते।'' मैंने कहा कि ''सभी कमरों में गोलियाँ बरस रही हैं। यही जगह महफूज़ है।'' उस समय श्री अकाल तख़्त साहिब का ऊपरी हिस्सा गिरा हुआ साफ़ दिखाई दे रहा था और अभी भी गोलाबारी जारी थी। मैंने उनसे पूछा, ''आपका क्या कार्यक्रम है?'' उन्होंने जवाब दिया, ''श्री अकाल तख़्त साहिब की दशा बहुत ख़राब हो गई है। ऐसी सूरत में हमारा जिंदा रहना योग्य नहीं है। हमने प्रात: काल ७:३० बजे शहीद होने का कार्यक्रम बनाया था, परन्तु अब भाई भिंडरांवाला के साथ परामर्श कर ९:३० बजे का कार्यक्रम बनाया है। कौम भी बहुत मारी गई है। हम बच भी गए तो लोग हमें नहीं छोड़ेंगे।'' उन्होंने अपने दिवंगत पिता भाई करतार सिंघ की तरफ इशारा कर कहा, ''यह भी अच्छा है कि जल्दी-जल्दी बड़े संत जी (पिता) के पास जाएंगे।'' उस समय भाई अमरीक सिंघ अपने साथियों की ड्यूटी लगा रहे थे। किसी से कह रहे थे— ''तुम

मेरे घर श्री अखंड पाठ साहिब रखवाना!'' एक साथी से कह रहे थे— ''लगभग एक महीने बाद मेरे घर लड़का पैदा होगा, तुम लड्डू बाँटना!... आदि''

भाई अमरीक सिंघ ने हमसे भी पूछा, ''आपके बाहर निकलने का कोई साधन है?'' मेरे साथी मजबूर कर रहे थे कि बाहर के लोहे वाले दरवाज़े का ताला खोल कर हम लोग बाहर निकल जाएं। इस ताले की चाबी भाई भिंडरांवाला के साथियों के पास थी। मैंने कहा, ''अगर आप आज्ञा दें तो बाहर वाला ताला खोल कर हम बाहर निकल जाएं?'' उन्होंने कहा, ''निकल जाओ, मगर फ़ौज नहीं छोड़ेगी! कोई तरीका मिलता है तो निकल जाओ।'' हम लोग दरवाज़ा खोल कर भागते हुए बोहड़ (बरगद) वाली हवेली चले गए, जहाँ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कर्मचारी रहते थे। सेवादार बलबीर सिंघ से दरवाज़ा खुलवा कर उसके घर गए। यह लगभग ९ बजे की बात होगी। यहां पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लगभग १०-१२ कर्मचारी परिवार सहित ठहरे हुए थे।

हम लोग ६ और ७ जून की रात वहां एक सेवादार के घर पर रहे। ८ जून को फ़ौज ने आकर दरवाज़ा खटखटाया। अंदर आकर हमसे पूछा, ''यहाँ क्यों ठहरे हो?'' मैंने अपने बारे में बताया और कहा कि बाकी भी हमारे ही कर्मचारी हैं। अपना पहचान-पत्र दिखाया।'' फौजी कहने लगे कि तुम सभी आतंकवादी हो। उन्होंने और भी फ़ौजी बुला लिए। घर की तलाशी ली, लेकिन हथियार या कोई संदिग्ध वस्तु न मिली। फिर उन्होंने कछहरे के अलावा हमारे सभी कपड़े ज़बरदस्ती उतरवा लिए और सबको एक लाईन में खड़ा कर लिया। उन फौजियों के पास एक एल. एम. जी. थी। वे हमें गोली मारने ही वाले थे कि उनमें से एक ने कहा कि ''मैगज़ीन में केवल दो ही गोलियाँ हैं, नया मैगज़ीन भर लो।'' हां, पहले फौजियों में एक सिक्ख सिपाही भी था। वह दौड़ कर गया और बी. एस. एफ. के मेजर रत्न सिंह (हरियाणवी जाट) को हमारे बारे में बता कर उसे अपने साथ ले आया। फौजी हमें गोली मारने ही वाले थे कि रत्न सिंह ने आकर कहा, ''ठहरो, इन्हें मेरे पास मंदिर (काठियां वाला बाज़ार) भेज दो।'' हमने दोबारा कपड़े पहन लिए।

वहां गए। गली में ३०-४० सिक्खों को पीछे हाथ बाँध कर पहले ही बैठाया हुआ था और फौजी उन्हें राईफलों, लाठियों व जूतों की ठोकरों से बुरी तरह से मार रहे थे। रत्न सिंह ने हमसे पूछा, ''तुम आतंकवादी हो?'' मैंने बताया कि ''मैं श्री अकाल तख़्त साहिब का हेंड ग्रंथी हूं।'' वो कहने लगा, ''हमने अनाऊंसमेंट की थी। तुम पहले गिरफ़्तार क्यों नहीं हुए?'' मैंने बताया कि ''हम शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के क्वार्टरों में थे। हमें कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी।'' उसने कहा कि ''आज सभी आतंकवादी हैं। किसी के साथ कोई लिहाज़ नहीं किया

जाएगा।'' हमारी तलाशी ली गई। जेब में से पैसे निकाल लिए। एक फ़ौजी हवलदार मुझसे पूछने लगा, ''तू सिक्ख है कि मुसलमान?'' मैंने कहा, ''मैं श्री गुरु रामदास जी का सिक्ख हूं और अपने गुरु की सेवा कर रहा हूं।'' उस हवलदार ने मुझे गाली दी और मेरी छाती पर बंदूक रख कर कहने लगा, ''बुला अपने गुरु रामदास को, वो तेरी मदद करे!'' मेरे मन ही मन में से एक हूक निकली कि आज यह फ़ौज मेरे गुरु को ललकार रही है। मन ही मन गुरु को याद किया, ''हे सच्चे पातशाह! अपने नाम की लाज रखो! अपने बिरद (सेवक) का मान रखो।'' रत्न सिंह राउंड करता हुआ फिर वहां आया। इतने में फौजियों को चाय-पानी पिलाने आए कुछ हिंदू भाइयों ने मुझे पहचान लिया और मेजर के पास मेरी सिफारिश की। उसने मुझे अपने पास बुलाया और बैठने के लिए कुर्सी भी दी। मानों यह मेरे गुरु ने स्वयं पहुँच कर अपने सेवक की लाज रखी थी।

मैंने मेजर से कहा, ''फ़ौज को बहुत अनुशासन वाली समझा जाता है, परंतु आप में फ़ौज वाला कोई उसूल नहीं है। सबने कसाइयों वाला काम पकड़ा हुआ है।'' उसके दिल में शायद दया आई। मुझे गले लगाकर कहने लगा, ''मैं आपको बचाने के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रयास करूँगा।'' फिर उसने एरिया इंचार्ज के साथ वायरलेस पर बात की। बाद में मुझसे कहने लगा, ''आप धार्मिक व्यक्ति हो, इसलिए मैं जो कुछ पूछूंगा, सच-सच बताना!'' मैंने जवाब दिया, ''बिलकुल सच बताऊँगा।'' उसने पूछा, ''क्या आपके साथ के १२-१३ व्यक्ति वास्तव में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कर्मचारी हैं?'' मैंने गवाही भरी। फिर उसने मेरे से बाकी ४०-५० आदमियों के में बारे पूछा। उनमें से मैं किसी को भी नहीं जानता था, इसलिए मैंने कह दिया कि हो सकता है इनमें कुछ नये कर्मचारी हों, जिन्हें मैं नहीं जानता। उसने कहा, ''नहीं, ये सभी आतंकवादी हैं।'' (बाद में वे सभी मार दिए गए।)

मेजर ने कहा कि ''मैं आपको किसी भी सूरत में नहीं छोड़ सकता, इसलिए बेहतर रहेगा कि आपको मिलिटरी कैंप भेज दिया जाए। वहाँ से कुछ दिन बाद आपको छोड़ दिया जाएगा।'' फिर एक फ़ौजी हमें माई सेवां बाज़ार की तरफ लेकर चल पड़ा। रास्ते में हमने अनेक ही सिक्खों की रुलती हुई लाशें देखी। बाज़ार में से फकीर सिंघ की दुकान के सामने से हमें एक ट्रक में बैठाकर कैंप लगाया गया। यहाँ से १७ जून को सिंघ साहिबान की मीटिंग के समय श्री दरबार साहिब लाया गया और बाद में रिहा किया गया।

ख़बरनामा

गुरुद्वारा गिआन गोदड़ी साहिब से सम्बन्धित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिष्टमंडल ने उत्तराखंड के राज्यपाल से की मुलाकात

श्री अमृतसर : २८ अप्रैल : गुरुद्वारा गिआन गोदड़ी साहिब के मामले से सम्बन्धित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के एक उच्च स्तरीय शिष्टमंडल ने उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (रिटायर्ड) स. गुरमीत सिंघ के साथ मुलाकात करके उन्हें मसले का जल्द हल करने से सम्बन्धित माँग-पत्र सौंपा। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के इस शिष्टमंडल में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. रघूजीत सिंघ (विर्क), महासचिव जत्थेदार करनैल सिंघ पंजोली, पूर्व वरिष्ठ उपाध्यक्ष भाई रजिंदर सिंघ महिता, सिक्ख मिशन छत्तीसगढ़ के इंचार्ज स. गुरमीत सिंघ (सैणी) और विशाखापट्टनम के सिक्ख नेता डॉ. डीएस आनंद शामिल थे। शिष्टमंडल के नेताओं ने उत्तराखंड के राज्यपाल को सिक्खों के ऐतिहासिक स्थान गुरुद्वारा गिआन गोदड़ी साहिब का मसला हल करवाने के लिए हस्तक्षेप करने की अपील की।

इस संबंध में जानकारी देते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. रघूजीत सिंघ (विर्क) ने बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी गुरुद्वारा गिआन गोदड़ी साहिब के मामले को लेकर गंभीर है और इसके हल के लिए लगातार प्रयत्न कर रही है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिष्टमंडल की तरफ से उत्तराखंड के माननीय राज्यपाल से मिल कर माँग की गई है कि हरि की पौड़ी के स्थान पर गुरुद्वारा गिआन गोदड़ी साहिब को पुन: स्थापित किया जाये, जिससे सिक्ख कौम के इस ऐतिहासिक स्थान का सिक्ख भावनाओं के अनुसार मसला हल हो सके। उन्होंने बताया कि उत्तराखंड के राज्यपाल ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिष्टमंडल की माँग को संजीदगी के साथ लेते हुए मसले को जल्द हल करने का भरोसा दिया है। इस दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिष्टमंडल ने उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (रिटायर्ड) स. गुरमीत सिंघ को सम्मानित भी किया। ज़िक्रयोग्य है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी पहले भी कई बार अपने जनरल इजलास के दौरान प्रस्ताव पारित कर भारत व सम्बन्धित राज्य की सरकारों को भेज कर गुरुद्वारा गिआन गोदड़ी साहिब के मसले के जल्द हल करने की अपील करती आ रही है। इसके अलावा विभिन्न समय पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कई नेता भारत के प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और सम्बन्धित राज्य की सरकार के मुख्यमंत्री से भी मिल चुके हैं।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा बुलाई पंथक सभा में बंदी सिंघों की रिहाई के लिए सामूहिक संघर्ष शुरू करने का फ़ैसला

श्री अमृतसर : ११ मई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से बंदी सिंघों की रिहाई को लेकर बुलाई गई पंथक सभा के दौरान समूची जत्थेबंदियों और पंथदर्दियों द्वारा एकजुटता के साथ संघर्ष आरंभ करने का निर्णय लिया गया। यह सभा जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब की तरफ से हुए आदेश के अंतर्गत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय सरदार तेजा सिंघ समुंदरी हाल में बुलायी गई। इस पंथक सभा में सिक्ख कौम की विभिन्न धार्मिक, राजसी तथा सामाजिक जत्थेबंदियों ने एकजुटता का प्रकटावा करते हुए बंदी सिंघों की रिहाई के लिए किये जाने वाले यत्नों और आरंभ किए जाने वाले हर संघर्ष में साथ देने की वचनबद्धता प्रकट की।

सभा के दौरान बंदी सिंघों की रिहाई से सम्बन्धित तीन अहम प्रस्ताव पारित किये गए, जिनके अनुसार एक सामूहिक समिति स्थापित करने, देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृहमंत्री सहित विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री व राज्यपाल से मिलने और ज़रूरत पड़ने पर कड़ा संघर्ष शुरू करने पर सहमति प्रकट की गई। इसके साथ ही देश की पार्लियामेंट के सिक्ख सदस्यों, चाहे वे किसी भी पार्टी से संबंधित हों, को पार्लियामेंट के दोनों सदनों में बंदी सिंघों की रिहाई के लिए आवाज़ बुलंद करने की अपील की गई। यह भी कहा गया कि सिक्ख सांसद अपने अलावा इन्साफपसंद तथा मानवाधिकारों की बात करने वाले अन्य सांसदों को भी इस मामले में अपने साथ लें।

सभा के दौरान अगली रूप-रेखा तय करने हेतु कमेटी स्थापित करने के अधिकार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी को सौंपे गए , जिस पर अपने संबोधन के दौरान एडवोकेट धामी ने कहा कि जल्द ही कमेटी गठित कर दी जायेगी। उन्होंने कहा कि गठित की जाने वाली कमेटी में सभी दलों के सदस्य शामिल होंगे। एडवोकेट धामी ने कहा कि चाहे चिरकाल से सिक्ख पंथ की प्रतिनिधि विभिन्न जत्थेबंदियाँ और पंथदर्दी लोग बंदी सिंघों की रिहाई के लिए यत्न कर रहे हैं, परंतु अब श्री अकाल तख़्त साहिब के नेतृत्व में सामूहिक रूप से यत्न किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि सरकारों द्वारा सिक्खों के साथ हमेशा से धक्केशाही की जा रही है और अपनी सज़ा से अधिक समय जेलों में बिता चुके बंदी सिंघों को रिहा न करके धक्केशाही की इंतहा की जाती रही है। उन्होंने स्पष्ट करते हुए कहा कि जेलों में बंद सिक्ख कैदी अपनी निजी लड़ाई के लिए नहीं, बल्कि कौमी संघर्ष के कारण जेलों में बंद हैं। सरकारों को समझना चाहिए कि इन सिंघों द्वारा लिया गया फ़ैसला सिक्खों के गुरुधामों एवं कौम के आत्मसम्मान पर किये गए हमले में

से निकला था, इसलिए बिना शर्त बंदी सिंघ तुरंत रिहा किए जाएँ।

अपने संबोधन के दौरान शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स. सुखबीर सिंघ बादल ने कहा कि पंथक सभा का एकजुटता वाला संदेश समूची सिक्ख कौम के लिए बेहद खास है और भविष्य में इस लहर को निरंतर जारी रखना चाहिए। स. बादल ने कहा कि राजनीतिक मतभेद एक तरफ़ हैं, जबकि पंथक हितों के लिए ये सामूहिक यत्न बड़े परिणाम देंगे। उन्होंने कहा कि शिरोमणि अकाली दल पंथ के निर्देशों पर हर लड़ाई लड़ने के लिए हमेशा साथ रहेगा।

इस अवसर पर शिरोमणि अकाली दल (अमृतसर) के प्रधान स. सिमरनजीत सिंघ (मान) ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रयास की प्रशंसा करते हुए पंथक-कार्यों के लिए सहयोग देने का भरोसा दिया। उन्होंने कहा कि लंबे समय बाद किया गया यह पंथक जलसा अपने आप में ऐतिहासिक है, जिसके अवश्य अच्छे परिणाम निकलेंगे। दमदमी टकसाल के प्रमुख बाबा हरनाम सिंघ खालसा ने अपने संबोधन के दौरान कहा कि सिक्ख पंथ को प्रयास करते रहने के साथ-साथ निर्णायक फ़ैसले भी लेने चाहिए। पंथक सभा में दल बाबा बिधी चंद के प्रमुख बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ, दिल्ली कमेटी के प्रधान स. हरमीत सिंघ कालका, पूर्व प्रधान स. परमजीत सिंघ (सरना), स. मनजीत सिंघ जी. के., जत्थेदार बलजीत सिंघ दादूवाल, तरना (तरुणा) दल की तरफ से बाबा नौरंग सिंघ, बाबा मनमोहन सिंघ बारन वाले, केंद्रीय श्री गुरु सिंघ सभा की तरफ से स. सुरिंदर सिंघ किशनपुरा, चीफ़ खालसा दीवान की तरफ से स. सरबजीत सिंघ छीना, भाई राजोआणा की बहन बीबी कमलदीप कौर, एडवोकेट जसबीर सिंघ घुंमण, स. परमजीत सिंघ गाजी, प्रो. प्रेम सिंघ चंदूमाजरा, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कनिष्ठ उपाध्यक्ष प्रिं. सुरिंदर सिंघ, महासचिव जत्थेदार करनैल सिंघ पंजोली, फेडरेशन नेता भाई गुरचरन सिंघ, बंदी सिंघों की रिहाई के लिए यत्नशील भाई जंग सिंघ ने अपने संबोधन के दौरान कहा कि बंदी सिंघों की रिहाई के लिए किये जाने वाले कार्यों में कोई भी पीछे नहीं हटेगा।

उपरोक्त के अलावा सभा में शिरोमणि पंथ अकाली बुड्ढा दल की तरफ से बाबा जस्सा सिंघ, बाबा गज्जण सिंघ तरना दल, बाबा सुखविंदर सिंघ भूरी वाले, स. बलदेव सिंघ सिरसा, स. इंदरजीत सिंघ महासचिव तख़्त श्री पटना साहिब, संत बलबीर सिंघ सीचेवाल की तरफ से स. सुरजीत सिंघ, स. सुरजीत सिंघ गुरुद्वारा सिंघ सभा गोहलवड़, बाबा गुरदेव सिंघ प्रमुख गुरुद्वारा भगतां डेरा तरसिक्का, स. रिपूदमन सिंघ जत्थेबंदी प्रमुख गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी श्री अमृतसर, स. जसप्रीत सिंघ, स. मनजीत सिंघ सैणां, स. चरनकंवल सिंघ, जत्थेदार बाबा रघबीर सिंघ खिआले वाले, स. जुगराज सिंघ सिक्ख स्टूडेंट्स फेडरेशन, बीबी कशमीर कौर, बाबा सुरजीत सिंघ मोगा, ज्ञानी नवतेज सिंघ दमदमी टकसाल, बाबा हरबेअंत सिंघ मसतूआणा साहिब, बाबा गोरा सिंघ, बाबा सुच्चा सिंघ कार सेवा किला श्री अनंदपुर साहिब, बाबा तेजा सिंघ खुडेवालिया की

तरफ से भाई बचित्तर सिंघ, बाबा हरचरन सिंघ नानकसर कुटिया पटियाला, स. इकबाल सिंघ तुंग आवाज़-ए-कौम टी. वी. यूके, बाबा जोरा सिंघ बद्दनीकलां मोगा की तरफ से बाबा गुरमीत सिंघ तथा बाबा राम सिंघ, बाबा अनहदराज सिंघ लुधियाना, सम्प्रदाय निरमल भेख सुलतानपुर लोधी स. कुलबीर सिंघ, स. जिंदर सिंघ औजला कपूरथला, बीबी सोनियां श्री अमृतसर, स. खुशहाल सिंघ चंडीगढ़, बाबा बलदेव सिंघ संप्रदाय बाबा बिधि चंद छीना रोपड़, बीबी मनदीप कौर बरनाला, बाबा तीरथ सिंघ श्री अनंदपुर साहिब, बाबा मेजर सिंघ वां, बीबी रमनदीप कौर नौरंग स्कालर पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, भाई अमृतपाल सिंघ गुरु गोबिंद सिंघ गतका अखाड़ा, बाबा महिंदरपाल सिंघ कपूरथला, बाबा सुक्खा सिंघ कार सेवा सरहाली, बाबा मेजर सिंघ कोट खालसा श्री अमृतसर, स. भुपिंदर सिंघ सेखूपुरा पटियाला, स. लखविंदर सिंघ तरनतारन, बाबा सतनाम सिंघ किला श्री अनंदगढ़ साहिब, बीबी हरमीत कौर खालसा राजस्थान, बाबा पंजाब सिंघ मिसल तरना दल सुलतानविंड, स. जंग सिंघ बंदी सिंघ रिहाई मोर्चा लुधियाना, बीबी जसविंदर कौर सोहल, स. दलबीर सिंघ, राणा कंवरप्रताप सिंघ ज़ीरा, भाई मनजीत सिंघ दिल्ली, बाबा सेवा सिंघ खडूर साहिब वालों की तरफ से भाई गुरप्रीत सिंघ, स. गुरनाम सिंघ, बाबा जगजीत सिंघ मोगा, स. सरबजीत सिंघ हंसाली वाले, बाबा त्रिलोक सिंघ खिआला वाले, बाबा बलदेव सिंघ, भाई बलजिंदर सिंघ परवाना की धर्म-पत्नी बीबी रमनदीप कौर, स. रविंदर सिंघ पूर्व विधायक, भक्त मिलखा सिंघ फ़िरोज़पुर, बाबा हाकम सिंघ कार सेवा सरहाली, बाबा बलदेव सिंघ जोगेवाला, स. गुरप्रताप सिंघ टिक्का, भाई अमरबीर सिंघ ढोट, बाबा अमीर सिंघ प्रमुख जवद्दी टकसाल, स. पलविंदर सिंघ बटाला, भाई अमनप्रीत सिंघ तरनतारन, बाबा सुखविंदर सिंघ मलकपुर, स. हरजिंदर सिंघ, बाबा बलदेव सिंघ, बाबा लाल सिंघ तरना दल, बाबा सतनाम सिंघ खापड़खेड़ी, बाबा बलदेव सिंघ वल्हा, बाबा लक्खा सिंघ नानकसर लुधियाना, बाबा हरचंद सिंघ माड़ी कंबोके, बाबा हरजिंदर सिंघ संप्रदाय बाबा बोता सिंघ बाबा गरजा सिंघ, बाबा दरशन सिंघ टाहला साहिब वाले, भाई मधूपाल सिंघ गोगा, भाई सरवन सिंघ माहल, बाबा गुरदेव सिंघ कुल्ली वाले, बाबा गुरदिआल सिंघ टांडे वाले, भाई दविंदर सिंघ महासचिव ऑल इंडिया सिक्ख स्टूडेंट फेडरेशन, स्टडी सर्कल की तरफ से स. गुरमीत सिंघ आनरेरी सचिव श्री अकाल तख़्त साहिब, स. जगदीश सिंघ (बराड़) चेयरमैन शिरोमणि गतका फेडरेशन ऑल इंडिया, गुरुद्वारा रामपुर खेड़ा वालों की तरफ से स. सुखबीर सिंघ, बाबा निहाल सिंघ की तरफ से बाबा नौरंग सिंघ, हरखोवाल की तरफ से बाबा अमरजीत सिंघ, स. बलवंत सिंघ गोपाला, स. सरबजीत सिंघ छीना, बाबा हरजिंदर सिंघ श्री मुक्तसर साहिब, बाबा जसविंदर सिंघ होशियारपुर, बाबा अवतार सिंघ जोहल, बाबा हरीपाल सिंघ पांडवा, श्री टहिल नाथ नंगल खेड़ा फगवाड़ा, एडवोकेट जसबीर सिंघ घुंमण, बाबा जगजीत सिंघ लोपो की तरफ से स. हरनाम सिंघ, स. हरविंदर सिंघ, स. जसविंदर सिंघ, स. मनप्रीत

सिंघ, स. जसकरन सिंघ काहन सिंघ वाला, स. हरपाल सिंघ बलेर, बाबा अवतार सिंघ धत्तल, अकाली नेता, स. बलविंदर सिंघ भूंदड़, स. सुरजीत सिंघ रक्खड़ा, स. दलजीत सिंघ (चीमा), स. विरसा सिंघ वलटोहा, स. गुलजार सिंघ रणीके, स. हीरा सिंघ गाबड़िया, स. सिकंदर सिंघ मलूका, स. रविंदर सिंघ ब्रह्मपुरा, स. करनैल सिंघ पीर मुहम्मद, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल, बीबी जगीर कौर, स. अलविंदरपाल सिंघ पक्खोके, कार्यकारिणी कमेटी सदस्य स. हरजाप सिंघ सुलतानविंड, स. अमरजीत सिंघ बंडाला, स. गुरिंदरपाल सिंघ गोरा, स. बलविंदर सिंघ वेईंपूईं, स. जरनैल सिंघ डोगरांवाला, स. सरवन सिंघ कुलार, बीबी गुरप्रीत कौर, भाई अमरजीत सिंघ (चावला), भाई रजिंदर सिंघ महिता, स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड्ड, एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका, भाई मनजीत सिंघ भूराकोहना, स. नवतेज सिंघ काउणी, स. गुरबचन सिंघ करमूवाला, भाई राम सिंघ, स. बावा सिंघ गुमानपुरा, स. मंगविंदर सिंघ खापड़खेड़ी, स. बलजीत सिंघ जलालउसमां, स. अमरजीत सिंघ भलाईपुर, बाबा बूटा सिंघ, स. कौर सिंघ फाजिलका, स. दरशन सिंघ जलालाबाद, स. गुरनाम सिंघ जस्सल, स. गुरमीत सिंघ बूह, स. सरवण सिंघ कुलार, बीबी जोगिंदर कौर, स. अमरीक सिंघ शाहपुर, स. अजमेर सिंघ खेड़ा, भाई अजाइब सिंघ अभ्यासी, स. खुशविंदर सिंघ (भाटिया), बाबा टेक सिंघ धनौला बरनाला, बीबी जोगिंदर कौर धरमकोट, स. चरनजीत सिंघ कालेवाल, स. जसबीर सिंघ मत्तेवाल, बीबी बलविंदर कौर, बीबी रणजीत कौर दिल्ली, स. रतन सिंघ जफ्फरवाल, स. चरनजीत सिंघ कालेवाल, स. गुरलाल सिंघ फ़तिहगढ़, स. सुरजीत सिंघ तुगलवाल, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव स. परमजीत सिंघ सरोआ, स. प्रताप सिंघ, उप सचिव स. कुलविंदर सिंघ रमदास, स. बलविंदर सिंघ काहलवां, स. गुरमीत सिंघ बुट्टर, स. तेजिंदर सिंघ पड्डा, स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, मैनेजर स. सुलक्खण सिंघ भंगाली, पूर्व सचिव स. बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा, स. सुखदेव सिंघ भूराकोहना, स. महिंदर सिंघ आहली आदि उपस्थित थे।

बंदी सिंघों की रिहाई के लिए कमेटी गठित : श्री अमृतसर : १६ मई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने बंदी सिंघों की रिहाई के लिए कमेटी का गठन किया है, जिसमें उनके खुद के अलावा अन्य सदस्यों में स. सुखबीर सिंघ बादल, स. सिमरनजीत सिंघ (मान), बाबा हरनाम सिंघ खालसा, बाबा निहाल सिंघ, स. हरमीत सिंघ कालका, स. परमजीत सिंघ (सरना), स. मनजीत सिंघ जी. के. तथा बाबा बलजीत सिंघ दादूवाल को शामिल किया गया है। बाद में इस कमेटी में विस्तार करते हुए इसमें दो सदस्य और शामिल किए गए— तख्त सचखंड श्री हजूर अबिचल नगर साहिब, नांदेड़ की प्रबंधक कमेटी के प्रधान स. भुपिंदर सिंघ (मिनहास) तथा तख्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब के प्रबंधकीय बोर्ड के प्रधान स. अवतार सिंघ हित।

गुरुद्वारा साहिब भक्त कबीर जी, मगहर
ज़िला संत कबीर नगर (उत्तर प्रदेश)

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2020-22 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2020-22

GURMAT GYAN

June 2022
DHARAM PARCHAR COMMITTEE,
Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

जून 1984 के साके के समय क्षतिग्रस्त हुई
श्री अकाल तख़्त साहिब की इमारत का दृश्य

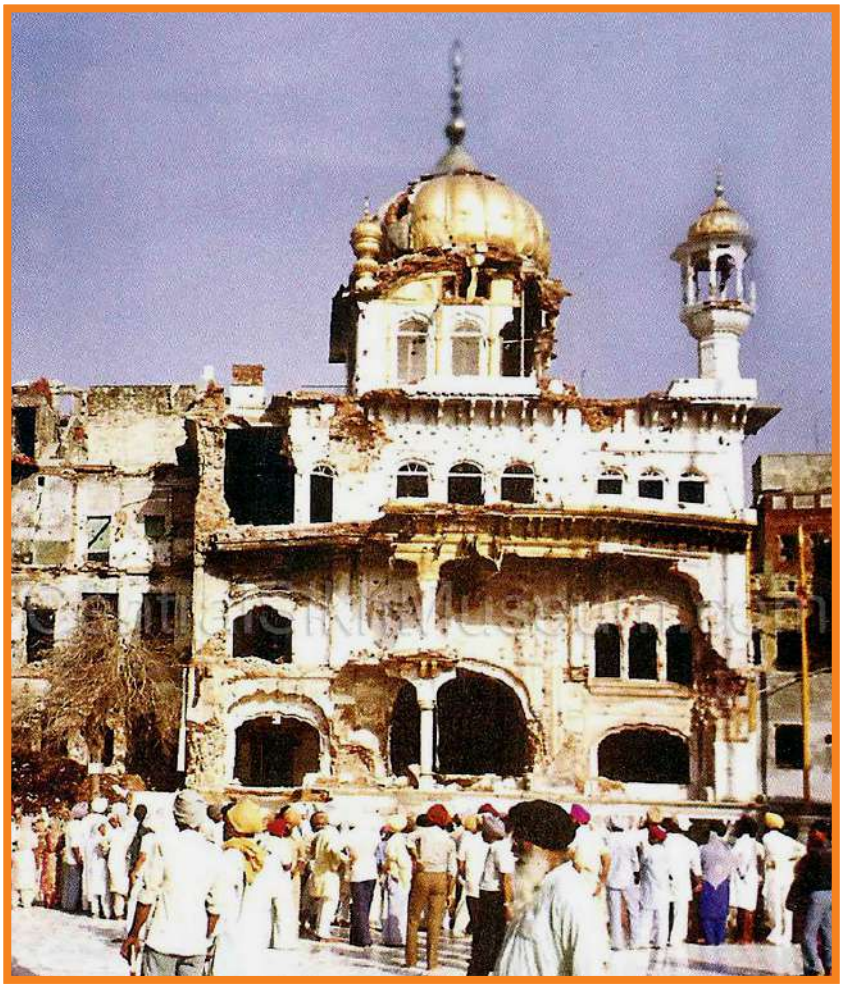

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh
Date: 7-6-2022